मत्ती

यीशु की वंशावली
(लूका 3:23-38)

1 इब्राहीम के वंशज दाऊद के पुत्र यीशु मसीह की
वंशावली इस प्रकार है:
2 इब्राहीम का पुत्र था इसहाक
और इसहाक का पुत्र हुआ याकूब।
फिर याकूब के यहूदा
और उसके भाई उत्पन्न हुए।
3 यहूदा के बेटे थे फिरिस और जोरह।
(उनकी माँ का नाम तामार था।)
फिरिस, हिस्रोन का पिता था।
हिस्रोन राम का पिता था।
4 राम अम्मीनादाब का पिता था।
आम्मीनादाब से नहशोन
और नहशोन से सलमोन का जन्म हुआ।
5 सलमोन से बोअज का जन्म हुआ।
(बोअज की माँ का नाम राहब था।)
बोअज और रूथ से ओबेद पैदा हुआ,
ओबेद यिशै का पिता था।
6 और यिशै से राजा दाऊद पैदा हुआ।
(सुलैमान दाऊद का पुत्र था)
जो उस स्त्री से जन्मा जो पहले
उरिय्याह की पत्नी थी।
7 सुलैमान रहबाम का पिता था
और रहबाम अबिय्याह का पिता था।
अबिय्याह से आसा का जन्म हुआ।
8 और आसा यहोशाफात का पिता बना।
फिर यहोशाफात से योराम
और योराम से उज्जिय्याह का जन्म हुआ।
9 उज्जिय्याह योताम का पिता था
और योताम, आहाज का।
फिर आहाज से हिजकिय्याह।
10 और हिजकिय्याह से मनश्शिह का जन्म हुआ।
मनश्शिह आमोन का पिता बना
और आमोन योशिय्याह का।
11 फिर इस्राएल के लोगों को बंदी बना कर बेबिलोन
ले जाते समय योशिय्याह से
यकुन्याह और उसके भाईयों ने जन्म लिया।
12 बेबिलोन में ले जाये जाने के बाद यकुन्याह
शालतिएल का पिता बना।
और फिर शालतिएल से जरुब्बाबिल।
13 तथा जरुब्बाबिल से अबीहूद पैदा हुए।
अबीहूद इल्याकीम का
और इल्याकीम अजोर का पिता बना।
14 अजोर सदोक का पिता था।
सदोक से अखीम
और अखीम से इलीहूद पैदा हुए।
15 इलीहूद इलियाजार का पिता था
और इलियाजार मत्तान का।
मत्तान याकूब का पिता बना।
16 और याकूब से यूसुफ पैदा हुआ।
जो मरियम का पति था।
मरियम से यीशु का जन्म हुआ
जो मसीह कहलाया।
17 इस प्रकार इब्राहीम से दाऊद तक चौदह पीढ़ियाँ
हुई। और दाऊद से लेकर बंदी बना कर बाबुल पहुँचाये
जाने तक की चौदह पीढ़ियाँ, तथा बंदी बना कर बाबुल
पहुँचाये जाने से मसीह के जन्म तक चौदह पीढ़ियाँ और
हुई।

यीशु मसीह का जन्म
(लूका 2:1-7)

18 यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ: जब उसकी
माता मरियम की यूसुफ के साथ सगाई हुई तो विवाह
होने से पहले ही पता चला कि वह पवित्र आत्मा की
शक्ति से गर्भवती है। 19 किन्तु उसका भावी पति यूसुफ
एक अच्छा व्यक्ति था। और इसे प्रकट करके लोगों में
उसे बदनाम करना नही चाहता था। इसलिये उसने
निश्चय किया कि चुपके से वह सगाई तोड़ दे। 20 किन्तु
जब वह इस बारे में सोच ही रहा था, सपने में उसके
सामने प्रभु के दूत ने प्रकट होकर उससे कहा, "ओ!
दाऊद के पुत्र यूसुफ, मरियम को पत्नी बनाने से मत
डर क्योंकि जो बच्चा उसके गर्भ में है, वह पवित्र
आत्मा की ओर से है। 21 वह एक पुत्र को जन्म देगी। तू
उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को
उनके पापों से उद्धार करेगा।"

22यह सब कुछ इसलिये हुआ है कि प्रभु ने भविष्यवक्ता
द्वारा जो कुछ कहा था, पूरा हो: 23"सुनो, एक कुँवारी
कन्या गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म देगी। उसका
नाम इम्मानुएल रखा जायेगा।" (जिसका अर्थ है 'परमेश्वर
हमारे साथ है।')

24जब यूसुफ नींद से जागा तो उसने वही किया जिसे
करने की प्रभु के दूत ने उसे आज्ञा दी थी। वह मरियम
को ब्याह कर अपने घर ले आया। 25किन्तु जब तक
उसने पुत्र को जन्म नही दे दिया, वह उसके साथ नही
सोया। यूसुफ ने बेटे का नाम यीशु रखा।

पूर्व से विद्वानों का आना

2 हेरोदेस जब राज्य कर रहा था, उन्हीं दिनों यहूदिया
के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ। कुछ ही समय
बाद कुछ विद्वान जो सितारों का अध्ययन करते थे, पूर्व
से यरूशलेम आये। 2उन्होंने पूछा, "यहूदियों का नवजात
राजा कहाँ है? हमने उसके सितारे को, आकाश में
देखा है। इसलिए हम पूछ रहे हैं। हम उसकी आराधना
करने आये हैं।" 3जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह
बहुत बेचैन हुआ और उसके साथ यरूशलेम के दूसरे
सभी लोग भी चिंता करने लगे। 4सो उसने यहूदी समाज
के सभी प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों को इकट्ठा
करके उनसे पूछा कि मसीह का जन्म कहाँ होना है।
5उन्होंने उसे बताया, "यहूदिया के बैतलहम में। क्योंकि
भविष्यवक्ता द्वारा लिखा गया है कि:

6'ओ, यहूदा की धरती पर स्थित बैतलहम, तू यहूदा
के अधिकारियों में किसी प्रकार भी सबसे छोटा नहीं
क्योंकि तुझ में से एक शासक प्रकट होगा जो मेरे लोगों
इस्राएल की, करेगा देखभाल।" *मीका 5:2*

7तब हेरोदेस ने सितारों का अध्ययन करने वाले उन
विद्वानों को बुलाया और पूछा कि वह सितारा किस
समय प्रकट हुआ था। 8फिर उसने उन्हें बैतलहम भेजा
और कहा "जाओ उस शिशु के बारे में अच्छी तरह से
पता लगाओ और जब वह तुम्हें मिल जाये तो मुझे
बताओ ताकि मैं भी आकर उसकी उपासना कर सकूँ।"

9फिर वे राजा की बात सुनकर चल दिये। वह सितारा
भी जिसे आकाश में उन्होंने देखा था उनके आगे आगे
जा रहा था। फिर जब वह स्थान आया जहाँ वह बालक
था, तो सितारा उसके ऊपर रुक गया। 10जब उन्होंने
यह देखा तो वे बहुत आनन्दित हुए। 11वे घर के भीतर
गये और उन्होंने उसकी माता मरियम के साथ बालक
के दर्शन किये। उन्होंने साष्टांग प्रणाम करके उसकी
उपासना की। फिर उन्होंने बहुमूल्य वस्तुओं की अपनी
पिटारी खोली और सोना, लोबान और गन्धरस के
उपहार उसे अर्पित किये। 12किन्तु परमेश्वर ने एक
स्वप्न में उन्हें सावधान कर दिया, कि वे वापस हेरोदेस
के पास न जायें। सो वे एक दूसरे मार्ग से अपने देश को
लौट गये।

यीशु को लेकर माता-पिता का मिस्र जाना

13जब वे चले गये तो यूसुफ को सपने में प्रभु के एक
दूत ने प्रकट हो कर कहा, "उठ, बालक और उसकी
माँ को लेकर चुपके से मिस्र चला जा और मैं जब तक
तुझ से न कहूँ, वहीं ठहरना। क्योंकि हेरोदेस इस बालक
को मरवा डालने के लिए ढूँढ़ेगा।"

14सो यूसुफ खड़ा हुआ तथा बालक और उसकी
माता को लेकर रात में ही मिस्र के लिए चल पड़ा।
15फिर हेरोदेस के मरने तक वह वहीं ठहरा रहा। यह
इसलिये हुआ कि प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा जो कहा
था, पूरा हो सके: "मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बाहर
आने को कहा"। *

बैतलहम के सभी बालकों का हेरोदेस के द्वारा मरवाया जाना

16हेरोदेस ने जब यह देखा कि सितारों का अध्ययन
करने वाले विद्वानों ने उसके साथ चाल चली है, तो वह
आग बबूला हो उठा। उसने आज्ञा दी कि बैतलहम और
उसके आसपास में दो वर्ष के या उससे छोटे सभी
बालकों की हत्या कर दी जाये। (सितारों का अध्ययन
करने वाले विद्वानों के बताये समय को आधार बना
कर) 17तब भविष्यवक्ता यिर्मयाह द्वारा कहा गया यह
वचन पूरा हुआ:

18"रामाह में दुःख भरा एक शब्द सुना गया, शब्द
रोने का, गहरे विलाप का था। राहेल अपने शिशुओं के
लिए रोती थी चाहती नहीं थी कोई उसे धीरज बँधाए,
क्योंकि उसके तो सभी बालक मर चुके थे।"

यिर्मयाह 31:15

यीशु को लेकर यूसुफ और मरियम का मिस्र लौटना

19फिर हेरोदेस की मृत्यु के बाद मिस्र में यूसुफ के
सपने में प्रभु का एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ 20और उससे
बोला, "उठ, बालक और उसकी माँ को लेकर इस्राएल
की धरती पर चला जा क्योंकि वे जो बालक को मार
डालना चाहते थे, मर चुके हैं।"

21तब यूसुफ खड़ा हुआ और बालक तथा उसकी
माता को लेकर इस्राएल जा पहुँचा। 22किन्तु जब यूसुफ
ने यह सुना कि यहूदिया पर अपने पिता हेरोदेस के
स्थान पर अरखिलाउस राज्य कर रहा है तो वह वहाँ
जाने से डर गया किन्तु सपने में परमेश्वर से आदेश
पाकर वह गलील प्रदेश के लिए 23चल पड़ा और वहाँ
नासरत नाम के नगर में घर बना कर रहने लगा ताकि

"मैंने ... कहा" देखें होशे 11:1

भविष्यवक्ताओं द्वारा कहा गया वचन पूरा हो कि: 'वह नासरी* कहलायेगा।'

बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का कार्य

(मरकुस 1:1-8; लूका 3:1-9, 15-17; यूहन्ना 1:19-28)

3 उन्ही दिनों यहूदिया के बियाबान मरुस्थल में उपदेश देता हुआ बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना वहाँ आया। 2वह प्रचार करने लगा, "मन फिराओ! क्योंकि स्वर्ग का राज्य आने को है।" 3यह यूहन्ना वही है जिसके बारे में भविष्यवक्ता यशायाह ने चर्चा करते हुए कहा था:

"जंगल में एक पुकारने वाले की आवाज है: 'प्रभु के लिए मार्ग तैयार करो और उसके लिए राहें सीधी करो।"

यशायाह 40:3

4यूहन्ना के वस्त्र ऊँट की ऊन के बने थे और वह कमर पर चमड़े की पेटी बाँधे था। टिड्डियाँ और जँगली शहद उसका भोजन था। 5उस समय यरुशलेम, समूचे यहूदिया क्षेत्र और यर्दन नदी के आसपास के लोग उसके पासआ इकट्ठे हुए। 6उन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया और यर्दन नदी में उन्हें उसके द्वारा बपतिस्मा दिया गया।

7जब उसने देखा कि बहुत से फरीसी* और सदूकी* उसके पास बपतिस्मा लेने आ रहे हैं तो वह उनसे बोला, "ओ, साँप के बच्चो। तुम्हें किसने चेता दिया है कि तुम प्रभु के भावी क्रोध से बच निकलो? 8तुम्हें प्रमाण देना होगा कि तुममें वास्तव में मन फिराव हुआ है। 9और मत सोचो कि अपने आप से यह कहना ही काफी होगा कि 'हम इब्राहीम की संतान हैं।' मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर इब्राहीम के लिये इन पत्थरों से भी बच्चे पैदा करा सकता है। 10पेड़ों की जड़ों पर कुल्हाड़ा रखा जा चुका है। और हर वह पेड़ जो उत्तम फल नही देता काट गिराया जायेगा और फिर उसे आग में झोंक दिया जायेगा।

11"मैं तो तुम्हें तुम्हारे मन फिराव के लिये जल से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह जो मेरे बाद आने वाला है, मुझसे महान है। मैं तो उसके जूतों के तस्मे खोलने योग्य भी नही हूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और अग्नि से बपतिस्मा देगा। 12उसके हाथों में उसका छाज है जिससे वह अनाज को भूसे से अलग करता है। अपने खलिहान से वह साफ किये समस्त अनाज को उठा, इकट्ठा कर, कोठियों में भरेगा और भूसे को ऐसी आग में झोंक देगा जो कभी बुझाए नही बुझेगी।"

यीशु का यूहन्ना से बपतिस्मा लेना

(मरकुस 1:9-11; लूका 3:21-22)

13उस समय यीशु गलील से चल कर यर्दन के किनारे यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। 14किन्तु यूहन्ना ने यीशु को रोकने का यत्न करते हुए कहा, "मुझे तो स्वयं तुझ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है। फिर तू मेरे पास क्यों आया है?"

15उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "अभी तो इसे इसी प्रकार होने दो। हमें, जो परमेश्वर चाहता है उसे पूरा करने के लिए यही करना उचित है।" फिर उसने वैसा ही होने दिया।

16और तब यीशु ने बपतिस्मा ले लिया। जैसे ही वह जल से बाहर निकला, आकाश खुल गया। उसने परमेश्वर के आत्मा को एक कबूतर की तरह नीचे उतरते और अपने ऊपर आते देखा। 17तभी यह आकाशवाणी हुई:

"यह मेरा प्रिय पुत्र है। जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ।"

यीशु की परीक्षा

(मरकुस 1:12-13; लूका 4:1-13)

4 फिर आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि शैतान के द्वारा उसे परखा जा सके। 2चालीस दिन और चालीस रात भूखा रहने के बाद जब उसे भूख बहुत सताने लगी 3तो उसे परखने वाला उसके पास आया और बोला "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इन पत्थरों से कह कि ये रोटियाँ बन जायें।"

4यीशु ने उत्तर दिया, "शास्त्र में लिखा है: 'मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं जीता बल्कि वह प्रत्येक उस शब्द से जीता है जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।'"

व्यवस्थाविवरण 8:3

5फिर शैतान उसे यरुशलेम के पवित्र नगर में ले गया। वहाँ मंदिर की सबसे ऊँची बुर्ज पर खड़ा करके 6उसने उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो नीचे कूद पड़ क्योंकि शास्त्र में लिखा है:

'वह तेरी देखभाल के लिये अपने दूतों को आज्ञा देगा और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे ताकि तेरे पैरों में कोई पत्थर तक न लगे।'" *भजन संहिता 91:11–12*

7यीशु ने उत्तर दिया, "किन्तु शास्त्र यह भी कहता है, 'अपने प्रभु परमेश्वर को परीक्षा में मत डाल।'"

व्यवस्थाविवरण 6:16

नासरी एक व्यक्ति जो नासरत का रहने वाला हो। नासरत का अर्थ संभवत: "शाखा"। देखें यशा.11:1

फरीसी एक यहूदी धार्मिक समूह, जो 'पुराना धर्म नियम' और दूसरे यहूदी नियमों तथा रीति–रिवाजों का कट्टरता से पालन करने का दावा करता है।

सदूकी एक प्रमुख यहूदी धार्मिक समूह जो 'पुराना धर्म नियम' की केवल पहली पाँच पुस्तकों को ही स्वीकार करता है और किसी के मर जाने के बाद उसका पुनरुत्थान नहीं मानता।

8फिर शैतान यीशु को एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले
गया। और उसे संसार के सभी राज्य और उनका वैभव
दिखाया। 9शैतान ने तब उससे कहा, "ये सभी वस्तुएँ मैं
तुझे दे दूँगा यदि तू मेरे आगे झुके और मेरी उपासनाकरे।"
10फिर यीशु ने उससे कहा, "शैतान, दूर हो। शास्त्र
कहता है:
'अपने प्रभु परमेश्वर की उपासना कर और केवल
उसी की सेवा कर।'" *व्यवस्थाविवरण 6:13*

11फिर शैतान उसे छोड़ कर चला गया। और स्वर्गदूत
आकर उसकी देखभाल करने लगे।

यीशु के कार्य का आरम्भ

(मरकुस 1:14-15; लूका 4:14-15)

12यीशु ने जब सुना कि यूहन्ना पकड़ा जा चुका है तो
वह गलील लौट आया। 13परन्तु वह नासरत में नहीं
ठहरा और जाकर कफरनहूम में, जो जबूलून और
नपताली के क्षेत्र में गलील की झील के पास था, रहने
लगा। 14यह इसलिये हुआ कि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता
यशायाह के द्वारा जो कहा, वह पूरा हो:
15"जबूलून और नपताली के देश सागर के रास्ते पर,
यर्दन नदी के पश्चिम में, ग़ैर यहूदियों के देश गलील में
16 जो लोग अँधेरे में जी रहे थे उन्होंने एक महान
ज्योति देखी और जो मृत्यु की छाया के देश में रहते थे
उन पर, ज्योति के प्रभात का एक प्रकाश फैला।"
यशायाह 9:1–2

यीशु द्वारा शिष्यों का चुना जाना

(मरकुस 1:16-20; लूका 5:1-11)

17उस समय से यीशु ने सुसंदेश का प्रचार शुरू कर
दिया: "मन फिराओ! क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट
है।"
18जब यीशु गलील की झील के पास से जा रहा था
उसने दो भाइयों को देखा शमौन (जो पतरस कहलाया)
और उसका भाई अंद्रियास। वे झील में अपने जाल डाल
रहे थे। वे मछुआरे थे। 19यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पीछे
चले आओ, मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि लोगों के लिये
मछलियाँ पकड़ने के बजाय मनुष्य रूपी मछलियाँ कैसे
पकड़ी जाती हैं।"
20उन्होंने तुरंत अपने जाल छोड़ दिये और उसके
पीछे हो लिये।
21फिर वह वहाँ से आगे चल पड़ा और उसने देखा
कि जब्दी का बेटा याकूब और उसका भाई यूहन्ना
अपने पिता के साथ नाव में बैठे अपने जालों की
मरम्मत कर रहे हैं। यीशु ने उन्हें बुलाया। 22और वे
तत्काल नाव और अपने पिता को छोड़ कर उसके
पीछे चल दिये।

यीशु का लोगों को उपदेश और उन्हें चंगा करना

(लूका 6:17-19)

23यीशु समूचे गलील क्षेत्र में यहूदी प्रार्थनालय में स्वर्ग
के राज्य के सुसमाचार का उपदेश देता और हर प्रकार
के रोगों और संतापों को दूर करता घूमने लगा। 24समस्त
सीरिया देश में उसका समाचार फैल गया। इसलिये लोग
ऐसे सभी व्यक्तियों को जो संतापी थे, या तरह तरह की
बीमारियों और वेदनाओं से पीड़ित थे, जिन पर दुष्टात्माएँ
सवार थीं, जिन्हें मिर्गी आती थी और जो लकवे के मारे
थे, उसके पास लाने लगे। यीशु ने उन्हें चंगा किया।
25इसलिये गलील, दस नगर, यरुशलेम, यहूदिया और
यर्दन नदी–पार के लोगों की बड़ी–बड़ी भीड़ उसका
अनुसरण करने लगीं।

यीशु का उपदेश

(लूका 6:20-23)

5 यीशु ने जब यह बड़ी भीड़ देखी, तो वह एक पहाड़
पर चला गया। वहाँ वह बैठ गया और उसके
अनुयायी उसके पास आ गये। 2तब यीशु ने उन्हें उपदेश
देते हुए कहा:
3"धन्य हैं वे जो हृदय से दीन हैं, स्वर्ग का राज्य
उनके लिए है।
4धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि परमेश्वर
उन्हें सांतवना देता है
5धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि यह पृथ्वी उन्हीं की है।
6धन्य हैं वे जो नीति के प्रति भूखे और प्यासे रहते हैं!
क्योंकि परमेश्वर उन्हें संतोष देगा, तृप्ति देगा।
7धन्य हैं वे जो दयालू हैं क्योंकि उन पर दया गगन से
रसेगी।
8धन्य हैं वे जो हृदय के शुद्ध हैं क्योंकि वे परमेश्वर
के दर्शन करेंगे।
9धन्य हैं वे जो शान्ति के काम करते हैं। क्योंकि वे
परमेश्वर के पुत्र कहलायेंगे।
10धन्य हैं वे जो नीति के हित यातनाएँ भोगते हैं ।
स्वर्ग का राज्य उनके लिये ही है।
11"और तुम भी धन्य हो क्योंकि जब लोग तुम्हारा
अपमान करें, तुम्हें यातनाएँ दें, और मेरे लिये तुम्हारे
विरोध में तरह तरह की झूठी बातें कहें, बस इसलिये
कि तुम मेरे अनुयायी हो, 12तब तुम प्रसन्न रहना,
आनन्द से रहना, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हें इसका प्रतिफल
मिलेगा। यह वैसा ही है जैसे तुमसे पहले के भविष्यवक्ताओं
को लोगों ने सताया था।

तुम नमक के समान हो: तुम प्रकाश के समान हो

(मरकुस 9:50; लूका 14:34-35)

13"तुम समूची मानवता के लिये नमक हो। किन्तु
यदि नमक ही बेस्वाद हो जाये तो उसे फिर नमकीन

नहीं बनाया जा सकता है। वह फिर किसी काम का
नही रहेगा। केवल इसके, कि उसे बाहर, लोगों की
ठोकरों में फेंकदिया जाये।
14"तुम जगत के लिये प्रकाश हो। एक ऐसा नगर जो
पहाड़ की चोटी पर बसा है, छिपाये नहीं छिपाया जा
सकता। 15लोग दीया जलाकर किसी बाल्टी के नीचे
उसे नहीं रखते बल्कि उसे दीवट पर रखा जाता है और
वह घर के सब लोगों को प्रकाश देता है। 16लोगों के
सामने तुम्हारा प्रकाश ऐसे चमके कि वे तुम्हारे अच्छे
कामों को देखें और स्वर्ग में स्थित तुम्हारे परम पिता
की महिमा का बखान करें।

यीशु और यहूदी धर्म –नियम

17"यह मत सोचो कि मैं मूसा के धर्म–नियम या
भविष्यवक्ताओं के लिखे को नष्ट करने आया हूँ। मैं
उन्हें नष्ट करने नहीं बल्कि उन्हें पूर्ण करने आया हूँ।
18मैं तुम से सत्य कहता हूँ कि जब तक धरती और
आकाश समाप्त नहीं हो जाते, मूसा की व्यवस्था का
एक एक शब्द और एक एक अक्षर बना रहेगा, वह
तब तक बना रहेगा जब तक वह पूरा नहीं हो लेता।
19इसलिये जो इन आदेशों में से किसी छोटे से छोटे बिना
को भी तोड़ता है और लोगों को भी वैसा ही करना
सिखाता है, वह स्वर्ग के राज्य में कोई महत्त्व नहीं
पायेगा। किन्तु जो उन पर चलता है और दूसरों को उन
पर चलने का उपदेश देता है, वह स्वर्ग के राज्य में
महान समझा जायेगा। 20मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब
तक तुम व्यवस्था के उपदेशकों और फ़रीसियों से धर्म
के आचरणमें आगे न निकल जाओ, तुम स्वर्ग के
राज्य में प्रवेश नहीं पाओगे।

क्रोध

21"तुम जानते हो कि हमारे पूर्वजों से कहा गया था,
'हत्या मत करो* और यदि कोई हत्या करता है तो
उसे अदालत में उसका जवाब देना होगा।' 22किन्तु मैं
तुमसे कहता हूँ कि जो व्यक्ति अपने भाई पर क्रोध
करता है, उसे भी अदालत में इसके लिये उत्तर देना
होगा। और जो कोई अपने भाई का अपमान करेगा
उसे सर्वोच्च संघ के सामने जवाब देना होगा और यदि
कोई अपने किसी बन्धु से कहे 'अरे असभ्य, मूर्ख।' तो
नरक की आग के बीच उस पर इसकी जवाब देही
होगी। 23इसलिये यदि तू वेदी पर अपनी भेंट चढ़ा रहा
है और वहाँ तुझे याद आये कि तेरे भाई के मन में तेरे
लिए कोई विरोध है 24तो तू उपासना की भेंट को वहीं
छोड़ दे और पहले जा कर अपने उस बन्धु से सुलह
कर। और फिर आकर भेंट चढ़ा।

25"तेरा शत्रु तुझे न्यायालय में ले जाता हुआ जब रास्ते
में ही हो, तू झटपट उसे अपना मित्र बना ले कहीं
वहतुझे न्यायी को न सौंप दे और फिर न्यायी सिपाही
को। जो तुझे जेल में डाल देगा। 26मैं तुझे सत्य बताता हूँ,
तू जेल से तब तक नहीं छूट पायेगा जब तक तू पाई–पाई
न चुका दे।

व्यभिचार

27"तुम जानते हो कि यह कहा गया है, 'व्यभिचार
मत करो।'* 28किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि कोई
किसी स्त्री को वासना की आँख से देखता है, तो वह
अपने मन में पहले ही उसके साथ व्यभिचार कर चुका
है। 29इसलिये यदि तेरी दाहिनी आँख तुझ से पाप करवाये
तो उसे निकाल कर फेंक दे। क्योंकि तेरे लिये यह
अच्छा है कि तेरे शरीर का कोई एक अंग नष्ट हो
जाये बजाय इसके कि तेरा सारा शरीर ही नरक में
डाल दिया जाये। 30और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझ से
पाप करवाये तो उसे काट कर फेंक दे। क्योंकि तेरे
लिये यह अच्छा है कि तेरे शरीर का एक अंग नष्ट हो
जाये बजाय इसके कि तेरा सम्पूर्ण शरीर ही नरक में
चला जाये।

तलाक

(मत्ती 19:9; मरकुस 10:11-12; लूका 16:18)

31"कहा गया है,'जब कोई अपनी पत्नी को तलाक
देता है तो अपनी पत्नी को उसे लिखित रूप में तलाक
देना चाहिये।'* 32किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि हर वह
व्यक्ति जो अपनी पत्नी को तलाक देता है, यदि उसने
यह तलाक उसके व्यभिचारी आचरण के कारण नहीं
दिया है तो जब वह दूसरा विवाह करती है, तो मानो वह
व्यक्ति ही उससे व्यभिचार करवाता है। और जो कोई
उस छोड़ी हुई स्त्री से विवाह रचाता है तो वह भी
व्यभिचार करताहै।

शपथ

33"तुमने यह भी सुना है कि हमारे पूर्वजों से कहा
गया था, 'तू शपथ मत तोड़ बल्कि प्रभु से की गयी
प्रतिज्ञाओं को पूरा कर।'* 34किन्तु मैं तुझसे कहता हूँ
कि शपथ ले ही मत। स्वर्ग की शपथ मत ले क्योंकि
वह परमेश्वर का सिंहासन है। 35धरती की शपथ मत
ले क्योंकि यह उसकी पाँव की चौकी है। यरुशलेम की
शपथ मत ले क्योंकि यह महा सम्राट का नगर है।

"हत्या मत करो" देखे निर्गमन 20:13; व्यवस्था. 5:17

"व्यभिचार मत करो" देखें निर्गमन 20:14 और व्यवस्था. 5:18

"जब कोई ... देना चाहिए" देखें व्यवस्था. 24:1

"तू शपथ ... पूरा कर" देखें लैव्य. 19:12; गिनती 30:2; व्यवस्था. 23:21

36अपने सिर की शपथ भी मत ले क्योंकि तू किसी
एक बाल तक को सफेद या काला नहीं कर सकता है।
37यदि तू 'हाँ' चाहता है तो केवल 'हाँ' कह और 'ना'
चाहता है तो केवल 'ना'। क्योंकि इससे अधिक जो कुछ
है वह उससे है जो बद है।

बदले की भावना मत रख
(लूका 6:29-30)

38"तुमने सुना है: कहा गया है, 'आँख के बदले आँख
और दाँत के बदले दाँत'।* 39किन्तु मैं तुझ से कहता हूँ
कि किसी बुरे व्यक्ति का भी विरोध मत कर। बल्कि
यदि कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल
भी उसकी तरफ़ कर दे। 40यदि कोई तुझ पर मुकदमा
चला कर तेरा कुर्ता भी उतरवाना चाहे तो तू उसे
अपना चोगा तक दे दे। 41यदि कोई तुझे एक मील
चलाए तो तू उसके साथ दो मील चला जा। 42यदि कोई
तुझसे कुछ माँगे तो उसे वह दे दे। जो तुझसे उधार लेना
चाहे, उसे मना मत कर।

सबसे प्रेम रखो
(लूका 6:27-28, 32-36)

43"तुमने सुना है: कहा गया है 'तू अपने पड़ौसी से प्रेम
कर* और शत्रु से घृणा कर।' 44किन्तु मैं कहता हूँ
अपने शत्रुओं से भी प्यार करो। जो तुम्हें यातनाएँ देते
हैं, उनके लिये भी प्रार्थना करो। 45ताकि तुम स्वर्ग में
रहने वाले अपने पिता की सिद्ध संतान बन सको।
क्योंकि वह बुरों और भलों सब पर सूर्य का प्रकाश
चमकाता है। पापियों और धर्मीयों, सब पर वर्षा कराता
है। 46यह मैं इसलिये कहता हूँ कि यदि तू उन्हीं से प्रेम
करेगा जो तुझसे प्रेम करते हैं तो तुझे क्या फल मिलेगा।
क्या ऐसा तो कर वसूल करने वाले भी नही करते?
47यदि तू अपने भाई बंदों का ही स्वागत करेगा तो तू
औरों से अधिक क्या कर रहा है? क्या ऐसा तो विधर्मी
भी नहीं करते? 48इसलिये परिपूर्ण बनो, वैसे ही जैसे
तुम्हारा स्वर्ग-पिता-परिपूर्ण है।

दान की शिक्षा

6 "सावधान रहो! परमेश्वर चाहता है, उन कामों
का लोगों के सामने दिखावा मत करो नहीं तो तुम
अपने परम-पिता से, जो स्वर्ग में है, उसका प्रतिफल
नहीं पाओगे। 2"इसलिये जब तुम किसी दीन-दुखी को
दान देते हो तो उसका ढोल मत पीटो, जैसा कि
धर्म-सभाओं और गलियों में कपटी लोग औरों से प्रशंसा
पाने के लिए करते हैं। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उन्हें
तो इसका पूरा फल पहले ही दिया जा चुका है। 3किन्तु
जब तू किसी दीन दुखी को देता है तो तेरा बायाँ हाथ न
जान पाये कि तेरा दाहिना हाथ क्या कर रहा है। 4ताकि
तेरा दान छिपा रहे। तेरा वह परम पिता जो तू छिपाकर
करता है उसे भी देखता है, वह तुझे उसका प्रतिफल
देगा।

प्रार्थना का महत्त्व
(लूका 11:2-4)

5"जब तुम प्रार्थना करो तो कपटियों की तरह मत
करो। क्योंकि वे यहूदी प्रार्थना-सभाओं और गली के
नुक्कड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना चाहते हैं ताकि
लोग उन्हें देख सकें। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उन्हें
तो उसका फल पहले ही मिल चुका है। 6किन्तु जब तू
प्रार्थना करे, अपनी कोठरी में चला जा और द्वार बन्द
करके गुप्त रूप से अपने परम-पिता से प्रार्थना कर।
फिर तेरा परम-पिता जो तेरे छिपकर किए गए कर्मों
को देखता है, तुझे उन का प्रतिफल देगा।
7"जब तुम प्रार्थना करते हो तो विधर्मियों की तरह यूँ
ही निरर्थक बातों को बार-बार मत दुहराते रहो। वे तो
यह सोचते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुन ली
जायेगी। 8इसलिये उनके जैसे मत बनो क्योंकि तुम्हारा
परम पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि
तुम्हारी आवश्यकता क्या है। 9इसलिए इस प्रकार प्रार्थना
करो: 'स्वर्ग धाम में हमारे पिता, तेरा नाम पवित्र रहे।
10जग में तेरा राज्य आवे । जो चाहे तू पूरा हो सब
वैसे ही धरती पर, जैसे वह सदा स्वर्ग में पूरा होता रहता
है।
11दिन प्रतिदिन का आहार तू आज हमें दे,।
12अपराधों को क्षमा दान कर जैसे हमने अपने अपराधी
क्षमा किये।
13भारी कठिन परीक्षा मत ले हमें उससे बचा जो
बुरा है।*
14इसलिये यदि तुम लोगों के अपराध क्षमा करोगे तो
तुम्हारा स्वर्ग-पिता भी तुम्हे क्षमा करेगा। 15किन्तु यदि
तुम लोगों को क्षमा नही करोगे तो तुम्हारा परम पिता
भी तुम्हारे पापों के लिए क्षमा नही देगा।

उपवास की व्याख्या

16"जब तुम उपवास करो तो मुँह लटकाये कपटियों
जैसे मत दिखो। क्योंकि वे तरह तरह से मुँह बनाते हैं
ताकि वे लोगों को जतायें कि वे उपवास कर रहे हैं। मैं
तुमसे सत्य कहता हूँ उन्हें तो पहले ही उनका प्रतिफल
मिल चुका है। 17किन्तु जब तू उपवास रखे तो अपने
सिर पर सुगंध मल और अपना मुँह धो 18ताकि लोग

"आँख के ... दाँत" देखें निर्गमन 21:24; लैव्य. 24:20

"तू अपने पड़ौसी से प्रेम कर" लैव्य. 19:18

पद 13 कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है। क्योंकि राज्य और महिमा सदा तेरी है। आमीन।

यह न जानें कि तू उपवास कर रहा है। बल्कि तेरा परम पिता जिसे तू देख नहीं सकता, देखे कि तू उपवास कर रहा है। तब तेरा परम पिता जो तेरे छिपकर किए गए सब कर्मों को देखता है, तुझे उनका प्रतिफल देगा।

परमेश्वर धन से बड़ा है

(लूका 12:33-34; 11:34-36; 16:13)

19"अपने लिये धरती पर भंडार मत भरो। क्योंकि उसे कीड़े और जंग नष्ट कर देंगे। चोर सेंध लगाकर उसे चुरा सकते हैं। 20बल्कि अपने लिये स्वर्ग में भण्डार भरो जहाँ उसे कीड़े या जंग नष्ट नहीं कर पाते। और चोर भी वहाँ सेंध लगा कर उसे चुरा नहीं पाते। 21याद रखो जहाँ तुम्हारा भंडार होगा वहीं तुम्हारा मन भी रहेगा।

22"शरीर के लिये प्रकाश का स्रोत आँख हैं। इसलिये यदि तेरी आँख ठीक है तो तेरा सारा शरीर प्रकाशवान रहेगा। 23किन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो जाए तो तेरा सारा शरीर अंधेरे से भर जायेगा। इसलिये वह एकमात्र प्रकाश जो तेरे भीतर है यदि अंधकारमय हो जाये तो वह अंधेरा कितना गहरा होगा।

24"कोई भी एक साथ दो स्वामियों का सेवक नहीं हो सकता क्योंकि वह एक से घृणा करेगा और दूसरे से प्रेम। या एक के प्रति समर्पित रहेगा और दूसरे का तिरस्कार करेगा। तुम धन और परमेश्वर दोनों की एक साथ सेवा नहीं कर सकते।

चिंता छोड़ो

(लूका 12:22-34)

25"मैं तुमसे कहता हूँ अपने जीने के लिये खाने–पीने की चिंता छोड़ दो। अपने शरीर के लिये वस्त्रों की चिंता छोड़ दो। निश्चय ही जीवन भोजन से और शरीर कपड़ों से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। 26देखो! आकाश के पक्षी न तो बुआई करते हैं और न कटाई, न ही वे कोठारों में अनाज भरते हैं किन्तु तुम्हारा स्वर्गिय पिता उनका भी पेट भरता है। क्या तुम उनसे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं हो? 27तुम में से क्या कोई ऐसा है जो चिंता करके अपने जीवन काल में एक घड़ी भी और बढ़ा सकता है?

28"और तुम अपने वस्त्रों की क्यों सोचते हो? सोचो जंगल के फूलों की वे कैसे खिलते हैं। वे न कोई काम करते हैं और न अपने लिए कपड़े बनाते हैं। 29मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलेमान भी अपने सारे वैभव के साथ उनमें से किसी एक के समान भी नहीं सज सका। 30इसलिये जब जँगली पौधो को जो आज जीवित हैं पर जिन्हें कल ही भाड़ में झोंक दिया जाना है, परमेश्वर ऐसे वस्त्र पहनाता है तो अरे ओ कम विश्वास रखने वालो, क्या वह तुम्हें और अधिक वस्त्र नहीं पहनायेगा? 31इसलिये चिंता करते हुए यह मत कहो कि 'हम क्या खायेंगे या हम क्या पीयेंगे या क्या पहनेंगे?' 32विधर्मी लोग इन सब वस्तुओं के पीछे दौड़ते रहते हैं किन्तु स्वर्ग धाम में रहने वाला तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है। 33इसलिये सबसे पहले परमेश्वर के राज्य और तुमसे जो धर्म भावना वह चाहता है, उसकी चिंता करो। ये सब वस्तुएँ तो तुम्हें आप ही रूँगे में दे ही दी जायेंगी। 34कल की चिंता मत करो, क्योंकि कल की तो अपनी और चिंताएँ होंगी। हर दिन की अपनी ही परेशानियाँ होती हैं।

यीशु का वचनः दूसरों को दोषी ठहराने के प्रति

(लूका 6:37-38, 41-42)

7 "दूसरों पर दोष लगाने की आदत मत डालो ताकि तुम पर भी दोष न लगाया जाये। 2क्योंकि तुम्हारा न्याय उसी फैसले के आधार पर होगा, जो फैसला तुमने दूसरों का न्याय करते हुए दिया था। और परमेश्वर तुम्हें उसी नाप से नापेगा जिससे तुमने दूसरों को नापा है। 3तू अपने भाई बंदों की आँख का तिनका तक क्यों देखता है? जबकि तुझे अपनी आँख का लट्ठा भी दिखाई नहीं देता। 4जब तेरी अपनी आँख में लट्ठा समाया है तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है कि तू मुझे तेरी आँख का तिनका निकालने दे। 5ओ कपटी! पहले तू अपनी आँख से लट्ठा निकाल, फिर तू ठीक तरह से देख पायेगा और अपने भाई की आँख का तिनका निकाल पायेगा।

6"कुत्तों को पवित्र वस्तु मत दो। और सुअरों के आगे अपने मोती मत बिखेरो। नहीं तो वे सुअर उन्हें पैरों तले रौंद डालेंगें। और कुत्ते पलट कर तुम्हारी भी धज्जियाँ उड़ा देंगे।

जो कुछ चाहते हो, उसके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करते रहो

(लूका 11:9-13)

7"परमेश्वर से माँगते रहो, तुम्हें दिया जायेगा। खोजते रहो तुम्हें प्राप्त होगा खटखटाते रहो तुम्हारे लिए द्वार खोल दिया जायेगा। 8क्योंकि हर कोई जो माँगता ही रहता है, प्राप्त करता है। जो खोजता है पा जाता है और जो खटखटाता ही रहता है उस के लिए द्वार खोल दिया जाएगा।

9"तुममें से ऐसा पिता कौन सा है जिसका पुत्र उससे रोटी माँगे और वह उसे पत्थर दे? 10या जब वह उससे मछली माँगे तो वह उसे साँप दे दे। बताओ क्या कोई देगा? ऐसा कोई नहीं करेगा! 11इसलिये यदि चाहे तुम बुरे ही क्यों न हो, जानते हो कि अपने बच्चों को अच्छे उपहार कैसे दिये जाते हैं। सो निश्चय ही स्वर्ग में स्थित तुम्हारा परम पिता माँगने वालों को अच्छी वस्तुएँ देगा।

व्यवस्था की सबसे बड़ी शिक्षा

12"इसलिये जैसा व्यवहार अपने लिये तुम दूसरे लोगों
से चाहते हो, वैसा ही व्यवहार तुम भी उनके साथ
करो।' व्यवस्था के विधि और भविष्यवक्ताओं के लिखे
का यही सार है।

स्वर्ग और नरक का मार्ग
(लूका 13:24)

13"सूक्ष्म मार्ग से प्रवेश करो। यह मैं तुम्हें इसलिये
बता रहा हूँ क्योंकि चौड़ा द्वार और बड़ा मार्ग तो विनाश
की ओर ले जाता है। बहुत से लोग हैं जो उस पर चल
रहे हैं। 14किन्तु कितना सँकरा है वह द्वार और कितनी
सीमित है वह राह जो जीवन की ओर जाती है। बहुत
थोड़े से हैं वे लोग जो उसे पा रहे हैं।

कर्म ही बताते हैं कि कोई कैसा है
(लूका 6:43-44; 13:25-27)

15"झूठे भविष्यवक्ताओं से बचो! वे तुम्हारे पास सरल
भेड़ों के रूप में आते हैं किन्तु भीतर से वे खूँखार
भेड़िये होते हैं। 16तुम उन्हें उन के कर्मों के परिणामों से
पहचानोगे। कोई कँटीली झाड़ी से न तो अंगूर इकट्ठे
कर पाता है और न ही गोखरु से अंजीर। 17ऐसे ही
अच्छे पेड़ पर अच्छे फल लगते हैं किन्तु बुरे पेड़ पर तो
बुरे फल ही लगते हैं। 18एक उत्तम वृक्ष बुरे फल नहीं
उपजाता और न ही कोई बुरा पेड़ उत्तम फल पैदा कर
सकता है। 19हर वह पेड़ जिस पर अच्छे फल नहीं
लगते हैं, काट कर आग में झोंक दिया जाता है। 20इसलिए
मैं तुम लोगों से फिर दोहरा कर कहता हूँ कि उन लोगों
को तुम उनके कर्मों के परिणामों से पहचानोगे।

21"प्रभु–प्रभु कहने वाला हर व्यक्ति स्वर्ग के राज्य
में नहीं जा पायेगा बल्कि वह जो स्वर्ग में स्थित मेरे
परम पिता की इच्छा पर चलता है, वही उसमें प्रवेश
पायेगा। 22उस महान दिन बहुत से मुझसे पूछेंगे 'प्रभु! हे
प्रभु! क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की? क्या
तेरे नाम से हमने दुष्टात्माएँ नहीं निकालीं और क्या
हमने तेरे नाम से बहुत से आश्चर्य कर्म नहीं किये?'
23तब मैं उनसे खुल कर कहूँगा कि मैं तुम्हें नहीं
जानता, 'अरे कुकर्मियों, यहाँ से भाग जाओ।'

एक बुद्धिमान और एक मूर्ख
(लूका 6:47-49)

24"इसलिये जो कोई भी मेरे इन शब्दों को सुनता है
और इन पर चलता है, उसकी तुलना उस बुद्धिमान
मनुष्य से होगी जिसने अपना मकान चट्टान पर बनाया,
25वर्षा हुई, बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और ये सब उस
मकान से टकराये पर वह गिरा नहीं। क्योंकि उसकी
नींव चट्टान पर रखी गयी थी। 26किन्तु वह जो मेरे
शब्दों को सुनता है पर उन पर आचरण नहीं करता,
उस मूर्ख मनुष्य के समान है जिसने अपना घर रेत पर
बनाया। 27वर्षा हुई, बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और उस
मकान से टकराई, जिससे वह मकान पूरी तरह ढह
गया।"

28परिणाम यह हुआ कि जब यीशु ने ये बातें कह
कर पूरी कीं, तो उसके उपदेशों पर भीड़ के लोगों को
बड़ा अचरज हुआ। 29क्योंकि वह उन्हें यहूदी धर्म नेताओं
के समान नहीं बल्कि एक अधिकारी के समान शिक्षा
दे रहा था।

यीशु का कोढ़ी को ठीक करना
(मरकुस 1:40-45; लूका 5:12-16)

8 यीशु जब पहाड़ से नीचे उतरा तो बहुत बड़ा जन
समूह उसके पीछे हो लिया। 2वहीं एक कोढ़ी भी
था। वह यीशु के पास आया और उसके सामने झुक
कर बोला, "प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे ठीक कर सकता
है।"

3इस पर यीशु ने अपना हाथ बढ़ा कर कोढ़ी को
छुआ और कहा, "निश्चय ही मैं चाहता हूँ ठीक हो
जा!" और तत्काल कोढ़ी का कोढ़ जाता रहा। 4फिर
यीशु ने उससे कहा, "देख इस बारे में किसी से कुछ मत
कहना। पर याजक के पास जा कर उसे अपने आप
को दिखा। फिर मूसा के आदेश के अनुसार भेंट चढ़ा
ताकि लोगों को तेरे ठीक होने की साक्षी मिले।"

उससे सहायता के लिये विनती
(लूका 7:1-10; यूहन्ना 4:43-54)

5फिर यीशु जब कफरनहूम पहुँचा, एक रोमी सेना
नायक उसके पास आया और उससे सहायता के लिये
विनती करता हुआ बोला, 6"प्रभु, मेरा एक दास घर में
बीमार पड़ा है। उसे लकवा मार गया है। उसे बहुत पीड़ा
हो रही है।"

7तब यीशु ने सेना नायक से कहा, "मैं आकर उसे
अच्छा करूँगा।"

8सेना नायक ने उत्तर दिया, "प्रभु, मैं इस योग्य नहीं
हूँ कि तू मेरे घर में आये। इसलिये केवल आज्ञा दे दे,
बस मेरा दास ठीक हो जायेगा। 9यह मैं जानता हूँ क्योंकि
मैं भी एक ऐसा व्यक्ति हूँ जो किसी बड़े अधिकारी के
नीचे काम करता हूँ। और मेरे नीचे भी दूसरे सिपाही
हैं। जब मैं एक सिपाही से कहता हूँ 'जा' तो वह चला
जाता है और दूसरे से कहता हूँ 'आ' तो वह आ जाता है।
मैं अपने दास से कहता हूँ कि 'यह कर' तो वह उसे
करता है।"

10जब यीशु ने यह सुना तो चकित होते हुए उसने जो
लोग उसके पीछे आ रहे थे, उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ मैंने इतना गहरा विश्वास इस्राएल में भी किसी

में नही पाया। 11मैं तुम्हें यह और बताता हूँ कि, बहुत से
पूर्व और पश्चिम से आयेंगे और वे भोज में इब्राहीम,
इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में
अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे। 12किन्तु राज्य की
मूलभूत प्रजा बाहर अंधेरे में धकेल दी जायेगी जहाँ वे
लोग चीख –पुकार करते हुए दाँत पीसते रहेंगे।"
13तब यीशु ने उस सेनानायक से कहा, "जा वैसा ही
तेरे लिए हो, जैसा तेरा विश्वास है।" और तत्काल उस
सेनानायक का दास अच्छा हो गया।

यीशु का बहुतों को ठीक करना

(मरकुस 1:29-34; लूका 4:38-41)

14यीशु जब पतरस के घर पहुँचा उसने पतरस की
सास को बुखार से पीड़ित बिस्तर में लेटे देखा। 15सो
यीशु ने उसे अपने हाथ से छुआ और उसका बुखार
उतर गया। फिर वह उठी और यीशु की सेवा करने
लगी।
16जब साँझ हुई, तो लोग उसके पास बहुत से ऐसे
लोगों को लेकर आये जिनमें दुष्टात्माएँ थीं। अपनी एक
ही आज्ञा से उसने दुष्टात्माओं को निकाल दिया। इस
तरह उसने सभी रोगियों को चंगा कर दिया। 17यह
इसलिये हुआ ताकि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यशायाह
द्वारा जो कुछ कहा था, पूरा हो:

"उसने हमारे रोगों को ले लिया और हमारे संतापों
को ओढ़ लिया।" *यशायाह 53:4*

यीशु का अनुयायी बनने की चाह

(लूका 9:57-62)

18यीशु ने जब अपने चारों ओर भीड़ देखी तो उसने
अपने अनुयायियों को आज्ञा दी कि वे झील के परले
किनारे चले जायें। 19तब एक यहूदी धर्मशास्त्री उसके
पास आया और बोला, "गुरु, जहाँ कहीं तू जायेगा, मैं
तेरे पीछे चलूँगा।"
20इस पर यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों की खोह
और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं किन्तु
मनुष्य के पुत्र के पास सिर टिकाने को भी कोई स्थान
नहीं है।"
21और उसके एक शिष्य ने उससे कहा, "प्रभु, पहले
मुझे जा कर अपने पिता को गाड़ने की अनुमति दे।"
22किन्तु यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे चला आ
और मरे हुवों को अपने मुर्दे आप गाड़ने दे।"

यीशु का तूफान को शांत करना

(मरकुस 4:35-41; लूका 8:22-25)

23तब यीशु एक नाव पर जा बैठा। उसके अनुयायी
भी उसके साथ थे। 24उसी समय झील में इतना भयंकर
तूफान उठा कि नाव लहरों से दबी जा रही थी। किन्तु
यीशु सो रहा था। 25तब उसके अनुयायी उसके पास
पहुँचे और उसे जगाकर बोले, "प्रभु! हमारी रक्षा कर।
हम मरने को हैं!"
26तब यीशु ने उनसे कहा, "अरे अल्प विश्वासियों!
तुम इतने डरे हुए क्यों हो?" तब उसने खड़े होकर
तूफान और झील को डाँटा और चारों तरफ़ शांति छा
गयी।
27लोग चकित थे। उन्होंने कहा, "यह कैसा व्यक्ति
है? आँधी तूफान और सागर तक इसकी बात मानते
हैं!"

दो व्यक्तियों का दुष्टात्माओं से छुटकारा

(मरकुस 5:1-20; लूका 8:26-39)

28जब यीशु झील के उस पार, गदरेनियों के देश
पहुँचा, तो उसे कब्रों से निकल कर आते दो व्यक्ति
मिले, जिन में दुष्टात्माएँ थीं। वे इतने भयानक थे कि
उस राह से कोई निकल तक नहीं सकता था। 29वे
चिल्लाये, "हे परमेश्वर के पुत्र, तू हमसे क्या चाहता है?
क्या तू यहाँ निश्चित समय से पहले ही हमें दंड देने
आया है?"
30वहाँ कुछ ही दूरी पर बहुत से सुअरों का एक रेवड़
चर रहा था। 31सो उन दुष्टात्माओं ने उससे विनती
करते हुए कहा, "यदि तुझे हमें बाहर निकालना ही है,
तो हमें सुअरों के उस झुंड में भेज दे।" 32सो यीशु ने
उनसे कहा, "चले जाओ।" तब वे उन व्यक्तियों में से
बाहर निकल आए और सुअरों में जा घुसे। फिर वह
समूचा रेवड़ ढलान से लुढ़कते, पुढ़कते दौड़ता हुआ
झील में जा गिरा। सभी सुअर पानी में डूब कर मर गये।
33सुअर के रेवड़ों के रखवाले तब वहाँ से दौड़ते हुए
नगर में आये और सुअरों के साथ तथा दुष्ट आत्माओं
से ग्रस्त उन व्यक्तियों के साथ जो कुछ हुआ था, कह
सुनाया। 34फिर तो नगर के सभी लोग यीशु से मिलने
बाहर निकल पड़े। जब उन्होंने यीशु को देखा तो उससे
विनती की कि वह उनके यहाँ से कहीं और चला जाये।

लकवे के रोगी को अच्छा करना

(मरकुस 2:1-12; लूका 5:17-26)

9 फिर यीशु एक नाव पर जा चढ़ा और झील के पार
अपने नगर आ गया। 2लोग लकवे के एक रोगी
को खाट पर लिटा कर उसके पास लाये। यीशु ने जब
उनके विश्वास को देखा तो उसने लकवे के रोगी से
कहा, "हिम्मत रख हे! बालक, तेरे पाप क्षमा हुए।"
3तभी कुछ यहूदी धर्मशास्त्री आपस में कहने लगे,"यह
व्यक्ति (यीशु) अपने शब्दों से परमेश्वर का अपमान
करता है।"
4यीशु, क्योंकि जानता था कि वे क्या सोच रहे हैं,
उनसे बोला, "तुम अपने मन में बुरे विचार क्यों आने

देते हो? 5अधिक सहज क्या है? यह कहना कि 'तेरे पाप क्षमा हुए' या यह कहना 'खड़ा हो और चल पड़?' 6ताकि तुम यह जान सको कि पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने की शक्ति मनुष्य के पुत्र में है।" यीशु ने लकवे के मारे से कहा, "खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा और घर चला जा।" 7वह लकवे का रोगी खड़ा हो कर अपने घर चला गया। 8जब भीड़ में लोगों ने यह देखा तो वे श्रद्धामय विस्मय से भर उठे। और परमेश्वर की स्तुति करने लगे जिसने मनुष्य को ऐसी शक्ति दी।

यीशु का मत्ती को चुनना

(मरकुस 2:13-17; लूका 5:27-32)

9यीशु जब वहाँ से जा रहा था तो उसने चुंगी की चौकी पर बैठे एक व्यक्ति को देखा। उसका नाम मत्ती था। यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे चला आ।" इस पर मत्ती खड़ा हुआ और उसके पीछे हो लिया।

10ऐसा हुआ कि जब यीशु मत्ती के घर बहुत से चुंगी वसूलने वालों और पापियों के साथ अपने अनुयायियों समेत भोजन कर रहा था 11तो उसे फ़रीसियों ने देखा। वे यीशु के अनुयायियों से पूछने लगे, "तुम्हारा गुरु चुंगी वसूलने वालों और दुष्टों के साथ खाना क्यों खा रहा है?"

12यह सुनकर यीशु उनसे बोला, "स्वस्थ लोगों को नहीं बल्कि रोगियों को एक चिकित्सक की आवश्यकता होती है। 13इसलिये तुम लोग जाओ और समझो कि शास्त्र के इस वचन का अर्थ क्या है: 'मैं बलिदान नहीं चाहता बल्कि दया चाहता हूँ।' मैं धर्मीयों को नहीं, बल्कि पापियों को बुलाने आया हूँ।"

यीशु दूसरे यहूदी धर्म –नेताओं से भिन्न है

(मरकुस 2:18-22; लूका 5:33-39)

14फिर बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के शिष्य यीशु के पास गये और उससे पूछा, "हम और फ़रीसी बार–बार उपवास क्यों करते हैं और तेरे अनुयायी क्यों नहीं करते?"

15फिर यीशु ने उन्हें बताया, "क्या दूल्हे के साथी, जब तक दूल्हा उनके साथ है, शोक मना सकते हैं? किन्तु वे दिन आयेंगे जब दूल्हा उन से छीन लिया जायेगा। फिर उस समय वे दुखी होंगे और उपवास करेंगे।

16"बिना सिकुड़े नये कपड़े का पैबंद पुरानी पोशाक पर कोई नहीं लगाता क्योंकि यह पैबंद पोशाक को और अधिक फाड़ देगा और कपड़े की खींच और बढ़ जायेगी। 17नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरा जाता नहीं तो मशकें फट जाती हैं और दाखरस बहकर बिखर जात है। और मशकें भी नष्ट हो जाती हैं। इसलिये लोग नया दाखरस, नयी मशकों में भरते हैं जिससे दाखरस और मशक दोनों ही सुरक्षित रहते हैं।"

मृत लड़की को जीवन दान और रोगी स्त्री को चंगा करना

(मरकुस 5:21-43; लूका 8:40-56)

18यीशु उन लोगों को जब ये बातें बता ही रहा था, तभी यहूदी धर्म–सभा भवन का एक मुखिया उसके पास आया और उसके सामने झुक कर विनती करते हुए बोला, "अभी–अभी मेरी बेटी मर गयी है। तू चल कर यदि उस पर अपना हाथ रख दे तो वह फिर से जी उठेगी।"

19इस पर यीशु खड़ा हो कर अपने शिष्यों समेत उसके साथ चल दिया।

20वहीं एक ऐसी स्त्री थी जिसे बारह साल से बहुत अधिक रक्त बह रहा था। वह पीछे से यीशु के निकट आयी और उसके वस्त्र की कन्नी छू ली। 21वह मन में सोच रही थी "यदि मैं तनिक भी इसका वस्त्र छू पाऊँ, तो ठीक हो जाऊँगी।"

22मुड़कर उसे देखते हुए यीशु ने कहा, "स्त्री, हिम्मत रख। तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।" और वह स्त्री तुरंत उसी क्षण ठीक हो गयी।

23उधर यीशु जब यहूदी धर्म–सभा भवन के मुखिया के घर पहुँचा तो उसने देखा कि शोक धुन बजाते हुए बाँसुरी वादक और वहाँ इकट्ठे हुए लोग लड़की की मृत्यु पर शोर कर रहे हैं। 24तब यीशु ने लोगों से कहा, "यहाँ से बाहर जाओ। लड़की मरी नहीं है, वह तो सो रही है।" इस पर लोग उसकी हँसी उड़ाने लगे। 25फिर जब भीड़ के लोगों को बाहर भेज दिया गया तो यीशु ने लड़की के कमरे में जा कर उसका हाथ पकड़ा और वह उठ बैठी। 26इसका समाचार उस सारे क्षेत्र में फैल गया।

यीशु द्वारा बहुतों का उपचार

27यीशु जब वहाँ से जाने लगा तो दो अन्धे व्यक्ति उसके पीछे हो लिये। वे पुकार रहे थे "हे दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर।"

28यीशु जब घर के भीतर पहुँचा तो वे अन्धे उसके पास आये। तब यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं, तुम्हें फिर से आँखें दे सकता हूँ?" उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ प्रभु।"

29इस पर यीशु ने उन की आँखों को छूते हुए कहा, "तुम्हारे लिए वैसा ही हो जैसा तुम्हारा विश्वास है।"

30और अंधों को दृष्टि मिल गयी। फिर यीशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, "इसके विषय में किसी को पता नहीं चलना चाहिये।" 31किन्तु उन्होंने वहाँ से जाकर इस समाचार को उस क्षेत्र में चारों ओर फैला दिया।

32जब वे दोनों वहाँ से जा रहे थे तो कुछ लोग यीशु के पास एक गूँगे को लेकर आये। गूँगे में दुष्ट आत्मा समाई हुई थी और इसीलिए वह कुछ बोल नहीं पाता

था। 33जब दुष्ट आत्मा को निकाल दिया गया तो वह
गूँगा, जो पहले कुछ भी नहीं बोल सकता था, बोलने
लगा। तब भीड़ के लोगों ने अचरज से भर कर कहा,
"इस्राएल में ऐसी बात पहले कभी नहीं देखी गयी।"
34किन्तु फरीसी कह रहे थे, "वह दुष्टात्माओं को
शैतान की सहायता से बाहर निकालता है।"

यीशु को लोगों पर खेद

35यीशु यहूदी धर्म सभाओं में उपदेश देता, परमेश्वर
के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करता, लोगों के
रोगों और हर प्रकार के संतापों को दूर करता उस सारे
क्षेत्र में गाँव–गाँव और नगर–नगर घूमता रहा था।
36यीशु जब किसी भीड़ को देखता तो उसके प्रति
करुणा से भर जाता था क्योंकि वे लोग वैसे ही सताये
हुए और असहाय थे, जैसे वे भेड़ें होतीं हैं जिनका कोई
चरवाहा नहीं होता। 37तब यीशु ने अपने अनुयायिओं से
कहा, "तैयार खेत तो बहुत हैं किन्तु मज़दूर कम हैं।
38इसलिए फसल के प्रभु से प्रार्थना करो कि, वह
अपनी फसल को काटने के लिये मज़दूर भेजे।"

सुसमाचार के प्रचार के लिए शिष्यों को भेजना

(मरकुस 3:13-19; 6:7-13;लूका 6:12-16;9:1-6)

10 सो यीशु ने अपने बारह शिष्यों को पास बुलाकर
उन्हें दुष्टात्माओं को बाहर निकालने, और हर
तरह के रोगों और संतापों को दूर करने की शक्ति
प्रदान की। 2उन बारह प्रेरितों के नाम ये हैं:–सबसे
पहला शमौन, जो पतरस कहलाया, और उसका भाई
अंद्रियास, जब्दी का बेटा याकूब और उसका भाई यूहन्ना।
3फिलिप्पुस, बरतुल्मै, थोमा, कर वसूलने वाला मत्ती,
हलफै का बेटा याकूब और तद्दै। 4शमौन ज़िलौती*
और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे धोखे से पकड़वाया
था।
5यीशु ने इन बारहों को बाहर भेजते हुए आज्ञा दी कि
वे "ग़ैर यहूदियों के क्षेत्र में न जायें तथा किसी भी
सामरी–नगर में प्रवेश न करें। 6बल्कि वे इस्राएल के
परिवार की खोई हुई भेड़ों के पास ही जायें 7और उन्हें
उपदेश दें कि 'स्वर्ग का राज्य निकट है।' 8वे बीमारों
को ठीक करें, मरे हुओं को जीवन दें, कोढ़ियों को
चंगा करें और दुष्टात्माओं को निकालें। तुमने बिना
कुछ दिये प्रभु की आशीष और शक्तियाँ पाई हैं, इसलिये
उन्हें दूसरों को बिना कुछ लिये मुक्त भाव से बाँटो।
9अपने पटुके में सोना, चाँदी या ताँबा मत रखो। 10यात्रा
के लिए कोई झोला तक मत लो। कोई फालतू कुर्ता,
चप्पल और छड़ी मत रखो। क्योंकि मज़दूर का उसके
खाने पर अधिकार है।
11"तुम लोग जब कभी किसी नगर या गाँव में जाओ
तो पता करो कि वहाँ विश्वासयोग्य कौन है। फिर तब
तक वहीं ठहरे रहो जब तक वहाँ से चल न दो। 12जब
तुम किसी घर बार में जाओ तो परिवार के लोगों का
सत्कार करते हुए कहो, 'तुम्हें शांति मिले।' 13यदि घर
बार के लोग योग्य होंगे तो तुम्हारा आशीर्वाद उनके
साथ साथ रहेगा और यदि वे इस योग्य न होंगे तो
तुम्हारा आशीर्वाद तुम्हारे पास वापस आ जाएगा।
14"यदि कोई तुम्हारा स्वागत न करे या तुम्हारी बात
न सुने तो उस घर या उस नगर को छोड़ दो। और
अपने पाँव में लगी वहाँ की धूल वहीं झाड़ दो। 15मैं
तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब न्याय होगा, उस दिन उस
नगर की स्थिति से सदोम और अमोरा* नगरों की
स्थिति कहीं अच्छी होगी।"

अपने प्रेरितों को यीशु की चेतावनी

(मरकुस 13:9-13; लूका 21:12-17)

16"सावधान! मैं तुम्हें ऐसे ही बाहर भेज रहा हूँ जैसे
भेड़ों को भेड़ियों के बीच में भेजा जाये। सो साँपों की
तरह चतुर और कबूतरों के समान भोले बनो। 17लोगों
से सावधान रहना क्योंकि वे तुम्हें बंदी बनाकर यहूदी
पंचायतों को सौंप देंगे और वे तुम्हें अपने धर्म–सभा
भवनों में कोड़ों से पिटवायेंगे। 18तुम्हें शासकों और
राजाओं के सामने पेश किया जायेगा, क्योंकि तुम मेरे
अनुयायी हो। तुम्हें अवसर दिया जायेगा कि तुम उनको
और ग़ैरयहूदियों को मेरे बारे में गवाही दो। 19जब वे
तुम्हें पकड़ें तो चिंता मत करना कि, तुम्हें क्या कहना
है और कैसे कहना है। क्योंकि उस समय तुम्हें बता
दिया जायेगा कि तुम्हें क्या बोलना है। 20याद रखो
बोलने वाले तुम नहीं हो, बल्कि तुम्हारे परम पिता का
आत्मा तुम्हारे भीतर बोलेगा।
21"भाई अपने भाइयों को पकड़वा कर मरवा डालेंगे,
माता–पिता अपने बच्चों को पकड़वायेंगे और बच्चे
अपने माँ–बाप के विरुद्ध हो जायेंगे। वे उन्हें मरवा
डालेंगे। 22मेरे नाम के कारण लोग तुमसे घृणा करेंगे
किन्तु जो अंत तक टिका रहेगा उसी का उद्धार होगा।
23वे जब तुम्हें एक नगर में सताएँ तो तुम दूसरे में भाग
जाना। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि इससे पहले कि तुम
इस्राएल के सभी नगरों का चक्कर पूरा करो, मनुष्य
का पुत्र दुबारा आ जाएगा।
24"शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं होता और न ही
कोई दास अपने स्वामी से बड़ा होता है। 25शिष्य को गुरु
के बराबर होने में और दास को स्वामी के बराबर होने
में ही संतोष करना चाहिये। जब वे घर के स्वामी को ही

ज़िलौत एक कट्टर पंथी राजनीतिक दल का नाम था। जिसका वह सदस्य हुआ करता था।

सदोम और अमोरा ये उन दो नगरों के नाम हैं जिन्हें वहाँ के निवासियों को उनके पापों का दण्ड देने के लिये प्रभु ने नष्ट कर दिया था।

बैल्ज़ाबुल कहते हैं तो, उसके घर के दूसरे लोगों के साथ तो और भी बुरा व्यवहार करेंगे!"

प्रभु से डरो, लोगों से नहीं
(लूका 12:2-7)

26"इसलिये उनसे डरना मत क्योंकि जो कुछ छिपा है, सब उजागर होगा। और हर वह वस्तु जो गुप्त है, प्रकट की जायेगी। 27मैं अँधेरे में जो कुछ तुमसे कहता हूँ, मैं चाहता हूँ, उसे तुम उजाले में कहो। मैंने जो कुछ तुम्हारे कानों में कहा है, तुम उसकी मकान की छतों पर चढ़कर, घोषणा करो। 28उनसे मत डरो जो तुम्हारे शरीर को नष्ट कर सकते हैं किन्तु तुम्हारी आत्मा को नहीं मार सकते। बस उस परमेश्वर से डरो जो तुम्हारे शरीर और तुम्हारी आत्मा को नरक में डाल कर नष्ट कर सकता है। 29एक पैसे की दो चिड़ियाओं में से भी एक तुम्हारे परम पिता के जाने बिना और उसकी इच्छा के बिना धरती पर नहीं गिर सकती। 30अरे तुम्हारे तो सिर का एक एक बाल तक गिना हुआ है। 31इसलिये डरो मत तुम्हारा मूल्य तो वैसी अनेक चिड़ियाओं से कहीं अधिक है।"

यीशु में विश्वास
(लूका 12:8-9)

32"जो कोई मुझे सब लोगों के सामने अपनायेगा, मैं भी उसे स्वर्ग में स्थित अपने परम –पिता के सामने अपनाऊँगा। 33किन्तु जो कोई मुझे सब लोगों के सामने नकारेगा, मैं भी उसे स्वर्ग में स्थित अपने परम पिता के सामने नकारूँगा।

34"यह मत सोचो कि मैं धरती पर शांति लाने आया हूँ। शांति नहीं बल्कि मैं तलवार का आवाहन करने आयाहूँ।

35-36 मैं मनुष्य को उसके पिता के विरोध में, पुत्री को माँ के विरोध में, बहू को सास के विरोध में करने आया हूँ। मनुष्य के शत्रु, उसके अपने घर के ही लोग होंगे। *मीका 7:6*

37"जो अपने माता–पिता को मुझ से अधिक प्रेम करता है, वह मेरा होने के योग्य नहीं है। जो अपने बेटे बेटी को मुझसे ज्यादा प्यार करता है, वह मेरा होने के योग्य नहीं है। 38वह जो यातनाओं का अपना क्रूस स्वयं उठाकर मेरे पीछे नहीं हो लेता, मेरा होने के योग्य नहीं है। 39वह जो अपनी जान बचाने की चेष्टा करता है, अपने प्राण खो देगा। किन्तु जो मेरे लिये अपनी जान देगा, वह जीवन पायेगा। 40जो तुम्हें अपनाता है, वह मुझे अपनाता है और जो मुझे अपनाता है, वह उस परमेश्वर को अपनाता है, जिसने मुझे भेजा है। 41जो किसी नबी को इसलिये अपनाता है कि वह नबी है, उसे वही प्रतिफल मिलेगा जो कि नबी को मिलता है। और यदि तुम किसी भले आदमी का इसलिये स्वागत करते हो कि वह भला आदमी है, उसे सचमुच वही प्रतिफल मिलेगा जो किसी भले आदमी को मिलना चाहिए। 42और यदि कोई मेरे इन भोले–भाले शिष्यों में से किसी एक को भी इसलिये एक गिलास ठंडा पानी तक दे कि वह मेरा अनुयायी है, तो मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उसे इसका प्रतिफल, निश्चय ही, बिना मिले नहीं रहेगा।"

यीशु और बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना
(लूका 7:18-35)

11 अपने बारह शिष्यों को इस प्रकार समझा चुकने के बाद यीशु वहाँ से चल पड़ा और गलील प्रदेश के नगरों में उपदेश देता घूमने लगा।

2यूहन्ना ने जब जेल में यीशु के कामों के बारे में सुना तो उसने अपने शिष्यों के द्वारा संदेश भेजकर 3पूछा कि "क्या तू वही है 'जो आने वाला था' या हम किसी और आने वाले की बाट जोहें?"

4उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, "जो कुछ तुम सुन रहे हो, और देख रहे हो, जाकर यूहन्ना को बताओ कि, 5अंधों को आँखें मिल रही हैं, लूले–लंगड़े चल पा रहे हैं, कोढ़ी चंगे हो रहे हैं, बहरे सुन रहे हैं और मरे हुए जिलाये जा रहे हैं। और दीन दुखियों में सुसमाचार का प्रचार किया जा रहा है। 6वह धन्य है जो मुझे अपना सकता है।"

7जब यूहन्ना के शिष्य वहाँ से जा रहे थे तो यीशु भीड़ में लोगों से यूहन्ना के बारे में कहने लगा, "तुम लोग इस बियाबान में क्या देखने आये हो? क्या कोई सरकंडा? जो हवा में थरथरा रहा है। नहीं! 8तो फिर तुम क्या देखने आये हो? क्या एक पुरुष जिसने बहुत अच्छे वस्त्र पहने हैं? देखो जो उत्तम वस्त्र पहनते हैं, वे तो राज भवनों में ही पाये जाते हैं। 9तो तुम क्या देखने आये हो? क्या कोई नबी? हाँ, मैं तुम्हें बताता हूँ कि जिसे तुमने देखा है वह किसी नबी से कहीं ज्यादा है। 10यह वही है जिसके बारे में शास्त्रों में लिखा हैं:

'देख मैं तुझसे पहले ही अपना दूत भेज रहा हूँ। वह तेरे लिये राह बनायेगा।' *मलाकी 3:1*

11"मैं तुझसे सत्य कहता हूँ बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना से बड़ा कोई मनुष्य पैदा नहीं हुआ। फिर भी स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा व्यक्ति भी यूहन्ना से बड़ा है। 12बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के समय से आज तक स्वर्ग का राज्य भयानक आघातों को झेलता रहा है और हिंसा के बल पर इसे छीनने का प्रयत्न किया जाता रहा है। 13यूहन्ना के आने तक सभी भविष्यवक्ताओं और 'मूसा की व्यवस्था' ने भविष्यवाणी की थी, 14और यदि तुम व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं ने जो कुछ

कहा, उसे स्वीकार करने को तैयार हो तो जिसके
आने की भविष्यवाणी की गयी थी, यह यूहन्ना वही
एलिय्याह है। 15जो सुन सकता है, सुने!

16"आज की पीढ़ी के लोगों की तुलना मैं किन से
करूँ? वे बाज़ारों में बैठे उन बच्चों के समान हैं जो एक
दूसरे से पुकार कर कह रहे हैं,
17'हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजायी, पर तुम नहीं
नाचे। हमने शोकगीत गाये किन्तु तुम नहीं रोये।'
18बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना आया। जो न औरों की
तरह खाता था और न ही पीता था। पर लोगों ने कहा
था कि उस में दुष्टात्मा है। 19फिर मनुष्य का पुत्र
आया। जो औरों के समान ही खाता-पीता है, पर लोग
कहते हैं 'इस आदमी को देखो, यह पेटू है, पियक्कड़ है।
यह चुंगी वसूलने वालों और पापियों का मित्र है।' किन्तु
बुद्धि की उत्तमता उसके कामों से सिद्ध होती है।"

अविश्वासियों को यीशु की चेतावनी

(लूका 10:13-15)

20फिर यीशु ने उन नगरों को धिक्कारा जिनमें
उसने बहुत से आश्चर्यकर्म किये थे। क्योंकि वहाँ के
लोगों ने पाप करना नहीं छोड़ा और अपना मन नहीं
फिराया था। 21"अरे अभागे खुराजीन, अरे अभागे
बैतसैदा* तुम में जो आश्चर्यकर्म किये गये, यदि वे सूर
और सैदा में किये जाते तो वहाँ के लोग बहुत पहले से
ही टाट के शोक वस्त्र ओढ़ कर और अपने शरीर पर
राख मल* कर खेद व्यक्त करते हुए मन फिरा चुके
होते।' 22किन्तु मैं तुम लोगों से कहता हूँ न्याय के दिन
सूर और सैदा* की स्थिति तुमसे अधिक सहने योग्य
होगी। 23और अरे कफरनहूम, क्या तू सोचता है कि
तुझे स्वर्ग की महिमा तक ऊँचा उठाया जायेगा? तू तो
अधोलोक में नरक को जायेगा। क्योंकि जो आश्चर्यकर्म
तुझमें किये गये, यदि वे सदोम में किये जाते तो वह
नगर आज तक टिका रहता। 24पर मैं तुम्हें बताता हूँ
कि न्याय के दिन तेरे लोगों की हालत से सदोम की
हालत कहीं अच्छी होगी।"

यीशु को अपनाने वालों को सुख चैन का वचन

(लूका 10:21-22)

25उस अवसर पर यीशु बोला, "परम पिता, तू स्वर्ग
और धरती का स्वामी है, मैं तेरी स्तुति करता हूँ
क्योंकि तूने इन बातों को, उनसे जो ज्ञानी हैं और
समझदार हैं, छिपा कर रखा है। और जो भोले भाले हैं
उनके लिए प्रकट किया है। 26हाँ परम पिता यह इसलिये
हुआ, क्योंकि तूने इसे ही ठीक जाना।

27"मेरे परम पिता ने सब कुछ मुझे सौंप दिया और
वास्तव में परम पिता के अलावा कोई भी पुत्र को नहीं
जानता। और कोई भी पुत्र के अलावा परम पिता को
नहीं जानता। हर वह व्यक्ति परम पिता को जानता है,
जिसके लिये पुत्र ने उसे प्रकट करना चाहा है।

28"अरे, ओ थके-माँदे, बोझ से दबे लोगों! मेरे पास
आओ, मैं तुम्हें सुख चैन दूँगा। 29मेरा जुआ लो और उसे
अपने ऊपर सँभालो। फिर मुझ से सीखो क्योंकि मैं
सरल हूँ और मेरा मन कोमल है। तुम्हें भी अपने लिये
सुख-चैन मिलेगा। 30क्योंकि वह जुआ जो मैं तुम्हें दे
रहा हूँ बहुत सरल है। और वह बोझ जो मैं तुम पर डाल
रहा हूँ, हल्का है।"

यहूदियों द्वारा यीशु और उसके शिष्यों की आलोचना

(मरकुस 2:23-28; लूका 6:1-5)

12 लगभग उसी समय यीशु सब्त के दिन अनाज
के खेतों से होकर जा रहा था। उसके शिष्यों
को भूख लगी और वे गेहूँ की कुछ बालें तोड़ कर खाने
लगे। 2फरीसियों ने ऐसा होते देख कहा, "देख, तेरे शिष्य
वह कर रहे हैं जिसका सब्त के दिन किया जाना मूसा
की व्यवस्था के अनुसार उचित नहीं है।"

3इस पर यीशु ने उनसे पूछा, "क्या तुमने नहीं पढ़ा
कि दाऊद और उसके साथियों ने, जब उन्हें भूख लगी,
क्या किया था? 4उसने परमेश्वर के घर में घुस कर
परमेश्वर को चढ़ाई पवित्र रोटियाँ कैसे खाई थीं? यद्यपि
उसको और उसके साथियों को उनका खाना मूसा की
व्यवस्था के विरुद्ध था। उनको केवल याजक ही खा
सकते थे। 5या मूसा की व्यवस्था में तुमने यह नहीं पढ़ा
कि सब्त के दिन मंदिर के याजक ही वास्तव में सब्त
को बिगाड़ते हैं। और फिर भी उन्हें कोई कुछ नहीं
कहता। 6किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ, यहाँ कोई है जो
मन्दिर से भी बड़ा है।

7यदि तुम शास्त्रों में जो लिखा है, उसे जानते कि, 'मैं
लोगों में दया चाहता हूँ, पशुबलि नहीं', तो तुम उन्हें
दोषी नहीं ठहराते, जो निर्दोष हैं।

8"हाँ, मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी
है।"

यीशु द्वारा सूखे हाथ का अच्छा किया जाना

(मरकुस 3:1-6; लूका 6:6-11)

9फिर वह वहाँ से चल दिया और यहूदी धर्म सभागार
में पहुँचा। 10वहाँ एक व्यक्ति था, जिसका हाथ सूख
चुका था। सो लोगों ने यीशु से पूछा, "मूसा के विधि के

खुराजीन, बैतसैद, कफ़रनहूम झील गलील के किनारे बसे नगर जहाँ यीशु ने उपदेश दिये थे।

"टाट के शोक ... राख मल" उन दिनों लोग शोक व्यक्त करने के लिए इस प्रकार के मोटे कपड़े पहना करते थे, और अपने शरीर पर राख मला करते थे।

सूर और सैदा उन नगरों के नाम हैं जहाँ बहुत बुरे लोग रहा करते थे।

अनुसार सब्त के दिन किसी को चंगा करना, क्या उचित है?" उन्होंने उससे यह इसलिए पूछा था कि, वे उस पर दोष लगा सकें।

11किन्तु उसने उन्हें उत्तर दिया, "मानों तुममें से किसी के पास एक ही भेड़ है, और वह भेड़ सब्त के दिन किसी गढ़े में गिर जाती है, तो क्या तुम उसे पकड़ कर बाहर नहीं निकालोगे? 12फिर आदमी तो एक भेड़ से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसलिए सब्त के दिन 'मूसा की व्यवस्था' भलाई करने की अनुमति देती है।"

13तब यीशु ने उस सूखे हाथ वाले आदमी से कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ा" और उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। वह पूरी तरह अच्छा हो गया था। ठीक वैसा ही जैसा उसका दूसरा हाथ था। 14फिर फरीसी वहाँ से चले गये और उसे मारने के लिए कोई रास्ता ढूँढने की तरकीब सोचने लगे।

यीशु वही करता है जिसके लिए परमेश्वर ने उसे चुना

15यीशु यह जान गया और वहाँ से चल पड़ा। बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। उसने उन्हें चंगा करते हुए 16चेतावनी दी कि वे उसके बारे में लोगों को कुछ न बतायें। 17यह इसलिए हुआ कि भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा प्रभु ने जो कहा था, वह पूरा हो:

18"यह मेरा सेवक है, जिसे मैंने चुना है। यह मेरा प्यारा है, मैं इससे आनन्दित हूँ, अपना 'आत्मा' इस पर मैं रखूँगा सब देशों के सब लोगों को यही न्याय घोषणा करेगा

19यह कभी नहीं चीखेगा या झगड़ेगा ही, लोग इसे गलियों कूचों में नहीं सुनेंगे।

20यह झुके सरकंडे तक को नहीं तोड़ेगा, यह बुझते दीपक तक को नहीं बुझाएगा, डटा रहेगा, तब तक जब तक कि न्याय न हो

21तब फिर सभी लोग अपनी आशाएँ उसमें बाँधेंगे बस केवल उसी नाम में।" *यशायाह 42:1–4*

यीशु में परमेश्वर की शक्ति है

(मरकुस 3:20-30; लूका 11:14-23; 12:10)

22फिर यीशु के पास लोग एक ऐसे अन्धे को लाये जो गूँगा भी था क्योंकि उस पर दुष्ट आत्मा सवार थी। यीशु ने उसे चंगा कर दिया और इसीलिये वह गूँगा अंधा बोलने और देखने लगा। 23इस पर सभी लोगों को बहुत अचरज हुआ और वे कहने लगे, "क्या यह व्यक्ति दाऊद का पुत्र हो सकता है?"

24जब फ़रीसियों ने यह सुना तो वे बोले, "यह दुष्टात्माओं को उनके शासक बैल्ज़ाबुल* के सहारे बाहर निकालता है।"

25यीशु को उनके विचारों का पता चल गया। वह उनसे बोला, "हर वह राज्य जिसमें फूट पड़ जाती है, नष्ट हो जाता है। वैसे ही हर नगर या परिवार जिसमें फूट पड़ जाये टिका नहीं रहेगा। 26तो यदि शैतान ही अपने आप को बाहर निकाले फिर तो उसमें अपने ही विरुद्ध फूट पड़ गयी है। सो उसका राज्य कैसे बना रह सकेगा। 27और फिर यदि यह सच है कि मैं बैल्ज़ाबुल के सहारे दुष्ट आत्माओं को निकालता हूँ तो तुम्हारे अनुयायी किसके सहारे उन्हें बाहर निकालते हैं? सो तुम्हारे अपने अनुयायी ही सिद्ध करेंगे कि तुम अनुचित हो। 28मैं दुष्टात्माओं को परमेश्वर के आत्मा की शक्ति से निकालता हूँ। इससे यह सिद्ध है कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट ही आ पहुँचा है।

29"फिर कोई किसी बलवान के घर में घुस कर उसका माल कैसे चुरा सकता है, जब तक कि पहले वह उस बलवान को बाँध न दे। तभी वह उसके घर को लूट सकता है।

30"जो मेरे साथ नहीं है, मेरा विरोधी है। और जो बिखरी हुई भेड़ों को इकट्ठा करने में मेरी मदद नहीं करता, वह उन्हें बिखरा रहा है। 31इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि सभी की हर तरह की निन्दा और पाप क्षमा कर दिये जायेंगे किन्तु 'आत्मा' की निन्दा करने वाले को क्षमा नहीं किया जायेगा। 32कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में यदि कुछ कहता है तो उसे क्षमा किया जा सकता है, किन्तु 'पवित्र आत्मा' के विरोध में कोई कुछ कहे तो उसे क्षमा नहीं किया जायेगा। न इस युग में और न आने वाले युग में।

व्यक्ति अपने कर्मों से जाना जाता है

(लूका 6:43-45)

33"तुम लोग जानते हो कि अच्छा फल लेने के लिए तुम्हें अच्छा पेड़ ही लगाना चाहिये। और बुरे पेड़ से बुरा ही फल मिलता है। क्योंकि पेड़ अपने फल से ही जाना जाता है।

34"अरे ओ साँप के बच्चो! जब तुम बुरे हो तो अच्छी बातें कैसे कह सकते हो? व्यक्ति के शब्द, जो उसके मन में भरा है, उसी से निकलते हैं।

35"एक अच्छा व्यक्ति जो अच्छाई उसके मन में इकट्ठी है, उसी में से अच्छी बातें निकालता है। जबकि एक बुरा व्यक्ति जो बुराई उसके मन में है, उसी में से बुरी बातें निकालता है।

36"किन्तु मैं तुम लोगों को बताता हूँ कि न्याय के दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने हर व्यर्थ बोले शब्द का हिसाब देना होगा। 37तेरी बातों के आधार पर ही तुझे निर्दोष और तेरी बातों के आधार पर ही तुझे दोषी ठहराया जायेगा।"

बैल्ज़ाबुल यह दुष्टात्माओं के राजा 'शैतान' का नाम है।

यीशु से आश्चर्य चिन्ह की माँग
(मरकुस 8:11-12; लूका 11:29-32)

38फिर कुछ यहूदी धर्म शास्त्रियों और फ़रीसियों ने
उससे कहा, "गुरु, हम तुझे आश्चर्य चिन्ह प्रकट करते
देखना चाहते हैं।"
39उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, "इस युग के बुरे और
दुराचारी लोग ही आश्चर्य चिन्ह देखना चाहते हैं।
भविष्यवक्ता योना के आश्चर्य चिन्ह को छोड़कर, उन्हें
और कोई आश्चर्य चिन्ह नहीं दिया जायेगा।" 40और
जैसे योना तीन दिन और तीन रात उस समुद्री जीव के
पेट में रहा था, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और
तीन रात धरती के भीतर रहेगा। 41न्याय के दिन नीनेवा
के निवासी आज की इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़े
होंगे और उन्हें दोषी ठहरायेंगे। क्योंकि नीनेवा के वासियों
ने योना के उपदेश से मन फिराया था। और यहाँ तो
कोई योना से भी बड़ा मौजूद है! 42न्याय के दिन दक्षिण
की रानी इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़ी होगी और
उन्हें अपराधी ठहरायेगी, क्योंकि वह धरती के दूसरे
छोर से सुलेमान का उपदेश सुनने आयी थी और यहाँ
तो कोई सुलैमान से भी बड़ा मौजूद है!

लोगों में शैतान
(लूका 11:24-26)

43"जब कोई दुष्टात्मा किसी व्यक्ति को छोड़ती है तो
वह आराम की खोज में सूखी धरती ढूँढती फिरती है,
किन्तु वह उसे मिल नहीं पाती। 44तब वह कहती है कि
जिस घर को मैंने छोड़ा था, मैं फिर वहीं लौट जाऊँगी।
सो वह लौटती है और उसे अब तक खाली, साफ सुथरा
तथा सजा–सँवरा पाती है। 45फिर वह लौटती है और
अपने साथ सात और दुष्टात्माओं को लाती है जो उससे
भी बुरी होती हैं। फिर वे सब आकर वहाँ रहने लगती
हैं। और उस व्यक्ति की दशा पहले से भी अधिक
भयानक हो जाती है। आज की इस बुरी पीढ़ी के लोगों
की दशा भी ऐसी ही होगी।"

यीशु के अनुयायी ही उसका परिवार
(मरकुस 3:31-35; लूका 8:19-21)

46वह अभी भीड़ के लोगों से बातें कर ही रहा था
कि उसकी माता और भाई–बन्धु वहाँ आकर बाहर
खड़े हो गये। वे उससे बात करने को बाट जोह रहे थे।
47किसी ने यीशु से कहा "सुन तेरी माँ और तेरे भाई–बन्धु
बाहर खड़े हैं और तुझ से बात करना चाहते हैं।"
48उत्तर में यीशु ने बात करने वाले से कहा, "कौन है
मेरी माँ? कौन हैं मेरे भाई–बंधु?" 49फिर उसने हाथ से
अपने अनुयायिओं की तरफ इशारा करते हुए कहा,
"ये हैं मेरी माँ और मेरे भाई–बन्धु। 50हाँ स्वर्ग में स्थित
मेरे पिता की इच्छा पर जो कोई चलता है, वही मेरा
भाई, बहन और माँ है।"

किसान और बीज का दृष्टान्त
(मरकुस 4:1-9; लूका 8:4-8)

13 उसी दिन यीशु उस घर को छोड़ कर झील के
किनारे उपदेश देने जा बैठा। 2बहुत से लोग
उसके चारों तरफ़ इकट्ठे हो गये। सो वह एक नाव पर
चढ़ कर बैठ गया। और भीड़ किनारे पर खड़ी रही।
3उसने उन्हें दृष्टान्तों का सहारा लेते हुए बहुत सी बातें
बतायीं। उसने कहा कि: "एक किसान बीज बोने निकला।
4जब वह बुवाई कर रहा था तो कुछ बीज राह के
किनारे जा पड़े। चिड़ियाएँ आयीं और उन्हें चुग गयीं।
5थोड़ें बीज चट्टानी धरती पर जा गिरे। वहाँ मिट्टी
बहुत उथली थी। बीज तुरंत उगे, क्योंकि वहाँ मिट्टी तो
गहरी थी नहीं; 6इसलिए जब सूरज चढ़ा तो वे पौधे
झुलस गये। क्योंकि उन्होंने ज्यादा जड़ें तो पकड़ी नहीं
थीं, इसलिए वे सूख कर गिर गये। 7बीजों का एक
हिस्सा कँटीली झाड़ियों में जा गिरा, झाड़ियाँ बड़ी हुई,
और उन्होंने उन पौधों को दबोच लिया। 8पर थोड़े बीज
जो अच्छी धरती पर गिरे थे, अच्छी फसल देने लगे।
फसल, जितना बोया गया था, उससे कोई तीस गुना,
साठ गुना यासौ गुना से भी ज़्यादा हुई। 9जो सुन सकता
है, वह सुन ले।"

दृष्टान्त–कथाओं का प्रयोजन
(मरकुस 4:10-12; लूका 8:9-10)

10फिर यीशु के शिष्यों ने उसके पास जाकर उससे
पूछा, "तू उनसे बातें करते हुए दृष्टान्त कथाओं का
प्रयोग क्यों करता है?"
11उत्तर में उसने उनसे कहा, "स्वर्ग के राज्य के भेदों
को जानने का अधिकार सिर्फ तुम्हें दिया गया है, उन्हें
नहीं। 12क्योंकि जिसके पास थोड़ा बहुत है, उसे और भी
दिया जायेगा और उसके पास बहुत अधिक हो जायेगा।
किन्तु जिसके पास कुछ भी नहीं है, उससे जितना सा
उसके पास है, वह भी छीन लिया जायेगा। 13इसीलिये मैं
उनसे दृष्टान्त कथाओं का प्रयोग करते हुए बात करता
हूँ। क्योंकि यद्यपि वे देखते हैं, पर वास्तव में उन्हें कुछ
दिखाई नहीं देता, वे यद्यपि सुनते हैं पर वास्तव में न वे
सुनते हैं, न समझते हैं। 14इस प्रकार उन पर यशायाह
की यह भविष्यवाणी खरी उतरती है:

'तुम सुनोगे और सुनते ही रहोगे पर तुम्हारी समझ में
कुछ भी न आयेगा, तुम बस देखते ही रहोगे पर तुम्हें
कुछ भी न सूझ पायेगा
15क्योंकि इनके हृदय जड़ता से भर गये। इन्होंने
अपने कान बन्द कर रखे हैं और अपनी आखें मूँद
रखी हैं ताकि वे अपनी आँखों से कुछ भी न देखें और
वे कान से कुछ न सुन पायें या कि अपने हृदय से
कभी न समझें और कभी मेरी ओर मुड़कर आयें और
जिससे मैं उनका उद्धार करूँ।' *यशायाह 6:9–10*

16किन्तु तुम्हारी आँखें और तुम्हारे कान भाग्यवान्
हैं क्योंकि वे देख और सुन सकते हैं। 17मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ, बहुत से भविष्यवक्ता और धर्मात्मा जिन बातों
को देखना चाहते थे, उन्हें तुम देख रहे हो। वे उन्हें नहीं
देख सके। और जिन बातों को वे सुनना चाहते थे, उन्हें
तुम सुन रहे हो। वे उन्हें नहीं सुन सके।

बीज बोने की दृष्टान्त–कथा का अर्थ
(मरकुस 4:13-20; लूका 8:11-15)

18"तो बीज बोने वाले की दृष्टान्त–कथा का अर्थ
सुनो। 19वह बीज जो राह के किनारे गिर पड़ा था,
उसका अर्थ है कि जब कोई स्वर्ग के राज्य का सुसंदेश
सुनता है और उसे समझता नहीं है तो बदी आकर,
उसके मन में जो उगा था, उसे उखाड़ ले जाती है। 20वे
बीज जो चट्टानी धरती पर गिरे थे, उनका अर्थ है वह
व्यक्ति जो सुसंदेश सुनता है, उसे आनन्द के साथ तत्काल
ग्रहण भी करता है 21किन्तु अपने भीतर उसकी जड़ें
नहीं जमने देता, वह थोड़ी ही देर ठहर पाता है, जब
सुसंदेश के कारण उस पर कष्ट और यातनाएँ आती हैं
तो वह जल्दी ही डगमगा जाता है। 22काँटों में गिरे बीज
का अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश को सुनता तो है, पर
संसार की चिंताएँ और धन का लोभ सुसंदेश को दबा
देता है और वह व्यक्ति सफल नहीं हो पाता। 23अच्छी
धरती पर गिरे बीज से अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश
को सुनता है और समझता है। वह सफल होता है। वह
सफलता बोये बीज से तीस गुना, साठ गुना या सौ गुना
तक होती है।"

गेहूँ और खरपतवार का दृष्टान्त

24यीशु ने उनके सामने एक और दृष्टान्त कथा
रखी: "स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान है जिसने
अपने खेत में अच्छे बीज बोये थे। 25पर जब लोग सो रहे
थे, उस व्यक्ति का शत्रु आया और गेहूँ के बीच खरपतवार
बो गया। 26जब गेहूँ में अंकुर निकले और उस पर बालें
आयी तो खरपतवार भी दिखने लगी। 27तब खेत के
मालिक के पास आकर उसके दासों ने उससे कहा,
'मालिक, तूने तो खेत में अच्छा बीज बोया था, बोया था
न? फिर ये खरपतवार कहाँ से आई?'

28"तब उसने उनसे कहा, 'यह किसी शत्रु का काम
है।' उसके दासों ने उससे पूछा, 'क्या तू चाहता है कि
हम जाकर खरपतवार उखाड़ दें?'

29"वह बोला, 'नही, क्योंकि जब तुम खरपतवार
उखाड़ोगे तो उनके साथ, तुम गेहूँ भी उखाड़ दोगे।

30"जब तक फसल पके दोनों को साथ साथ बढ़ने
दो, फिर कटाई के समय में फसल काटने वालों से
कहूँगा कि पहले खरपतवार की पुलियाँ बना कर उन्हें
जला दो और फिर गेहूँ को बटोर कर मेरी खत्ती में रख
दो।'"

कई अन्य दृष्टान्त–कथाएँ
(मरकुस 4:30-34; लूका 13:18-21)

31यीशु ने उनके सामने और दृष्टान्त–कथाएँ रखी।
"स्वर्ग का राज्य राई के छोटे से बीज के समान होता है,
जिसे किसी ने लेकर खेत में बो दिया हो। 32यह बीज
छोटे से छोटा होता है, किन्तु बड़ा होने पर यह बाग के
सभी पौधों से बड़ा हो जाता है। यह पेड़ बनता है और
आकाश के पक्षी आकर इसकी शाखाओं पर शरण
लेते हैं।"

33उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा और कही–"स्वर्ग
का राज्य खमीर के समान है, जिसे किसी स्त्री ने तीन
भार आटे में मिलाया और तब तक उसे रख छोड़ा जब
तक वह सब का सब खमीर नहीं हो गया।"

34यीशु ने लोगों से यह सब कुछ दृष्टान्त–कथाओं के
द्वारा कहा। वास्तव में वह उनसे दृष्टान्त कथाओं के
बिना कुछ भी नहीं कहता था। 35ऐसा इसलिये था कि
परमेश्वर ने भविष्यवक्ता के द्वारा जो कुछ कहा था वह
पूरा हो: परमेश्वर ने कहा कि,

"मैं दृष्टान्त कथाओं के द्वारा अपना मुँह खोलूँगा।
सृष्टि के आदिकाल से जो बातें छिपी रही हैं, उन्हें
उजागर करूँगा।" *भजन संहिता 78:2*

गेहूँ और खरपतवार के दृष्टान्त की व्याख्या

36फिर यीशु उस भीड़ को विदा करके घर चला
आया। तब उसके शिष्यों ने आकर उससे कहा, "खेत
के खरपतवार के दृष्टान्त का अर्थ हमें समझा।"

37उत्तर में यीशु बोला, "जिसने उत्तम बीज बोया था,
वह है मनुष्य का पुत्र। 38और खेत यह संसार है। अच्छे
बीज का अर्थ है, स्वर्ग के राज्य के लोग। खरपतवार
का अर्थ है, वे व्यक्ति जो शैतान की संतान हैं। 39वह
शत्रु जिसने खरपतवार बीजे थे, शैतान है और कटाई
का समय है, इस जगत का अंत और कटाई करने वाले
हैं स्वर्गदूत।

40"ठीक वैसे ही जैसे खरपतवार को इकट्ठा करके
आग में जला दिया गया, वैसे ही सृष्टि के अंत में होगा।
41मनुष्य का पुत्र अपने दूतों को भेजेगा और वे उसके
राज्य से सभी पापियों को और उनको, जो लोगों को
पाप के लिये प्रेरित करते हैं, 42इकट्ठा करके धधकते
भाड़ में झोंक देंगे जहाँ बस दाँत पीसना और रोना ही
रोना होगा। 43तब धर्मी अपने परम पिता के राज्य में
सूरज की तरह चमकेंगे। जो सुन सकता है, सुन ले!"

धन का भण्डार और मोती का दृष्टान्त

44"स्वर्ग का राज्य खेत में गड़े धन जैसा है। जिसे
किसी मनुष्य ने पाया और फिर उसे वहीं गाड़ दिया।
वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसने जो कुछ उसके पास
था, जाकर बेच दिया और वह खेत मोल ले लिया।

45"स्वर्ग का राज्य एक ऐसे व्यापारी के समान है जो
अच्छे मोतियों की खोज में हो। 46जब उसे एक अनमोल
मोती मिला तो जाकर जो कुछ उसके पास था, उसने
बेच डाला, और मोती मोल ले लिया।

मछली पकड़ने का जाल

47"स्वर्ग का राज्य मछली पकड़ने के लिए झील में
फेंके गए एक जाल के समान भी है। जिसमें तरह तरह
की मछलियाँ पकड़ी गयी। 48जब वह जाल पूरा भर गया
तो उसे किनारे पर खींच लिया गया। और वहाँ बैठ कर
अच्छी मछलियाँ छाँट कर टोकरियों में भर ली गयीं
किन्तु बेकार मछलियाँ फेंक दी गयी। 49सृष्टि के अन्त
में ऐसे ही होगा। स्वर्गदूत आयेंगे और धर्मियों में से
पापियों को छाँट कर 50धधकते भाड़ में झोंक देंगे जहाँ
बस रोना और दाँत पीसना होगा।"

51यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा, "तुम ये सब बातें
समझते हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ!"

52यीशु ने उनसे कहा, "देखो, इसीलिये हर धर्मशास्त्री
जो परमेश्वर के राज्य को जानता है, एक ऐसे गृहस्वामी
के समान है, जो अपने कोठार से नई–पुरानी वस्तुओं
को बाहर निकालता है।"

यीशु का अपने देश लौटना

(मरकुस 6:1-6; लूका 4:16-30)

53इन दृष्टान्त कथाओं को समाप्त करके वह वहाँ
से चल दिया 54और अपने देश आ गया। फिर उसने
यहूदी धर्म सभाओं में उपदेश देना आरम्भ कर दिया।
इससे हर कोई अचरज में पड़ कर कहने लगा, "इसे
ऐसी सूझबूझ और चमत्कारी शक्ति कहाँ से मिली?
55क्या यह वही बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या इसकी माँ
का नाम मरियम नहीं है? याकूब, यूसुफ, शमौन और
यहूदा इसी के तो भाई हैं न? 56क्या इसकी सभी बहनें
हमारे ही बीच नहीं हैं? तो फिर उसे यह सब कहाँ से
मिला।" 57सो उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। फिर
यीशु ने कहा, "किसी नबी का अपने गाँव और घर को
छोड़ कर, सब आदर करते हैं।"

58सो उनके अविश्वास के कारण उसने वहाँ अधिक
आश्चर्य कर्म नहीं किये।

हेरोदेस का यीशु के बारे में सुनना

(मरकुस 6:14-29; लूका 9:7-9)

14 उस समय गलील के शासक हेरोदेस ने जब
यीशु के बारे में सुना 2तो उसने अपने सेवकों
से कहा, "यह बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना है जो मरे
हुओं में से जी उठा है। और इसलिए ये शक्तियाँ उसमें
काम कर रही हैं। जिनसे यह इन चमत्कारों को करता
है।"

यूहन्ना की हत्या

3यह वही हेरोदेस था जिसने यूहन्ना को बंदी बना,
जंजीरों में बाँध, जेल में डाल दिया था। यह उसने हिरोदियास
के कहने पर किया था, जो पहले उसके भाई फिलिप्पुस
की पत्नी थी। 4यूहन्ना प्राय: उससे कहा करता था कि
"तुझे इसके साथ नहीं रहना चाहिये।" 5सो हेरोदेस उसे
मार डालना चाहता था, पर वह लोगों से डरता था
क्योंकि लोग यूहन्ना को नबी मानते थे। 6पर जब हेरोदेस
का जन्म दिन आया तो हिरोदियास की बेटी ने हेरोदेस
और उसके मेहमानों के सामने नाच कर हेरोदेस को
इतना प्रसन्न किया 7कि उसने शपथ ले कर, वह जो
कुछ चाहे, उसे देने का वचन दिया।

8अपनी माँ के सिखावे में आकर उसने कहा, "मुझे
थाली में रख कर बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का शीष
दे।" 9यद्यपि राजा बहुत दुखी था किन्तु अपनी शपथ
और अपने मेहमानों के कारण उसने उसकी माँग पूरी
करने का आदेश दे दिया। 10उसने जेल में यूहन्ना का
सिर काटने के लिये आदमी भेजे। 11सो यूहन्ना का सिर
थाली में रख कर लाया गया और उसे लड़की को दे
दिया गया। वह उसे अपनी माँ के पास ले गयी। 12तब
यूहन्ना के अनुयायी आये और उन्होंने उसके धड़ को
लेकर दफना दिया। और फिर उन्होंने आकर यीशू को
बताया।

यीशु का पाँच हजार से अधिक को खाना खिलाना

(मरकुस 6:30-44; लूका 9:10-17;
यूहन्ना 6:1-14)

13जब यीशु ने इसकी चर्चा सुनी तो वह वहाँ से नाव
में किसी एकान्त स्थान पर अकेला चला गया। किन्तु
जब भीड़ को इसका पता चला तो वे अपने नगरों से
पैदल ही उसके पीछे हो लिये। 14यीशु जब नाव से बाहर
निकल कर किनारे पर आया तो उसने एक बड़ी भीड़
देखी। उसे उन पर दया आयी और उसने उनके बीमारों
को अच्छा किया।

15जब शाम हुई तो उसके शिष्यों ने उसके पास
आकर कहा, "यह सुनसान जगह है और बहुत देर भी
हो चुकी है, सो भीड़ को विदा कर, ताकि वे गाँव में जा
कर अपने लिये खाना मोल ले लें।"

16किन्तु यीशु ने उनसे कहा, "इन्हें कहीं जाने की
आवश्यकता नहीं है। तुम इन्हें कुछ खाने को दो।"

17उन्होंने उससे कहा, "हमारे पास पाँच रोटियों और
दो मछलियों को छोड़ कर और कुछ नहीं है।"

18यीशु ने कहा, "उन्हें मेरे पास ले आओ।" 19उसने
भीड़ के लोगों से कहा कि वे घास पर बैठ जायें। फिर
उसने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ ले कर स्वर्ग की
ओर देखा और भोजन के लिये परमेश्वर का धन्यवाद
किया। फिर रोटी के टुकड़े तोड़े और उन्हें अपने

शिष्यों को दे दिया। शिष्यों ने वे टुकड़े लोगों में बाँट दिये। 20सभी ने छक कर खाया। इसके बाद बचे हुए टुकड़ों से उसके शिष्यों ने बारह टोकरियाँ भरीं। 21स्त्रियों और बच्चों को छोड़ कर वहाँ खाने वाले कोई पाँच हज़ार पुरुष थे।

यीशु का झील पर चलना

(मरकुस 6:45-52; यूहन्ना 6:15-21)

22इसके तुरंत बाद यीशु ने अपने शिष्यों को नाव पर चढ़ाया और जब तक वह भीड़ को विदा करे, उनसे गलील की झील के पार अपने से पहले ही जाने को कहा। 23भीड़ को विदा करके वह अकेले में प्रार्थना करने को पहाड़ पर चला गया। साँझ होने पर वह वहाँ अकेला था। 24तब तक नाव किनारे से मीलों दूर जा चुकी थी और लहरों में थपेड़े खाती डगमगा रही थी। सामने की हवा चल रही थी।

25सुबह कोई तीन और छः बजे के बीच यीशु झील पर चलता हुआ उनके पास आया। 26उसके शिष्यों ने जब उसे झील पर चलते हुए देखा तो वह घबराये हुए आपस में कहने लगे "यह तो कोई भूत है!" वे डर के मारे चीखउठे। 27यीशु ने तत्काल उनसे बात करते हुए कहा, "हिम्मत रखो! यह मैं हूँ! अब और मत डरो।"

28पतरस ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "प्रभु, यदि यह तू है, तो मुझे पानी पर चल कर अपने पास आने कोकह।" 29यीशु ने कहा, "चला आ।"

पतरस नाव से निकल कर पानी पर यीशु की तरफ चल पड़ा। 30उसने जब तेज हवा देखी तो वह घबराया। वह डूबने लगा और चिल्लाया, "प्रभु, मेरी रक्षा कर।"

31यीशु ने तत्काल उसके पास पहुँच कर उसे सँभाल लिया और उससे बोला, "ओ अल्प विश्वासी, तूने संदेह क्यों किया?"

32और वे नाव पर चढ़ आये। हवा थम गयी। 33नाव पर के लोगों ने यीशु की उपासना की और कहा, "तू सचमुच परमेश्वर का पुत्र है।"

34सो झील पार करके वे गन्नेसरत के तट पर उतर गये। 35जब वहाँ रहने वालों ने यीशु को पहचाना तो उन्होंने उसके आने का समाचार आसपास सब कहीं भिजवा दिया। जिससे लोग–जो रोगी थे, उन सब को वहाँ ले आये 36और उससे प्रार्थना करने लगे कि वह उन्हें अपने वस्त्र का बस किनारा ही छू लेने दे। और जिन्होंने छू लिया, वे सब पूरी तरह चंगे हो गये।

मनुष्य के बनाये नियमों से परमेश्वर का विधान बड़ा है

(मरकुस 7:1-23)

15 फिर कुछ फ़रीसी और यहूदी धर्मशास्त्री यरुशलेम से यीशु के पास आये और उससे पूछा, 2"तेरे अनुयायी हमारे पुरखों के रीति –रिवाजों का पालन क्यों नहीं करते? वे खाना खाने से पहले अपने हाथ क्यों नहीं धोते?"

3यीशु ने उत्तर दिया, "अपने रीति रिवाजों के कारण तुम परमेश्वर के विधि को क्यों तोड़ते हो? 4क्योंकि परमेश्वर ने तो कहा था, 'तू अपने माता–पिता का आदर कर'* और 'जो कोई अपने पिता या माता का अपमान करता है, उसे अवश्य मार दिया जाना चाहिये।'* 5किन्तु तुम कहते हो जो कोई अपने पिता या अपनी माता से कहे, 'क्योंकर मैं अपना सब कुछ परमेश्वर को अर्पित कर चुका हूँ, इसलिये तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता।' 6इस तरह उसे अपने माता पिता का आदर करने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार तुम अपने रीति रिवाजों के कारण परमेश्वर के आदेश को नकारते हो। 7ओ ढोंगियो, तुम्हारे बारे में यशायाह ने ठीक ही भविष्यवाणी की थी। उसने कहा था:

8'ये मेरा केवल होठों से आदर करते है; पर इनके मन मुझ से सदा दूर रहते हैं

9इनकी अर्पित उपासना मुझ को बिना काम की क्योंकि ये लोगों को कह सिखाते मनुष्य के अपने सिद्धान्त, बनाये नियम।'" *यशायाह 29:13*

10उसने भीड़ को अपने पास बुलाया और उनसे कहा, "सुनो और समझो कि 11मनुष्य के मुख के भीतर जो जाता है वह उसे अपवित्र नहीं करता, बल्कि उसके मुँह से निकला हुआ शब्द उसे अपवित्र करता है।"

12तब यीशु के शिष्य उसके पास आये और बोले, "क्या तुझे पता है कि तेरी बात का फरीसियों ने बहुत बुरा माना है?"

13यीशु ने उत्तर दिया, "हर वह पौधा जिसे मेरे स्वर्ग में स्थित पिता की ओर से नहीं लगाया गया है, उखाड़ दिया जायेगा। 14उन्हें छोड़ो, वे तो अन्धों के अंधे नेता हैं। यदि एक अंधा दूसरे अंधे को राह दिखाता है, तो वे दोनों ही गढ़े में गिरते हैं।"

15तब पतरस ने उससे कहा, "हमें अपवित्रता सम्बन्धी दृष्टान्त का अर्थ समझा।"

16यीशु बोला, "क्या तुम अब भी नहीं समझते? 17क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ किसी के मुँह में जाता है, वह उस के पेट में पहुँचता है और फिर पखाने में निकल जाता है? 18किन्तु जो मनुष्य के मुँह से बाहर आता है, वह उसके मन से निकलता है। यही उस को अपवित्र करता है। 19क्योंकि बुरे विचार, हत्या, व्यभिचार, दुराचार, चोरी, झूठ और निन्दा जैसी सभी बुराइयाँ मन

"तू ... कर" देखें निर्गमन 20:12; व्यवस्था. 5:16

"जो कोई ... जाना चाहिये" देखें निर्गमन 21:17

से ही आती हैं। 20ये ही हैं जिनसे कोई अपवित्र बनता है। बिना हाथ धोए खाने से कोई अपवित्र नहीं होता।"

ग़ैर यहूदी स्त्री की सहायता
(मरकुस 7:24-30)

21फिर यीशु उस स्थान को छोड़ कर सूर और सैदा की ओर चल पड़ा। 22वहाँ की एक कनानी स्त्री आयी और चिल्लाने लगी, "हे प्रभु, दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया कर। मेरी पुत्री पर दुष्ट आत्मा बुरी तरह सवार है।"

23यीशु ने उससे एक शब्द भी नहीं कहा, सो उसके शिष्य उसके पास आये और विनती करने लगे, "यह हमारे पीछे चिल्लाती हुई आ रही है, इसे दूर हटा।"

24यीशु ने उत्तर दिया, "मुझे केवल इस्राएल के लोगों की खोई हुई भेड़ों के अलावा किसी और के लिये नहीं भेजा गया है।"

25तब उस स्त्री ने यीशु के सामने झुक कर विनती की, "हे प्रभु, मेरी रक्षा कर!"

26उत्तर में यीशु ने कहा, "यह उचित नहीं है कि बच्चों का खाना लेकर उसे घर के कुत्तों के आगे डाल दियाजाये।"

27वह बोली, "यह ठीक है प्रभु, किन्तु अपने स्वामी की मेज़ से गिरे हुए चूरे में से थोड़ा बहुत तो घर के कुत्ते भी खा ही लेते हैं।"

28तब यीशु ने कहा, "स्त्री, तेरा विश्वास बहुत बड़ा है। जो तू चाहती है, पूरा हो।" और तत्काल उसकी बेटी अच्छी हो गयी।

यीशु का बहुतों को अच्छा करना

29फिर यीशु वहाँ से चल पड़ा और झील गलील के किनारे पहुँचा। वह एक पहाड़ पर चढ़ कर उपदेश देने बैठ गया।

30बड़ी–बड़ी भीड़ लँगड़े–लूलों, अंधों, अपाहिजों, बहरे–गूंगों और ऐसे ही दूसरे रोगियों को लेकर उसके पास आने लगी। भीड़ ने उन्हें उसके चरणों में धरती पर डाल दिया। और यीशु ने उन्हें चंगा कर दिया। 31इससे भीड़ के लोगों को, यह देखकर कि बहरे गूंगे बोल रहे हैं, अपाहिज अच्छे हो गये, लँगड़े–लूले चल फिर रहे हैं और अन्धे अब देख पा रहे हैं, बड़ा अचरज हुआ। वे इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

चार हज़ार से अधिक को भोजन
(मरकुस 8:1-10)

32तब यीशु ने अपने शिष्यों को पास बुलाया और कहा, "मुझे इस भीड़ पर तरस आ रहा है क्योंकि ये लोग तीन दिन से लगातार मेरे साथ हैं और इनके पास कुछ खाने को भी नहीं है। मैं इन्हें भूखा ही नहीं भेजना चाहता क्योंकि हो सकता है कहीं वे रास्ते में ही मुर्छित होकर न गिर पड़ें। 33तब उसके शिष्यों ने कहा, "इतनी बड़ी भीड़ के लिए ऐसी बियाबान जगह में इतना खाना हमें कहाँ से मिलेगा?"

34तब यीशु ने उनसे पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?" उन्होंने कहा, "सात रोटियाँ और कुछ छोटी मछलियाँ।"

35यीशु ने भीड़ से धरती पर बैठने को कहा और उन सात रोटियों और मछलियों को लेकर उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया 36और रोटियाँ तोड़ीं और अपने शिष्यों को देने लगा। फिर उसके शिष्यों ने उन्हें आगे लोगों में बाँट दिया। 37लोग तब तक खाते रहे जब तक थक न गये। फिर उसके शिष्यों ने बचे हुए टुकड़ों से सात टोकरियाँ भरीं। 38औरतों और बच्चों को छोड़ कर वहाँ चार हज़ार पुरुषों ने भोजन किया। 39भीड़ को विदा करके यीशु नाव में आ गया और मगदन को चला गया।

यहूदी नेताओं की चाल
(मरकुस 8:11-13; लूका 12:54-56)

16 फिर फरीसी और सदूकी यीशु के पास आये। वे उसे परखना चाहते थे सो उन्होंने उससे कोई चमत्कार करने को कहा, ताकि पता लग सके कि उसे परमेश्वर की अनुमति मिली हुई है।

2उस ने उत्तर दिया, "सूरज छुपने पर तुम लोग कहते हो 'आज मौसम अच्छा रहेगा क्योंकि आसमान लाल है' 3और सूरज उगने पर तुम कहते हो 'आज अंधड़ आयेगा क्योंकि आसमान धुँधला और लाल है।' तुम आकाश के लक्षणों को पढ़ना जानते हो, पर अपने समय के लक्षणों को नहीं पढ़ सकते। 4अरे दुष्ट और दुराचारी पीढ़ी के लोग कोई चिन्ह देखना चाहते हैं, पर उन्हें सिवाय योना के चिन्ह के कोई और दूसरा चिन्ह नहीं दिखाया जायेगा।" फिर वह उन्हें छोड़ कर चला गया।

यीशु की चेतावनी
(मरकुस 8:14-21)

5यीशु के शिष्य झील के पार चले आये, पर वे रोटी लाना भूल गये। 6इस पर यीशु ने उनसे कहा, "चौकन्ने रहो! और फरीसियों और सदूकियों के ख़मीर से बचे रहो।"

7वे आपस में सोच विचार करते हुए बोले, "हो सकता है, उसने यह इसलिये कहा क्योंकि हम कोई रोटी साथ नहीं लाये।"

8वे क्या सोच रहे हैं, यीशु यह जानता था, सो वह बोला, "ओ अल्प विश्वासियों, तुम आपस में अपने पास रोटी, नहीं होने के बारे में क्यों सोच रहे हो? 9क्या तुम अब भी नहीं समझते या याद करते कि पाँच हज़ार

लोगों के लिए वे पाँच रोटियाँ और फिर कितनी टोकरियाँ
भर कर तुमने उठाई थी? 10और क्या तुम्हें याद नहीं
चार हज़ार के लिये वे सात रोटियाँ और फिर कितनी
टोकरियाँ भर कर तुमने उठाई थी? 11क्यों नहीं समझते
कि मैंने तुमसे रोटियों के बारे में नहीं कहा? मैंने तो
तुम्हें फ़रीसियों और सदूकियों के ख़मीर से बचने को
कहा है।"

12तब वे समझ गये कि रोटी के ख़मीर से नहीं
बल्कि उसका मतलब फरीसियों और सदूकियों की
शिक्षाओं से बचे रहने से है।

यीशु मसीह है

(मरकुस 8:27-30; लूका 9:18-21)

13जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया तो
उसने अपने शिष्यों से पूछा, "लोग क्या कहते हैं, कि मैं
मनुष्य का पुत्र* कौन हूँ?"
14वे बोले, "कुछ कहते हैं कि तू बपतिस्मा देने वाला
यूहन्ना है, और दूसरे कहते हैं कि तू एलिय्याह* है
और कुछ अन्य कहते हैं कि तू यिर्मयाह* या
भविष्यवक्ताओं में से कोई एक है।"
15यीशु ने उनसे कहा, "और तुम क्या कहते हो कि
मैं कौन हूँ?" 16शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू मसीह
है, साक्षात परमेश्वर का पुत्र।"
17उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "योना के पुत्र शमौन!
तू धन्य है क्योंकि तुझे यह बात किसी मनुष्य ने नहीं,
बल्कि स्वर्ग में स्थित मेरे परम पिता ने दर्शाई है। 18मैं
कहता हूँ कि तू पतरस है। और इसी चट्टान पर मैं
अपनी कलीसिया बनाऊँगा। मृत्यु की शक्ति* उस पर
प्रबल नहीं होंगी। 19मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दे
रहा हूँ। ताकि धरती पर जो कुछ तू बाँधे, वह परमेश्वर
के द्वारा स्वर्ग में बाँधा जाये और जो कुछ तू धरती पर
छोड़े, वह स्वर्ग में परमेश्वर के द्वारा छोड़ दिया जाये।"
20फिर उसने अपने शिष्यों को कड़ा आदेश दिया कि वे
किसी को यह न बतायें कि वह मसीह है।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी

(मरकुस 8:31-9:1; लूका 9:22-27)

21उस समय यीशु अपने शिष्यों को बताने लगा कि,
उसे यरुशलेम जाना चाहिये। जहाँ उसे यहूदी धर्मशास्त्रियों,
बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं और प्रमुख याजकों द्वारा यातनाएँ
पहुँचा कर मरवा दिया जायेगा। फिर तीसरे दिन वह मरे
हुओं में से जी उठेगा।
22तब पतरस उसे एक तरफ ले गया और उसकी
आलोचना करता हुआ उससे बोला, "हे प्रभु! परमेश्वर
तुझ पर दया करे। तेरे साथ ऐसा कभी न हो!"
23फिर यीशु उसकी तरफ मुड़ा और बोला, "पतरस,
मेरे रास्ते से हट जा। अरे शैतान! तू मेरे लिए एक
अड़चन है। क्योंकि तू परमेश्वर की तरह नहीं लोगों
की तरह सोचता है।"
24फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "यदि कोई मेरे
पीछे आना चाहता है, तो वह अपने आप को भुलाकर,
अपना क्रूस स्वयं उठाये और मेरे पीछे हो ले। 25जो
कोई अपना जीवन बचाना चाहता है, उसे वह खोना
होगा। किन्तु जो कोई मेरे लिये अपना जीवन खोयेगा,
वही उसे बचाएगा। 26यदि कोई अपना जीवन देकर
सारा संसार भी पा जाये तो उसे क्या लाभ? अपने जीवन
को फिर से पाने के लिए कोई भला क्या दे सकता है?
27मनुष्य का पुत्र दूतों सहित अपने परमपिता की महिमा
के साथ आने वाला है। जो हर किसी को उसके कर्मों
का फल देगा। 28मैं तुम से सत्य कहता हूँ यहाँ कुछ ऐसे
हैं जो तब तक नहीं मरेंगे जब तक वे मनुष्य के पुत्र को
उसके राज्य में आते न देखलें।"

तीन शिष्यों को मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु का दर्शन

(मरकुस 9:2-13; लूका 9:28-36)

17 छः दिन बाद यीशु, पतरस, याकूब, और उसके
भाई यूहन्ना को साथ लेकर एकान्त में ऊँचे
पहाड़ पर गया। 2वहाँ उनके सामने उसका रूप बदल
गया। उसका मुख सूरज के समान दमक उठा और
उसके वस्त्र ऐसे चमचमाने लगे जैसे प्रकाश। 3फिर
अचानक मूसा और एलिय्याह उनके सामने प्रकट हुए
और यीशु से बात करने लगे।
4यह देखकर पतरस यीशु से बोला, "प्रभु, अच्छा है
कि हम यहाँ हैं। यदि तू चाहे तो मैं यहाँ तीन मंडप बना
दूँ–एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह
के लिए।"
5पतरस अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकते
हुए बादल ने आकर उन्हें ढक लिया और बादल से
आकाशवाणी हुई कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं
बहुत प्रसन्न हूँ। इसकी सुनो!"
6जब शिष्यों ने यह सुना तो वे इतने सहम गये कि
धरती पर औंधे मुँह गिर पड़े। 7तब यीशु उनके पास
गया और उन्हें छूते हुए बोला, "डरो मत, खड़े होवो।"
8जब उन्होंने अपनी आँखें उठाई तो वहाँ बस यीशु को
ही पाया।

मनुष्य का पुत्र यानी यीशु। यीशु परमेश्वर का पुत्र था किन्तु उसके नाम से लगता है कि वह एक मनुष्य भी था। दानि. 7:13–14 में बताया गया है कि यह 'मसीह' का नाम है।

एलिय्याह एक भविष्यवक्ता था जो यीशु से सैकड़ों साल पहले हुआ था और लोगों को परमेश्वर के बारे में बताता था।

यिर्मयाह एक भविष्यवक्ता जो यीशु से सैकड़ों साल पहले लोगों को परमेश्वर के बारे में बताता था।

मृत्यु की शक्ति शाब्दिक 'मृत्यु के द्वार।'

9जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तो यीशु ने उन्हें आदेश
दिया कि "जो कुछ तुमने देखा है, तब तक किसी को
मत बताना जब तक मनुष्य के पुत्र को मरे हुओं में से
फिर जिला न दिया जाय।"
10फिर उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "यहूदी धर्मशास्त्री
फिर क्यों कहते हैं, एलिय्याह का पहले आना निश्चितहै?"
11उत्तर देते हुए उसने उनसे कहा, "एलिय्याह आरहा
है, वह हर वस्तु को व्यवस्थित कर देगा। 12किन्तु मैं
तुमसे कहता हूँ कि एलिय्याह तो अब तक आ चुका है।
पर लोगों ने उसे पहचाना नहीं। और उसके साथ जैसा
चाहा वैसा किया। उनके द्वारा मनुष्य के पुत्र को भी
वैसे ही सताया जाने वाला है।" 13तब उसके शिष्य समझे
कि उसने उनसे बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के बारे में
कहाथा।

रोगी लड़के का अच्छा किया जाना

(मरकुस 9:14-29; लूका 9:37-43)

14जब यीशु भीड़ में वापस आया तो एक व्यक्ति
उसके पास आया और उसे दंडवत प्रणाम करके बोला,
15"हे प्रभु, मेरे बेटे पर दया कर। उसे मिर्गी आती है।
वह बहुत तड़पता है। वह आग में या पानी में अक्सर
गिरता पड़ता रहता है। 16मैं उसे तेरे शिष्यों के पास
लाया, पर वे उसे अच्छा नहीं कर पाये।"
17उत्तर में यीशु ने कहा, "अरे भटके हुए अविश्वासी
लोगों! मैं कितने समय तुम्हारे साथ और रहूँगा? कितने
समय मैं यूँ ही तुम्हारी सहता रहूँगा? उसे यहाँ मेरे पास
लाओ।" 18फिर यीशु ने दुष्टात्मा को आदेश दिया और
वह उसमें से बाहर निकल आयी। और वह लड़का
तत्काल अच्छा हो गया।
19फिर उसके शिष्यों ने अकेले में यीशु के पास
जाकर पूछा, "हम इस दुष्टात्मा को बाहर क्यों नहीं
निकालपाये?"
20यीशु ने उन्हें बताया, "क्योंकि तुममें विश्वास की
कमी है। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, यदि तुममें राई के
बीज जितना भी विश्वास हो तो तुम इस पहाड़ से कह
सकते हो 'यहाँ से हट कर वहाँ चला जा' और वह चला
जायेगा। तुम्हारे लिये असम्भव कुछ भी नहीं होगा।"
21*

यीशु का अपनी मृत्यु के बारे में बताना

(मरकुस 9:30-32; लूका 9:43-45)

22जब यीशु के शिष्य आए और उसके साथ गलील
में मिले तो यीशु ने उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों
के द्वारा ही पकड़वाया जाने वाला है, 23जो उसे मार
डालेंगे। किन्तु तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।" इस पर
यीशु के शिष्य बहुत व्याकुल हुए।

कर का भुगतान

24जब यीशु और उसके शिष्य कफ़रनहूम में आये
तो मंदिर का दो दरम कर वसूल करने वाले पतरस के
पास आये और बोले, "क्या तेरा गुरु दो दरम का मंदिर
का कर नहीं देता?" 25पतरस ने उत्तर दिया, "हाँ, वह
देता है।" और घर में चला आया। पतरस से बोलने के
पहले ही यीशु बोल पड़ा, उसने कहा, "शमौन, तेरा क्या
विचार है? धरती के राजा किससे चुंगी और कर लेते
हैं? स्वयं अपने बच्चों से या दूसरों के बच्चों से?"
26पतरस ने उत्तर दिया, "दूसरे के बच्चों से।" तब
यीशु ने उससे कहा, "यानी उसके अपने बच्चों को छूट
रहती है। 27पर हम उन लोगों को नाराज़ न करें
इसलिये झील पर जा और अपना काँटा फेंक और फिर
जो पहली मछली पकड़ में आये उसका मुँह खोलना
तुझे चार दरम का सिक्का मिलेगा। उसे लेकर मेरे
और अपने लिए उन्हें दे देना।"

सबसे बड़ा कौन

(मरकुस 9:33-37; लूका 9:46-48)

18 तब यीशु के शिष्यों ने उसके पास आकर पूछा,
"स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कौन है?"
2तब यीशु ने एक बच्चे को अपने पास बुलाया और
उसे उनके सामने खड़ा करके कहा, 3"मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ जब तक कि तुम लोग बदलोगे नहीं और
बच्चों के समान नहीं बन जाओगे, स्वर्ग के राज्य में
प्रवेश नहीं कर सकोगे। 4इसलिये अपने आपको जो
कोई इस बच्चे के समान नम्र बनाता है, वही स्वर्ग के
राज्य में सबसे बड़ा है।" 5"और जो कोई ऐसे बालक
जैसे व्यक्ति को मेरे नाम में स्वीकार करता है वह मुझे
स्वीकार करता है। 6किन्तु जो मुझमें विश्वास करने
वाले मेरे किसी ऐसे नम्र अनुयायी के रास्ते की
बाधा बनता है, अच्छा हो कि उसके गले में एक
चक्की का पाट लटका कर उसे समुद्र की गहराई में
डुबो दिया जाये।
7"बाधाओं के कारण मुझे संसार के लोगों के लिए
खेद है पर, बाधाएँ तो आयेंगी ही किन्तु खेद तो मुझे उस
पर है जिसके द्वारा बाधाएँ आती है। 8इसलिए यदि तेरा
हाथ या तेरा पैर तेरे लिए बाधा बने तो उसे काट फेंक,
क्योंकि स्वर्ग में बिना हाथ या बिना पैर के अनन्त
जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए अधिक अच्छा है;
बजाय इसके कि दोनों हाथों और दोनों पैरों समेत तुझे
नरक की कभी न बुझने वाली आग में डाल दिया जाये।
9"यदि तेरी आँख तेरे लिये बाधा बने तो उसे बाहर
निकाल कर फेंक दे, क्योंकि स्वर्ग में काना होकर

पद 21 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 21 जोड़ा गया है। 'ऐसी दुष्टात्मा केवल प्रार्थना या उपवास करने से निकलती है'

अनन्त जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये अधिक अच्छा
है; बजाय इसके कि दोनों आँखों समेत तुझे नरक की
आग में डाल दिया जाए।

खोई भेड़ की दृष्टान्त-कथा
(लूका 15:3-7)

10"सो देखो, मेरे इन मासूम अनुयायिओं में से किसी
को भी तुच्छ मत समझना। मैं तुम्हें बताता हूँ कि उनके
रक्षक स्वर्गदूतों की पहुँच स्वर्ग में मेरे परम पिता के
पास लगातार रहती है।11*

12"बता तू क्या सोचता है? यदि किसी के पास सौ भेड़ें
हों और उनमें से एक भटक जाये तो क्या वह दूसरी
निन्यानवें भेड़ों को पहाड़ी पर ही छोड़ कर उस एक
खोई भेड़ को खोजने नहीं जाएगा? 13वह निश्चय ही
जाएगा और जब उसे वह मिल जायेगी, मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ तो वह दूसरी निन्यानवें की बजाय-जो खोई
नहीं थीं, इसे पाकर अधिक प्रसन्न होगा। 14इसी तरह
स्वर्ग में स्थित तुम्हारा पिता क्या नहीं चाहता कि मेरे
इन अबोध अनुयायिओं में से कोई एक भी न भटके।

जब कोई तेरा बुरा करे
(लूका 17:3)

15"यदि तेरा बन्धु तेरे साथ कोई बुरा व्यवहार करे
तो अकेले में जाकर आपस में ही उसे उसका दोष बता।
यदि वह तेरी सुन ले, तो तूने अपने बंधु को फिर जीत
लिया। 16पर यदि वह तेरी न सुने तो दो एक को अपने
साथ ले जा ताकि हर बात की दो तीन गवाही हो सकें।
17यदि वह उन की भी न सुने तो कलीसिया को बता दे।
और यदि वह कलीसिया की भी न माने, तो फिर तू
उस से ऐसे व्यवहार कर जैसे वह विधर्मी हो या कर
वसूलने वाला हो।

18"मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जो कुछ तुम धरती पर
बाँधोगे स्वर्ग में प्रभु के द्वारा बाँधा जायेगा और जिस
किसी को तुम धरती पर छोड़ोगे स्वर्ग में परमेश्वर के
द्वारा छोड़ दिया जायेगा।

19"मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि इस धरती पर यदि
तुम में से कोई दो सहमत हो कर स्वर्ग में स्थित मेरे
पिता से कुछ माँगेगे तो वह तुम्हारे लिए उसे पूरा करेगा
20क्योंकि जहाँ मेरे नाम पर दो या तीन लोग मेरे अनुयायी
के रूप में इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके साथ हूँ।"

क्षमा न करने वाले दास की दृष्टान्त-कथा

21फिर पतरस यीशु के पास गया और बोला, "प्रभु,
मुझे अपने भाई को कितनी बार अपने प्रति अपराध
करने पर भी क्षमा कर देना चाहिए? यदि वह सात बार
अपराध करे तो भी?"

22यीशु ने कहा, "न केवल सात बार, बल्कि मैं तुझे
बताता हूँ तुझे उसे सात बार के सतत्तर गुना तक क्षमा
करने जाना चाहिये।

23"सो स्वर्ग के राज्य की तुलना उस राजा से की जा
सकती है जिसने अपने दासों से हिसाब चुकता करने
की सोची थी। 24जब उसने हिसाब लेना शुरू किया तो
उसके सामने एक ऐसे व्यक्ति को लाया गया जिस पर
दसियों लाख रुपया निकलता था। 25पर उसके पास
चुकाने का कोई साधन नहीं था। उसके स्वामी ने
आज्ञा दी कि उस दास को, उसकी घर वाली, उसके
बाल बच्चों और जो कुछ उसका माल असबाब है, सब
समेत बेच कर कर्ज़ चुका दिया जाये।

26"तब उसका दास उसके पैरों में गिर कर गिड़गिड़ाने
लगा, 'धीरज धरो, मैं सब कुछ चुका दूँगा।' 27इस पर
स्वामी को उस दास पर दया आ गयी। उसने उसका
कर्ज़ा माफ करके उसे छोड़ दिया।

28"फिर जब वह दास वहाँ से जा रहा था, तो उसे
उसका एक साथी दास मिला जिसे उसे कुछ रुपये देने
थे। उसने उसका गिरहबान पकड़ लिया और उसका
गला घोटते हुए बोला, 'जो तुझे मेरा देना है, लौटा दे!'

29"इस पर उसका साथी दास उसके पैरों में गिर पड़ा
और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, 'धीरज धर, मैं चुका
दूँगा।'

30"पर उसने मना कर दिया। इतना ही नहीं उसने
उसे तब तक के लिये, जब तक वह उसका कर्ज न
चुका दे, जेल भी भिजवा दिया। 31दूसरे दास इस सारी
घटना को देखकर बहुत दुखी हुए। और उन्होंने जो
कुछ घटा था, सब अपने स्वामी को जाकर बता दिया।

32"तब उसके स्वामी ने उसे बुलाया और कहा, 'अरे
नीच दास, मैंने तेरा वह सारा कर्ज़ माफ कर दिया
क्योंकि तूने मुझ से दया की भीख माँगी थी। 33क्या तुझे
भी अपने साथी दास पर दया नहीं दिखानी चाहिये थी
जैसे मैंने तुझ पर दया की थी?' 34इसलिए उसका
स्वामी बहुत बिगड़ा और उसे तब तक दण्ड भुगतने के
लिए सौंप दिया जब तक समूचा कर्ज़ चुकता न हो जाये।

35"सो जब तक तुम अपने भाई-बंदों को अपने मन
से क्षमा न कर दो मेरा स्वर्गीय परम पिता भी तुम्हारे
साथ वैसा ही व्यवहार करेगा।"

तलाक
(मरकुस 10:1-12)

19 ये बातें कहने के बाद वह गलील से लौट कर
यहूदिया के क्षेत्र में यर्दन नदी के पार चला
गया। 2एक बड़ी भीड़ वहाँ उसके पीछे हो ली, जिसे
उसने चंगा किया।

पद 11 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 11 जोड़ा गया है। "मनुष्य का पुत्र भटके हुओं के उद्धार के लिये आया।"

3उसे परखने के जतन में कुछ फरीसी उसके पास
पहुँचे और बोले, "क्या यह उचित है कि कोई अपनी
पत्नी को किसी भी कारण से तलाक दे सकता है?'
4उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, "क्या तुमने शास्त्र में
नहीं पढ़ा कि जगत को रचने वाले ने प्रारम्भ में, 'उन्हें
एक स्त्री और एक पुरुष के रूप में रचा था?'* 5और
कहा था 'इसी कारण अपने माता –पिता को छोड़ कर
पुरुष अपनी पत्नी के साथ दो होते हुए भी एक शरीर
होकर रहेगा।'*
6"सो वे दो नहीं रहते बल्कि एक रूप हो जाते हैं।
इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे किसी भी मनुष्य
को अलग नही करना चाहिये।" 7वे बोले, "फिर मूसा ने
यह क्यों निर्धारित किया है कि कोई पुरुष अपनी पत्नी
को तलाक दे सकता है। शर्त यह है कि वह उसे तलाक
नामा लिख कर दे।"
8यीशु ने उनसे कहा, "मूसा ने यह विधान तुम लोगों
के मन की जड़ता के कारण दिया था। किन्तु प्रारम्भ में
ऐसी रीति नहीं थी। 9तो मैं तुमसे कहता हूँ कि जो
व्यभिचार को छोड़कर अपनी पत्नी को किसी और
कारण से त्यागता है और किसी दूसरी स्त्री को ब्याहता
है तो वह व्यभिचार करता है।"*
10इस पर उसके शिष्यों ने उससे कहा, "यदि एक
स्त्री और एक पुरुष के बीच ऐसी स्थिति है तो किसी
को ब्याह ही नहीं करना चाहिये।"
11फिर यीशु ने उनसे कहा, "हर कोई तो इस उपदेश
को ग्रहण नहीं कर सकता। इसे बस वे ही ग्रहण कर
सकते हैं जिनको इसकी क्षमता प्रदान की गयी है।
12कुछ ऐसे हैं जो अपनी माँ के गर्भ से ही नपुंसक पैदा
हुए हैं। और कुछ ऐसे हैं जो लोगों द्वारा नपुंसक बना
दिये गये हैं। और अंत में कुछ ऐसे हैं जिन्होंने स्वर्ग के
राज्य के कारण विवाह नहीं करने का निश्चय किया
है। जो इस उपदेश को ले सकता है, ले।"

यीशु की आशीष : बच्चों को

(मरकुस 10:13-16; लूका 18:15-17)

13फिर लोग कुछ बालकों को यीशु के पास लाये कि
वह उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीर्वाद दे
और उनके लिए प्रार्थना करे। किन्तु उसके शिष्यों ने
उन्हें डाँटा। 14उस पर यीशु ने कहा, "बच्चों को रहने
दो, उन्हें मत रोको, मेरे पास आने दो क्योंकि स्वर्ग का
राज्य ऐसों का ही है।"
15फिर उसने बच्चों के सिर पर अपना हाथ रखा
और वहाँ से चल दिया।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न

(मरकुस 10:17-31; लूका 18:18-30)

16वहीं एक व्यक्ति था। वह यीशु के पास आया और
बोला, "गुरु अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या अच्छा
काम करना चाहिये?"
17यीशु ने उससे कहा, "अच्छा क्या है, इसके बारे में
तू मुझसे क्यों पूछ रहा है? क्योंकि अच्छा तो केवल
एक ही है! फिर भी यदि तू अनन्त जीवन में प्रवेश
करना चाहता है, तो तू आदेशों का पालन कर।"
18उसने यीशु से पूछा, "कौन से आदेश?" तब यीशु
बोला, "हत्या मत कर। व्यभिचार मत कर। चोरी मत
कर। झूठी गवाही मत दे।
19"अपने पिता और अपनी माता का आदर कर'*
और 'जैसे तू अपने आप को प्यार करता है, वैसे ही
अपने पड़ोसी से भी प्यार कर।'" 20युवक ने यीशु से
पूछा, "मैंने इन सब बातों का पालन किया है। अब
मुझमें किस बात की कमी है?"
21यीशु ने उससे कहा, "यदि तू संपूर्ण बनना चाहता
तो जा और जो कुछ तेरे पास है, उसे बेचकर धन
गरीबों में बाँट दे ताकि स्वर्ग में तुझे धन मिल सके।
फिर आ और मेरे पीछे हो ले!"
22किन्तु जब उस नौजवान ने यह सुना तो वह दुखी
होकर चला गया क्योंकि वह बहुत धनवान था।
23यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ कि एक धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश
कर पाना कठिन है। 24हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ कि
किसी धनवान व्यक्ति के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने
से एक ऊँट का सूई के नकुए से निकल जाना आसान
है।"
25जब उसके शिष्यों ने यह सुना तो अचरज से भरकर
पूछा, "फिर किसका उद्धार हो सकता है?"
26यीशु ने उन्हें देखते हुए कहा, "मनुष्यों के लिए यह
असम्भव है, किन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भवहै।"
27उत्तर में तब पतरस ने उससे कहा, "देख, हम सब
कुछ त्याग कर तेरे पीछे हो लिये हैं। सो हमें क्या
मिलेगा?"
28यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम लोगों से सत्य कहता
हूँ कि नये युग में जब मनुष्य का पुत्र अपने प्रतापी
सिंहासन पर विराजेगा तो तुम भी, जो मेरे पीछे हो लिये
हो, बारह सिंहासनों पर बैठ कर परमेश्वर के लोगों का
न्याय करोगे। 29और मेरे लिए जिसने भी घर–बार या
भाइयों या बहनों या पिता या माता या बच्चों या खेतों को

"रचने वाले ... रचा था" देखें उत्पत्ति 1:27; 5:2

"इसी कारण ... कर रहेगा" देखें उत्पत्ति 2:24

पद 9 कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है जो इस प्रकार है: "और जो छोड़ी हुई स्त्री को ब्याहता है वह व्यभिचार करता है।"

"अपने पिता ... आदर कर" निर्गमन 20:12–16

त्याग दिया है, वह सौ गुणा अधिक पायेगा और अनन्त जीवन का भी अधिकारी बनेगा।

30किन्तु बहुत से जो अब पहले हैं, अन्तिम हो जायेंगे और जो अन्तिम हैं, पहले हो जायेंगे।"

मज़दूरों की दृष्टांत-कथा

20 "स्वर्ग का राज्य एक ज़मींदार के समान है जो सुबह सवेरे अपने अंगूर के बगीचों के लिये मज़दूर लाने को निकला। 2उसने चाँदी के एक रुपए पर मज़दूर रख कर उन्हें अपने अंगूर के बगीचे में काम करने भेज दिया।

3"नौ बजे के आसपास ज़मींदार फिर घर से निकला और उसने देखा कि कुछ लोग बाज़ार में इधर उधर यूँ ही बेकार खड़े हैं। 4तब उसने उनसे कहा, 'तुम भी मेरे अंगूर के बगीचे में जाओ, मैं तुम्हें जो कुछ उचित होगा, दूँगा।' 5सो वे भी बगीचे में काम करने चले गये।

"फिर कोई बारह बजे और दुबारा तीन बजे के आसपास, उसने वैसा ही किया। 6कोई पाँच बजे वह फिर अपने घर से गया और कुछ लोगों को बाज़ार में इधर उधर खड़े देखा। उसने उनसे पूछा, 'तुम यहाँ दिन भर बेकार ही क्यों खड़े रहते हो?'

7"उन्होंने उससे कहा, 'क्योंकि हमें किसी ने मजूरी पर नहीं रखा।' "उसने उनसे कहा, 'तुम भी मेरे अंगूर के बगीचे में चले जाओ।'

8"जब साँझ हुई तो अंगूर के बगीचे के मालिक ने अपने प्रधान कर्मचारी को कहा, 'मज़दूरों को बुलाकर अंतिम मज़दूर से शुरू करके जो पहले लगाये गये थे उन तक सब की मज़दूरी चुका दो।'

9"सो वे मज़दूर जो पाँच बजे लगाये थे, आये और उनमें से हर किसी को चाँदी का एक रुपया मिला। 10फिर जो पहले लगाये गये थे, वे आये। उन्होंने सोचा उन्हें कुछ अधिक मिलेगा पर उनमें से भी हर एक को एक ही चाँदी का रुपया मिला। 11रुपया तो उन्होंने ले लिया पर ज़मींदार से शिकायत करते हुए 12उन्होंने कहा, 'जो बाद में लगे थे, उन्होंने बस एक घंटा काम किया और तूने हमें भी उतना ही दिया जितना उन्हें। जबकि हमने सारे दिन चमचमाती धूप में मेहनत की।'

13"उत्तर में उनमें से किसी एक से जमींदार ने कहा, 'दोस्त, मैंने तेरे साथ कोई अन्याय नहीं किया है। क्या हमने तय नहीं किया था कि मैं तुम्हें चाँदी का एक रुपया दूँगा? 14जो तेरा बनता है, ले और चला जा। मैं सबसे बाद में रखे गये इस को भी उतनी ही मज़दूरी देना चाहता हूँ जितनी तुझे दे रहा हूँ। 15क्या मैं अपने धन का जो चाहूँ वह करने का अधिकार नहीं रखता? मैं अच्छा हूँ क्या तू इससे जलता है?'

16इस प्रकार अंतिम पहले हो जायेंगे और पहले अंतिम हो जायेंगे।"

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु का संकेत

(मरकुस 10:32-34; लूका 18:31-34)

17जब यीशु अपने बारह शिष्यों के साथ यरुशलेम जा रहा था तो वह उन्हें एक तरफ़ ले गया और चलते चलते उनसे बोला, 18"सुनो, हम यरुशलेम पहुँचने को हैं। मनुष्य का पुत्र वहाँ प्रमुख याजकों और यहूदी धर्म शास्त्रियों के हाथों सौंप दिया जायेगा। वे उसे मृत्यु दण्ड के योग्य ठहरायेंगे। 19फिर उसका उपहास करवाने और कोड़े लगवाने को उसे ग़ैर यहूदियों को सौंप देंगे। फिर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जायेगा किन्तु तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।"

एक माँ का अपने बच्चों के लिए आग्रह

(मरकुस 10:35-45)

20फिर जब्दी के बेटों की माँ अपने बेटों समेत यीशु के पास पहुँची और उसने झुक कर प्रार्थना करते हुए उससे कुछ माँगा।

21यीशु ने उससे पूछा, "तू क्या चाहती है?"

वह बोली, "मुझे वचन दे कि मेरे ये दोनों बेटे तेरे राज्य में एक तेरे दाहिनी ओर और दूसरा तेरे बाई ओर बैठे।"

22यीशु ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जानते कि तुम क्या माँग रहे हो। क्या तुम यातनाओं का वह प्याला पी सकते हो, जिसे मैं पीने वाला हूँ?"

उन्होंने उससे कहा, "हाँ, हम पी सकते हैं!"

23यीशु उनसे बोला, "निश्चय ही तुम वह प्याला पीयोगे। किन्तु मेरे दाएँ और बायें बैठने का अधिकार देने वाला मैं नहीं हूँ। यहाँ बैठने का अधिकार तो उनका है, जिनके लिए यह मेरे पिता द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है।"

24जब बाकी दस शिष्यों ने यह सुना तो वे उन दोनों भाइयों पर बहुत बिगड़े। 25तब यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, "तुम जानते हो कि गैर यहूदी राजा, लोगों पर अपनी शक्ति दिखाना चाहते हैं और उनके महत्त्वपूर्ण नेता, लोगों पर अपना अधिकार जताना चाहते हैं। 26किन्तु तुम्हारे बीच ऐसा नहीं होना चाहिये। बल्कि तुममें जो बड़ा बनना चाहे, तुम्हारा सेवक बने। 27और तुममें से जो कोई पहला बनना चाहे, उसे तुम्हारा दास बनना होगा। 28तुम्हें मनुष्य के पुत्र जैसा ही होना चाहिये जो सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने और बहुतों के छुटकारे के लिये अपने प्राणों की फिरौती देने आया है।"

अंधों को आँखें

(मरकुस 10:46-52; लूका 18:35-43)

29जब वे यरीहो नगर से जा रहे थे एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे हो ली। 30वहाँ सड़क किनारे दो अंधे बैठे

थे। जब उन्होंने सुना कि यीशु वहाँ से जा रहा है, वे चिल्लाये, "प्रभु! दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर!"

31इस पर भीड़ ने उन्हें धमकाते हुए चुप रहने को कहा। पर वे और अधिक चिल्लाये, "प्रभु! दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर!"

32फिर यीशु रुका और उनसे बोला। उसने कहा, "तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे लिए क्या करुँ?"

33उन्होंने उससे कहा, "प्रभु, हम चाहते हैं कि देख सकें।"

34यीशु को उन पर दया आयी। उसने उनकी आँखों को छुआ, और तुरंत ही वे फिर देखने लगे। वे उसके पीछे हो लिए।

यीशु का यरुशलेम में भव्य प्रवेश

(मरकुस 11:1-11; लूका 19:28-38; यूहन्ना 12:12-19)

21 यीशु और उसके अनुयायी जब यरुशलेम के पास जैतून पर्वत के निकट बैतफगे पहुँचे तो यीशु ने अपने दो शिष्यों को 2यह आदेश देकर भेजा कि अपने ठीक सामने के गाँव में जाओ और वहाँ जाते ही तुम्हें एक गधही बँधी मिलेगी। उसके साथ उसका बछेरा भी होगा। उन्हें बाँध कर मेरे पास ले आओ। 3यदि कोई तुमसे कुछ कहे तो उससे कहना 'प्रभु को इनकी आवश्यकता है। वह जल्दी ही इन्हें लौटा देगा।'"

4ऐसा इसलिये हुआ कि भविष्यवक्ता का यह वचन पूरा हो:

5"सिओन की नगरी से कहो, 'देख तेरा राजा तेरे पास आ रहा है। वह विनयपूर्ण है, वह गधही पर सवार है, हाँ गधही के बछेरे पर जो एक श्रमिक पशु का बछेरा है।'"

जकर्याह 9:9

6सो उसके शिष्य चले गये और वैसा ही किया जैसा उन्हें यीशु ने बताया था। 7वे गर्धबी और उसके बछेरे को ले आये। और उन पर अपने वस्त्र डाल दिये क्योंकि यीशु को बैठना था। 8भीड़ में बहुत से लोगों ने अपने वस्त्र राह में बिछा दिये और दूसरे लोग पेड़ों से टहनियाँ काट लाये और उन्हें मार्ग में बिछा दिया। 9जो लोग उनके आगे चल रहे थे और जो लोग उनके पीछे चल रहे थे सब पुकार कर कह रहे थे:

"होशन्ना! धन्य है दाऊद का वह पुत्र! जो आ रहा है प्रभु के नाम पर धन्य है प्रभु जो स्वर्ग में विराजा!"

भजन संहिता 118:26

10सो जब उसने यरूशलेम में प्रवेश किया तो समूचे नगर में हलचल मच गयी। लोग पूछने लगे, "यह कौन है?"

11लोग ही जवाब दे रहे थे, "यह गलील के नासरत का नबी यीशु है।"

यीशु मंदिर में

(मरकुस 11:15-19; लूका 19:45-48; यूहन्ना 2:13-22)

12फिर यीशु मंदिर के अहाते में आया और उसने मन्दिर के अहाते में जो लोग ले-बेच कर रहे थे, उन सब को बाहर खदेड़ दिया। उसने पैसों की लेन-देन करने वालों की चौकियाँ उलट दीं और कबूतर बेचने वालों के तख्त पलट दिये। 13वह उनसे बोला, "शास्त्र कहते हैं, 'मेरा घर प्रार्थना-गृह कहलायेगा।* किन्तु तुम इसे डाकुओं का अड्डा बना रहे हो।'"

14मंदिर में कुछ अंधे, लँगड़े लूले उसके पास आये। जिन्हें उसने चंगा कर दिया। 15जब प्रमुख याजकों और यहूदी धर्म शास्त्रियों ने उन अद्भुत कामों को देखा जो उसने किये थे और मंदिर में बच्चों को ऊँचे स्वर में कहते सुना: "होशन्ना। दाऊद का वह पुत्र धन्य है।"

16तो वे बहुत क्रोधित हुए। और उससे पूछा, "तू सुनता है ये क्या कह रहे हैं?"

यीशु ने उनसे कहा, "हाँ सुनता हूँ। क्या धर्मशास्त्र में तुम लोगों ने नहीं पढ़ा-'तूने बालकों और दूध पीते बच्चों तक से स्तुति करवाई है।'"*

17फिर उन्हें वहीं छोड़ कर वह यरुशलेम नगर से बाहर बैतनिय्याह को चला गया। जहाँ उसने रात बिताई।

विश्वास की शक्ति

(मरकुस 11:12-14, 20-24)

18अगले दिन अलख सुबह जब वह नगर को वापस लौट रहा था तो उसे भूख लगी। 19राह किनारे उसने अंजीर का एक पेड़ देखा सो वह उसके पास गया, पर उसे उस पर पत्तों को छोड़ और कुछ नहीं मिला। सो उसने पेड़ से कहा, "तुझ पर आगे कभी फल न लगे!" और वह अंजीर का पेड़ तुरंत सूख गया।

20जब शिष्यों ने यह देखा तो अचरज के साथ पूछा, "यह अंजीर का पेड़ इतनी जल्दी कैसे सूख गया?"

21यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ। यदि तुम में विश्वास है और तुम संदेह नहीं करते तो तुम न केवल वह कर सकते हो जो मैंने अंजीर के पेड़ का किया। बल्कि यदि तुम इस पहाड़ से कहो, 'उठ और अपने आप को सागर में डुबो दे' तो वही हो जायेगा। 22और प्रार्थना करते तुम जो कुछ माँगो, यदि तुम्हें विश्वास है तो तुम पाओगे।"

यहूदी नेताओं का यीशु के अधिकार पर संदेह

(मरकुस 11:27-33; लूका 20:1-8)

23जब यीशु मंदिर में जाकर उपदेश दे रहा था तो प्रमुख याजकों और यहूदी बुज़ुर्गों ने पास जाकर उससे

"मेरा घर ... कहलायेगा" यिर्म. 7:11

"तूने बालकों ... करवाई है" भजन. 8:3

पूछा, "ऐसी बातें तू किस अधिकार से करता है? और
यह अधिकार तुझे किसने दिया?"
24उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे एक प्रश्न
पूछता हूँ, यदि उसका उत्तर तुम मुझे दे दो तो मैं तुम्हें
बता दूँगा कि मैं ये बातें किस अधिकार से करता हूँ।
25बताओ यूहन्ना को बपतिस्मा कहाँ से मिला? परमेश्वर
से या मनुष्य से? वे आपस में विचार करते हुए कहने
लगे, "यदि हम कहते हैं 'परमेश्वर से' तो यह हमसे
पूछेगा 'फिर तुम उस पर विश्वास क्यों नहीं करते?'
26किन्तु यदि हम कहते हैं 'मनुष्य से' तो हमें लोगों का
डर है क्योंकि वे यूहन्ना को एक नबी मानते हैं।"
27सो उत्तर में उन्होंने यीशु से कहा, "हमें नहीं पता।"
इस पर यीशु उनसे बोला, "अच्छा तो फिर मैं भी
तुम्हें नहीं बताता कि ये बातें मैं किस अधिकार से
करता हूँ!"

यहूदियों के लिए एक दृष्टांत-कथा

28"अच्छा बताओ तुम लोग इसके बारे में क्या सोचते
हो? एक व्यक्ति के दो पुत्र थे। वह बड़े के पास गया
और बोला, 'पुत्र आज मेरे अंगूरों के बगीचे में जा और
काम कर।'
29"किन्तु पुत्र ने उत्तर दिया, 'मेरी इच्छा नहीं है' पर
बाद में उसका मन बदल गया और वह चला गया।
30"फिर वह पिता दूसरे बेटे के पास गया और उससे
भी वैसे ही कहा। उत्तर में बेटे ने कहा, 'जी हाँ', मगर
वह गया नहीं।
31"बताओ इन दोनों में से जो पिता चाहता था, किसने
किया?" उन्होंने कहा, "बड़े ने।"
यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कर
वसूलने वाले और वेश्याएँ परमेश्वर के राज्य में तुमसे
पहले जायेंगे। 32यह मैं इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि
बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना तुम्हें जीवन का सही रास्ता
दिखाने आया और तुमने उसमें विश्वास नहीं किया।
किन्तु कर वसूलने वालों और वेश्याओं ने उसमें विश्वास
किया। तुमने जब यह देखा तो भी बाद में न मन फिराया
और न ही उस पर विश्वास किया।"

परमेश्वर का अपने पुत्र को भेजना

(मरकुस 12:1-12; लूका 20:9-19)

33"एक और दृष्टान्त सुनो: एक ज़मींदार था। उसने
अंगूरों का एक बगीचा लगाया और उसके चारों ओर
बाड़ लगा दी। फिर अंगूरों का रस निकालने का गरठ
लगाने को एक गढ़ा खोदा और रखवाली के लिए एक
मीनार बनायी। फिर उसे बटाई पर देकर वह यात्रा पर
चला गया। 34जब अंगूर उतारने का समय आया तो
बगीचे के मालिक ने किसानों के पास अपने दास भेजे
ताकि वे अपने हिस्से के अंगूर ले आयें।
35"किन्तु किसानों ने उसके दासों को पकड़ लिया।
किसी की पिटाई की, किसी पर पत्थर फेंके और
किसी को तो मार ही डाला। 36एक बार फिर उसने
पहले से और अधिक दास भेजे। उन किसानों ने उनके
साथ भी वैसा ही बर्ताव किया। 37बाद में उसने उनके
पास अपनेबेटे को भेजा। उसने कहा, 'वे मेरे बेटे का तो
मान रखेंगे ही।'
38"किन्तु उन किसानों ने जब उसके बेटे को देखा
तो वे आपस में कहने लगे, 'यह तो उसका उत्तराधिकारी
है, आओ इसे मार डालें और उसका उत्तराधिकार
हथिया लें।' 39सो उन्होंने उसे पकड़ कर बगीचे के
बाहर धकेल दिया और मार डाला।
40"तुम क्या सोचते हो जब वहाँ अंगूरों के बगीचे का
मालिक आयेगा तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?"
41उन्होंने उससे कहा, "क्योंकि वे निर्दय थे इसलिए
वह उन्हें बेरहमी से मार डालेगा और अंगूरों के बगीचे
को दूसरे किसानों को बटाई पर दे देगा जो फसल आने
पर उसे उसका हिस्सा देंगे।"
42यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुमने शास्त्र का यह
वचन नहीं पढ़ा:
'जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने बेकार समझा,
वही कोने का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पत्थर बन गया?'
'ऐसा प्रभु के द्वारा किया गया जो हमारी दृष्टि में अद्भुत
है।' *भजन संहिता 118:22–23*

43"इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ परमेश्वर का राज्य
तुमसे छीन लिया जायेगा और वह उन लोगों को दे दिया
जायेगा जो उसके राज्य के अनुसार बर्ताव करेंगे। 44जो
इस चट्टान पर गिरेगा, टुकड़े टुकड़े हो जायेगा और
यदि यह चट्टान किसी पर गिरेगी तो उसे रौंद डालेगी।"
45जब प्रमुख याजकों और फ़रीसियों ने यीशु की
दृष्टांत-कथाएँ सुनीं तो वे ताड़ गये कि वह उन्हीं के
बारे में कह रहा था। 46सो उन्होंने उसे पकड़ने का
जतन किया किन्तु वे लोगों से डरते थे क्योंकि लोग
यीशु को नबी मानते थे।

विवाह भोज पर लोगों को राजा के बुलावे की दृष्टान्त-कथा

(लूका 14:15-24)

22 एक बार फिर यीशु उनसे दृष्टान्त कथाएँ
कहने लगा। वह बोला, 2"स्वर्ग का राज्य उस
राजा के जैसा है जिसने अपने बेटे के ब्याह पर दावत
दी। 3राजा ने अपने दासों को भेजा कि वे उन लोगों को
बुला लायें जिन्हें विवाह भोज पर न्योता दिया गया है।
किन्तु वे लोग नहीं आये।
4"उसने अपने सेवकों को फिर भेजा, उसने कहा
कि जिन लोगों को विवाह-भोज पर बुलाया गया है

उनसे कहो, 'देखो मेरी दावत तैयार है। मेरे साँड़ों और मोटे ताजे पशुओं को काटा जा चुका है। सब कुछ तैयार है। ब्याह की दावत में आ जाओ।'

5"पर लोगों ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और वे चले गये। कोई अपने खेतों में काम करने चला गया तो कोई अपने काम धन्धे पर। 6और कुछ लोगों ने तो राजा के सेवकों को पकड़ कर उनके साथ मार–पीट की और उन्हें मार डाला। 7सो राजा ने क्रोधित होकर अपने सैनिक भेजे। उन्होंने उन हत्यारों को मौत के घाट उतार दिया और उनके नगर में आग लगा दी।

8"फिर राजा ने सेवकों से कहा, 'विवाह भोज तैयार है किन्तु जिन्हें बुलाया गया था, वे अयोग्य सिद्ध हुए। 9इसलिये गली के नुक्कड़ों पर जाओ और तुम जिसे भी पाओ ब्याह की दावत पर बुला लाओ।' 10फिर सेवक गलियों में गये और जो भी भले बुरे लोग उन्हें मिले वे उन्हें बुला लाये। और शादी का महल महमानों से भर गया।

11"किन्तु जब मेहमानों को देखने राजा आया तो वहाँ उसने एक ऐसा व्यक्ति देखा जिसने विवाह के वस्त्र नहीं पहने थे। 12राजा ने उससे कहा, 'हे मित्र, विवाह के वस्त्र पहने बिना तू यहाँ भीतर कैसे आ गया?' पर वह व्यक्ति चुप रहा। 13इस पर राजा ने अपने सेवकों से कहा, 'इसके हाथ–पाँव बाँध कर बाहर अन्धेरे में फेंक दो। जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते होंगे।' 14क्योंकि बुलाये तो बहुत गये हैं पर चुने हुए थोड़े से हैं।"

यहूदी नेताओं की चाल

(मरकुस 12:13-17; लूका 20:20-26)

15फिर फरीसियों ने जाकर एक सभा बुलाई, जिससे वे इस बात का गणित कर सकें कि यीशु को उसकी अपनी ही कही किसी बात में कैसे फँसाया जा सकता है। 16उन्होंने अपने चेलों को हिरोदियों के साथ उसके पास भेजा। उन लोगों ने यीशु से कहा, "गुरु, हम जानते हैं कि तू सच्चा है तू सचमुच परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देता है। और तू, कोई क्या सोचता है, तू इसकी चिंता नहीं करता क्योंकि तू किसी व्यक्ति की हैसियत पर नहीं जाता। 17सो हमें बता तेरा क्या विचार है कि सम्राट कैसर को कर चुकाना उचित है कि नहीं?"

18यीशु उनके बुरे इरादे को ताड़ गया, सो वह बोला, "ओ कपटियो! तुम मुझे क्यों परखना चाहते हो? 19मुझे कोई दीनारी दिखाओ जिससे तुम कर चुकाते हो।" सो वे उसके पास दीनारी ले आये। 20तब उसने उनसे कहा, "इस पर किसकी मूरत और लेख खुदे हैं?"

21उन्हों ने उससे कहा, "महाराजा कैसर के।"

तब उसने उनसे कहा, "अच्छा तो फिर जो महाराजा कैसर का है, उसे महाराजा कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है, उसे परमेश्वर को।"

22यह सुनकर वे अचरज से भर गये और उसे छोड़ कर चले गये।

सदूकियों की चाल

(मरकुस 12:18-27; लूका 20:27-40)

23उसी दिन कुछ सदूकी जो पुर्नजीवन को नहीं मानते थे, उसके पास आये। और उससे पूछा 24कि "गुरु, मूसा के उपदेश के अनुसार यदि बिना बाल बच्चों के कोई मर जाये तो उसका भाई, निकट सम्बन्धी होने के नाते उसकी विधवा से ब्याह करे और अपने भाई का वंश बढ़ाने के लिये संतान पैदा करे। 25अब मानो हम सात भाई हैं। पहले का ब्याह हुआ और बाद में उसकी मृत्यु हो गयी। फिर क्योंकि उसके कोई संतान नहीं हुई, इसलिये उसके भाई ने उसकी पत्नी को अपना लिया। 26जब तक कि सातों भाई मर नहीं गये दूसरे, तीसरे भाइयों के साथ भी वैसा ही हुआ 27और सब के बाद वह स्त्री भी मर गयी। 28अब हमारा पूछना यह है कि अगले जीवन में उन सातों में से वह किसकी पत्नी होगी क्योंकि उसे सातों ने ही अपनाया था?"

29उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे कहा, "तुम भूल करते हो क्योंकि तुम शास्त्रों को और परमेश्वर की शक्ति को नहीं जानते। 30तुम्हें समझना चाहिये कि पुर्नजीवन में लोग न तो शादी करेंगे और न ही कोई शादी में दिया जायेगा। बल्कि वे स्वर्ग के दूतों के समान होंगे। 31इसी सिलसिले में तुम्हारे लाभ के लिए परमेश्वर ने मरे हुओं के पुनरुत्थान के बारे में जो कहा है, क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा? उसने कहा था, 32'मैं इब्राहीम का परमेश्वर हूँ, इसहाक का परमेश्वर हूँ, और याकूब का परमेश्वर हूँ।'* वह मरे हुओं का नहीं बल्कि जीवितों का परमेश्वर है।" 33जब लोगों ने यह सुना तो उसके उपदेश पर वे बहुत चकित हो गए।

सबसे बड़ा आदेश

(मरकुस 12:28-34; लूका 10:25-28)

34जब फरीसियों ने सुना कि यीशु ने अपने उत्तर से सदूकियों को चुप करा दिया है तो वे सब इकट्ठे हुए 35उनमें से एक यहूदी धर्मशास्त्री ने यीशु को फँसाने के उद्देश्य से उससे पूछा, 36"गुरु, व्यवस्था में सबसे बड़ा आदेश कौन सा है?"

37यीशु ने उससे कहा, "सम्पूर्ण मन से, सम्पूर्ण आत्मा से और सम्पूर्ण बुद्धि से तुझे अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम करना चाहिये।"* 38यह सबसे पहला और सबसे बड़ा आदेश है। 39फिर ऐसा ही दूसरा आदेश यह है: 'अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम कर जैसे तू अपने आप से करता

"मैं ... परमेश्वर हूँ" देखें निर्गमन 3:6

"सम्पूर्ण मन ... करना चाहिये" व्यवस्था. 6:5

है।'* 40सम्पूर्ण व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के ग्रन्थ
इन्हीं दो आदेशों पर टिके हैं।"

यीशु का फ़रीसियों से एक प्रश्न

(मरकुस 12:35-37; लूका 20:41-44)

41जब फ़रीसी अभी इकट्ठे ही थे, कि यीशु ने उनसे
एक प्रश्न पूछा, 42"मसीह के बारे में तुम क्या सोचते हो
कि वह किसका बेटा है?"

उन्होंने उससे कहा, "दाऊद का।" 43यीशु ने उनसे
पूछा, "फिर आत्मा से प्रेरित दाऊद ने उसे 'प्रभु' कहते
हुए यह क्यों कहा था कि:

44'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा: 'मेरे दाहिने हाथ बैठ कर
शासन कर जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे अधीन
न कर दूँ।' *भजन संहिता 110:1*

45फिर जब दाऊद ने उसे प्रभु कहा तो वह उसका
बेटा कैसे हो सकता है?" 46उत्तर में कोई भी उससे कुछ
नहीं कह सका। और न ही उस दिन के बाद किसी को
उससे कुछ और पूछने का साहस ही हुआ।

यीशु द्वारा यहूदी धर्म-नेताओं की आलोचना

(मरकुस 12:38-40; लूका 11:37-52, 20:45-47)

23 यीशु ने फिर अपने शिष्यों और भीड़ से कहा।
2उसने कहा, "यहूदी धर्म शास्त्री और फरीसी
मूसा के विधान की व्याख्या के अधिकारी हैं। 3इसलिए
जो कुछ वे कहें उस पर चलना और उसका पालन
करना। किन्तु जो वे करते हैं वह मत करना। मैं यह
इसलिए कहता हूँ क्योंकि वे बस कहते हैं पर करते
नहीं हैं। 4वे लोगों के कंधों पर इतना बोझ लाद देते हैं
कि वे उसे उठा कर चल ही न सकें और लोगों पर
दबाव डालते हैं कि वे उसे लेकर चलें। किन्तु वे स्वयं
उनमें से किसी पर भी चलने के लिए पाँव तक नहीं
हिलाते।

5"वे अच्छे कर्म इसलिए करते हैं कि लोग उन्हें देखें।
वास्तव में वे अपने ताबीज़ों और पोशाकों की झालरों
को इसलिये बड़े से बड़ा करते रहते हैं ताकि लोग उन्हें
धर्मात्मा समझें। 6वे उत्सवों में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान
पाना चाहते हैं। धर्म सभाओं में उन्हें प्रमुख आसन
चाहिये। 7बाज़ारों में वे आदर के साथ नमस्कार कराना
चाहते हैं। और चाहते हैं कि लोग उन्हें रब्बी* कहकर
संबोधित करें।

8"किन्तु तुम लोगों से अपने आप को रब्बी मत
कहलवाना, क्योंकि तुम्हारा सच्चा गुरु तो बस एक है।
और तुम सब केवल भाई बहन हो। 9धरती पर लोगों
को तुम अपने में से किसी को भी 'पिता' मत कहने
देना। क्योंकि तुम्हारा पिता तो बस एक ही है, और वह
स्वर्ग में है। 10न ही लोगों को तुम अपने को स्वामी
कहने देना क्योंकि तुम्हारा स्वामी तो बस एक ही है
और वह मसीह है। 11तुममें सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति वही
होगा जो तुम्हारा सेवक बनेगा। 12जो अपने आपको
उठायेगा उसे नीचा किया जाएगा और जो अपने आपको
नीचा बनाएगा उसे उठाया जायेगा।

13"अरे कपटी धर्मशास्त्रियो और फ़रीसियो! तुम्हें
धिक्कार है। तुम लोगों के लिए स्वर्ग के राज्य का द्वार
बंद करते हो। न तो तुम स्वयं उसमें प्रवेश करते हो
और न ही उनको जाने देते हो जो प्रवेश के लिए प्रयत्न
कर रहे हैं। 14*

15"अरे कपटी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों! तुम्हें
धिक्कार है। तुम किसी को अपने पंथ में लाने के लिए
धरती और समुद्र पार कर जाते हो। और जब वह
तुम्हारे पंथ में आ जाता है तो तुम उसे अपने से भी
दुगुना नरक का पात्र बना देते हो!

16"अरे अंधे रहनुमाओं! तुम्हें धिक्कार है जो कहते
हो यदि कोई मंदिर की सौगंध खाता है तो उसे उस
शपथ को रखना आवश्यक नहीं है किन्तु यदि कोई
मंदिर के सोने की शपथ खाता है तो उसे उस शपथ का
पालन आवश्यक है। 17अरे अंधे मूर्खो! बड़ा कौन है?
मन्दिर का सोना या वह मंदिर जिसने उस सोने को
पवित्र बनाया। 18तुम यह भी कहते हो 'यदि कोई वेदी
की सौगंध खाता है तो कुछ नहीं,' किन्तु यदि कोई वेदी
पर रखे चढ़ावे की सौगंध खाता है तो वह अपनी सौगंध
से बँधा है। 19अरे अंधों! कौन बड़ा है? वेदी पर रखा
चढ़ावा या वह वेदी जिससे वह चढ़ावा पवित्र बनता है?
20इसलिये यदि कोई वेदी की शपथ लेता है तो वह वेदी
के साथ वेदी पर जो रखा है, उस सब की भी शपथ
लेता है। 21वह जो मंदिर है, उसकी भी शपथ लेता है
वह मंदिर के साथ जो मंदिर के भीतर है, उसकी भी
शपथ लेता है। 22और वह जो स्वर्ग की शपथ लेता है,
वह परमेश्वर के सिंहासन के साथ जो उस सिंहासन
पर विराजमान है उसकी भी शपथ लेता है।

23"अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियो और फरीसियो!
तुम्हारा जो कुछ है, तुम उसका दसवाँ भाग, यहाँ तक
कि अपने पुदीने, सौंफ और जीरे तक के दसवें भाग
को परमेश्वर को देते हो। फिर भी तुम व्यवस्था की
महत्त्वपूर्ण बातों यानी न्याय, दया और विश्वास का
तिरस्कार करते हो। तुम्हें उन बातों की उपेक्षा किये
बिना इनका पालन करना चाहिये था।

"अपने पड़ोसी ... करता है" लैव्य.19:18

रब्बी अर्थात् गुरु।

पद 14 कुछ यूनानी प्रतियों में यह पद 14 जोड़ा गया है। "ओ कपटी, यहूदी धर्मशास्त्रियो और फरीसियो तुम विधवाओं की सम्पत्ति हड़प जाते हो। दिखाने के लिये लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ करते हो। इसके लिये तुम्हें कड़ा दण्ड मिलेगा"

24"ओ अंधे रहनुमाओ! तुम अपने पानी से मच्छर तो
छानते हो पर ऊँट को निगल जाते हो।
25"ओ कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियो! और फरीसियों!तुम्हें
धिक्कार है। तुम अपनी कटोरियाँ और थालियाँ बाहर
से तो धोकर साफ करते हो पर उनके भीतर जो तुमने
छल कपट या अपने लिये रियायत में पाया है, भरा है।
26अरे अंधे फरीसियो! पहले अपने प्याले को भीतर से
माँजो ताकि भीतर के साथ वह बाहर से भी स्वच्छ हो
जाये।
27"अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियों! और फरीसियों!
तुम्हें धिक्कार है। तुम लिपी–पुती समाधि के समान हो
जो बाहर से तो सुंदर दिखती है किन्तु भीतर से मरे हुओं
की हड्डियों और हर तरह की अपवित्रता से भरी होती
है। 28ऐसे ही तुम बाहर से तो धर्मात्मा दिखाई देते हो
किन्तु भीतर से छलकपट और बुराई से भरे हुए हो।
29"अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियो! और फरीसियो!
तुम नबियों के लिये स्मारक बनाते हो और धर्मात्माओं
की क़ब्रों को सजाते हो। 30और कहते हो कि 'यदि तुम
अपने पूर्वजों के समय में होते तो नबियों को मारने में
उनका हाथ नहीं बटाते।' 31मतलब यह कि तुम मानते
हो कि तुम उनकी संतान हो जो नबियों के हत्यारे थे।
32सो तुम जो तुम्हारे पुरखों ने शुरू किया, उसे पूरा
करो।
33"अरे साँपों और नागों की संतानो! तुम कैसे सोचते
हो कि तुम नरक भोगने से बच जाओगे। 34इसलिये मैं
तुम्हें बताता हूँ कि मैं तुम्हारे पास नबियों, बुद्धिमानों
और गुरुओं को भेज रहा हूँ। तुम उनमें से बहुतों को
मार डालोगे और बहुतों को क्रूस पर चढ़ाओगे। कुछ
एक को तुम अपनी धर्मसभाओं में कोड़े लगवाओगे
और एक नगर से दूसरे नगर उनका पीछा करते
फिरोगे।
35परिणामस्वरूप निर्दोष हाबील से लेकर बिरिक्याह
के बेटे जकरयाह तक जिसे तुमने मन्दिर के गर्भ गृह
और वेदी के बीच मार डाला था, हर निरपराध व्यक्ति
की हत्या का दण्ड तुम पर होगा। 36मैं तुम्हें सत्य कहता
हूँ इस सब कुछ के लिये इस पीढ़ी के लोगों को दंड
भोगना होगा।"

यरूशलेम के लोगों पर यीशु को खेद

(लूका 13:34-35)

37"ओ यरूशलेम, यरूशलेम! तू वह है जो नबियों की
हत्या करता है और परमेश्वर के भेजे दूतों को पत्थर
मारता है। मैंने कितनी बार चाहा है कि जैसे कोई मुर्गी
अपने चूज़ों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा कर लेती
है वैसे ही मैं तेरे बच्चों को एकत्र कर लूँ। किन्तु तुम
लोगों ने नहीं चाहा। 38अब तेरा मंदिर पूरी तरह उजड़
जायेगा। 39सचमुच मैं तुम्हें बताता हूँ तुम मुझे तब तक
फिर नहीं देखोगे जब तक तुम यह नहीं कहोगे: 'धन्य है
वह जो प्रभु के नाम पर आ रहा है!'"*

यीशु द्वारा मंदिर के विनाश की भविष्यवाणी

(मरकुस 13:1-31; लूका 21:5-33)

24 मंदिर को छोड़ कर यीशु जब वहाँ से होकर
जा रहा था तो उसके शिष्य उसे मंदिर के
भवन दिखाने उसके पास आये। 2इस पर यीशु ने उनसे
कहा, "तुम इन भवनों को सीधे खड़े देख रहे हो? मैं
तुम्हें सच बताता हूँ, यहाँ एक पत्थर पर दूसरा पत्थर
टिका नहीं रहेगा। एक एक पत्थर गिरा दिया जायेगा।"
3यीशु जब जैतून पर्वत* पर बैठा था तो एकांत में
उसके शिष्य उसके पास आये और बोले, "हमें बता यह
कब घटेगा? जब तू वापस आयेगा और इस संसार का
अंत होने को होगा तो कैसे संकेत प्रकट होंगे?"
4उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "सावधान! तुम लोगों
को कोई छलने न पाये। 5मैं यह इस लिए कह रहा हूँ
कि ऐसे बहुत से हैं जो मेरे नाम से आयेंगे और कहेंगे 'मैं
मसीह हूँ' और वे बहुतों को छलेंगे। 6तुम पास के युद्धों
की बातें या दूर के युद्धों की अफवाहें सुनोगे पर देखो
तुम घबराना मत। ऐसा तो होगा ही किन्तु अभी अंत
नहीं आया है। 7हर एक जाति दूसरी जाति के विरोध में
और एक राज्य दूसरे राज्य के विरोध में खड़ा होगा।
अकाल पड़ेंगे। हर कहीं भूचाल आयेंगे। 8किन्तु ये सब
बातें तो केवल पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।
9"उस समय वे तुम्हें दण्ड दिलाने के लिए पकड़वायेंगे,
और वे तुम्हें मरवा डालेंगे। क्योंकि तुम मेरे शिष्य हो,
सभी जातियों के लोग तुमसे घृणा करेंगे। 10उस समय
बहुत से लोगों का मोह टूट जायेगा और विश्वास डिग
जायेगा। वे एक दूसरे को अधिकारियों के हाथों सौंपेंगे
और परस्पर घृणा करेंगे। 11बहुत से झूठे नबी उठ खड़े
होंगे और लोगों को ठगेंगे। 12क्योंकि बदी बढ़ जायेगी सो
बहुत से लोगों का प्रेम ठंडा पड़ जायेगा। 13किन्तु जो अंत
तक टिका रहेगा उसका उद्धार होगा। 14स्वर्ग के राज्य
का यह सुसमाचार समस्त विश्व में सभी जातियों को
साक्षी के रूप में सुनाया जाएगा और तभी अन्त आएगा।
15"इसलिए जब तुम लोग भयानक विनाशकारी वस्तु
को, जिसका उल्लेख दानिय्येल नबी द्वारा किया गया
था, मंदिर के पवित्र स्थान पर खड़े देखो," (पढ़ने वाला
स्वयं समझ ले कि इसका अर्थ क्या है)
16"तब जो लोग यहूदिया में हों उन्हें पहाड़ों पर भाग
जाना चाहिये। 17जो अपने घर की छत पर हो, वह घर
से बाहर कुछ भी ले जाने के लिए नीचे न उतरे। 18और

"धन्य है ... आ रहा है" भजन. 118:26

जैतून पर्वत यरूशलेम के निकट का एक पहाड़ जिस पर जैतून के बहुत से पेड़ थे।

जो बाहर खेतों में काम कर रहा हो, वह पीछे मुड़ कर
अपने वस्त्र तक न ले। 19उन स्त्रियों के लिये, जो
गर्भवती होंगी या जिनके दूध पीते बच्चे होंगे, वे दिन
बहुत कष्ट के होंगे। 20प्रार्थना करो कि तुम्हें सर्दियों के
दिनों या सब्त के दिन भागना न पड़े। 21उन दिनों ऐसी
विपत्ति आयेगी जैसी जब से परमेश्वर ने यह सृष्टि रची
है, आज तक कभी नहीं आयी और न कभी आयेगी।
22और यदि परमेश्वर ने उन दिनों को घटाने का
निश्चय न कर लिया होता तो कोई भी न बचता किंतु
अपने चुने हुओं के कारण वह उन दिनों को कम
करेगा। 23उन दिनों यदि कोई तुम लोगों से कहे, 'देखो,
यह रहा मसीह' 24या 'वह रहा मसीह' तो उसका विश्वास
मत करना। मैं यह कहता हूँ क्योंकि कपटी मसीह और
कपटी नबी खड़े होंगे और ऐसे ऐसे आश्चर्य चिह्न दिखायेंगे
और अद्भुत काम करेंगे कि बन पड़े तो वह चुने हुओं
को भी चकमा दे दें। 25देखो मैंने तुम्हें पहले ही बता
दिया है।

26"सो यदि वे तुमसे कहें, 'देखो वह जंगल में है' तो
वहाँ मत जाना और यदि वे कहें, 'देखो वह उन कमरों
के भीतर छुपा है' तो उनका विश्वास मत करना। 27मैं
यह कह रहा हूँ क्योंकि जैसे बिजली पूरब में शुरू
होकर पश्चिम के आकाश तक कौंध जाती है वैसे ही
मनुष्य का पुत्र भी प्रकट होगा। 28जहाँ कहीं लाश होगी
वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।

29"उन दिनों जो मुसीबत पड़ेगी उसके तुरंत बाद:
'सूरज काला पड़ जायेगा चाँद से उसकी चाँदनी नहीं
छिटकेगी आसमान से तारे गिरने लगेंगे और आकाश
में महाशक्तियाँ झकझोर दी जायेंगी।'

यशायाह 13:10; 34:4, 5

30"उस समय मनुष्य के पुत्र के आने का संकेत
आकाश में प्रकट होगा। तब पृथ्वी पर सभी जातियों के
लोग विलाप करेंगे और वे मनुष्य के पुत्र को शक्ति
और महिमा के साथ स्वर्ग के बादलों में प्रकट होते
देखेंगे। 31वह ऊँचे स्वर की तुरही के साथ अपने दूतों
को भेजेगा। फिर वे स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर
तक सब कहीं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा
करेगा।

32"अंजीर के पेड़ से शिक्षा लो। जैसे ही उसकी टहनियाँ
कोमल हो जाती हैं और कोंपलें फूटने लगती हैं तुम
लोग जान जाते हो कि गर्मियाँ आने को हैं। 33वैसे ही
जब तुम यह सब घटित होते हुए देखो तो समझ जाना
कि वह समय निकट आ पहुँचा है, बल्कि ठीक द्वार
तक। 34मैं तुम लोगों से सत्य कहता हूँ कि इस पीढ़ी के
लोगों के जीते जी ही ये सब बातें घटेंगी। 35चाहे धरती
और आकाश मिट जायें किन्तु मेरा वचन कभी नहीं
मिटेगा।"

केवल परमेश्वर जानता है कि वह समय कब आएगा

(मरकुस 13:32-37; लूका 17:26-30; 34-36)

36"उस दिन या उस घड़ी के बारे में कोई कुछ नहीं
जानता। न स्वर्ग में दूत और न स्वंय पुत्र। केवल परम
पिता जानता है। 37जैसे नूह के दिनों में हुआ, वैसे ही
मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। 38वैसे ही जैसे लोग
जल प्रलय आने से पहले के दिनों तक खाते-पीते रहे,
ब्याह-शादियाँ रचाते रहे जब तक नूह नाव पर नहीं
चढ़ा। 39उन्हें तब तक कुछ पता नहीं चला जब तक
जल प्रलय न आ गया और उन सब को बहा नहीं ले
गया। मनुष्य के पुत्र का आना भी ऐसा ही होगा। 40उस
समय खेत में काम करते दो आदमियों में से एक को
उठा लिया जायेगा और एक को वहीं छोड़ दिया जायेगा।
41चक्की पीसती दो औरतों में से एक उठा ली जायेगी
और एक वहीं पीछे छोड़ दी जायेगी।

42"सो तुम लोग सावधान रहो क्योंकि तुम नहीं जानते
कि तुम्हारा स्वामी कब आ जाये। 43याद रखो यदि घर
का स्वामी जानता कि रात को किस घड़ी चोर आ
जायेगा तो वह सजग रहता और चोर को अपने घर में
सेंध नहीं लगाने देता। 44इसलिए तुम भी तैयार रहो
क्योंकि तुम जब उसकी सोच भी नहीं रहे होंगे, मनुष्य
का पुत्र आ जायेगा।

45"तब सोचो वह भरोसेमंद सेवक कौन है, जिसे
स्वामी ने अपने घर के सेवकों के ऊपर उचित समय
उन्हें उनका भोजन देने के लिए लगाया है। 46धन्य है
वह सेवक जिसे उसका स्वामी जब आता है तो कर्तव्य
करते पाता है। 47मैं तुमसे सत्य कहता हूँ वह स्वामी उसे
अपनी समूची सम्पत्ति का अधिकारी बना देगा। 48दूसरी
तरफ सोचो एक बुरा दास है, जो अपने मन में कहता है
मेरा स्वामी बहुत दिनों से वापस नहीं आ रहा है 49सो
वह अपने साथी दासों से मार पीट करने लगता है और
शराबियों के साथ खाना पीना शुरू कर देता है 50तो
उसका स्वामी ऐसे दिन आ जायेगा जिस दिन वह उसके
आने की सोचता तक नहीं और जिसका उसे पता तक
नहीं।

51और उसका स्वामी उसे बुरी तरह दण्ड देगा और
कपटियों के बीच उसका स्थान निश्चित करेगा जहाँ
बस लोग रोते होंगे और दाँत पीसते होंगे।

दूल्हे की प्रतीक्षा करती दस कन्याओं की दृष्टांत-कथा

25 "उस दिन स्वर्ग का राज्य उन दस कन्याओं
के समान होगा जो मशालें लेकर दूल्हे से
मिलने निकलीं। 2उनमें से पाँच लापरवाह थीं और पाँच
चौकस। 3पाँचों लापरवाह कन्याओं ने अपनी मशालें तो
ले ली पर उनके साथ तेल नहीं लिया। 4उधर चौकस
कन्याओं ने अपनी मशालों के साथ कुप्पियों में तेल भी

ले लिया। 5क्योंकि दूल्हे को आने में देर हो रही थी,
सभी कन्याएँ ऊँघने लगीं और पड़ कर सो गयी।
6"पर आधी रात धूम मची आ हा, 'दूल्हा आ रहा है!
उससे मिलने बाहर चलो।'
7"उसी क्षण वे सभी कन्याएँ उठ खड़ी हुई और
अपनी मशालें तैयार कीं। 8लापरवाह कन्याओं ने चौकस
कन्याओं से कहा, 'हमें अपना थोड़ा तेल दे दो, हमारी
मशालें बुझी जा रही हैं।'
9"उत्तर में उन चौकस कन्याओं ने कहा, 'नहीं! हम
नहीं दे सकती। क्योंकि फिर न ही यह हमारे लिए
काफी होगा और न ही तुम्हारे लिये। सो तुम तेल बेचने
वाले के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।'
10"जब वे मोल लेने जा ही रही थीं कि दूल्हा आ
पहुँचा। सो वे कन्याएँ, जो तैयार थीं, उसके साथ विवाह
के उत्सव में भीतर चली गईं और फिर किसी ने द्वार
बंद कर दिया।
11"आखिरकार वे बाकी की कन्याएँ भी गई और
उन्होंने कहा, 'स्वामी, हे स्वामी, द्वार खोलो, हमें भीतर
आने दो।'
12"किन्तु उसने उत्तर देते हुए कहा, 'मैं तुमसे सच
कह रहा हूँ: मैं तुम्हें नहीं जानता।'
13"सो सावधान रहो। क्योंकि तुम न उस दिन को
जानते हो, न उस घड़ी को, जब मनुष्य का पुत्र लौटेगा।

तीन दासों की दृष्टांत कथा

(लूका 19:11-27)

14"स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान होगा जिसने
यात्रा पर जाते हुए अपने दासों को बुला कर अपनी
सम्पत्ति पर अधिकारी बनाया। 15उसने एक को चाँदी
के सिक्कों से भरी पाँच थैलियाँ दीं। दूसरे को दो और
तीसरे को एक। वह हर एक को उसकी योग्यता के
अनुसार दे कर यात्रा पर निकल पड़ा। 16जिसे चाँदी के
सिक्कों से भरी पाँच थैलियाँ मिली थीं, उसने तुरन्त उस
पैसे को काम में लगा दिया और पाँच थैलियाँ और कमा
ली। 17ऐसे ही जिसे दो थैलियाँ मिली थीं, उसने भी दो
और कमा लीं। 18पर जिसे एक मिली थी उसने कहीं
जाकर धरती में गढ़ा खोदा और अपने स्वामी के धन
को गाड़ दिया।
19"बहुत समय बीत जाने के बाद उन दासों का स्वामी
लौटा और हर एक से लेखा जोखा लेने लगा। 20वह
व्यक्ति जिसे चाँदी के सिक्कों की पाँच थैलियाँ मिली थी,
अपने स्वामी के पास गया और चाँदी की पाँच और
थैलियाँ ले जाकर उससे बोला, 'स्वामी, तुमने मुझे
पाँच थैलियाँ सौंपी थीं। चाँदी के सिक्कों की ये पाँच
थैलियाँ और हैं जो मैंने कमाई हैं।'
21"उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश! तुम भरोसे
के लायक अच्छे दास हो। थोड़ी सी रकम के सम्बन्ध में
तुम विश्वास पात्र रहे, मैं तुम्हें और अधिक का अधिकार
दूँगा। भीतर जा और अपने स्वामी की प्रसन्नता में
शामिल हो।'
22"फिर जिसे चाँदी के सिक्कों की दो थैलियाँ मिली
थीं, अपने स्वामी के पास आया और बोला, 'स्वामी, तूने
मुझे चाँदी की दो थैलियाँ सौंपी थीं, चाँदी के सिक्कों की
ये दो थैलियाँ और हैं जो मैंने कमाई हैं।'
23"उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश! तुम भरोसे
के लायक अच्छे दास हो। थोड़ी सी रकम के सम्बन्ध में
तुम विश्वास पात्र रहे। मैं तुम्हें और अधिक का अधिकार
दूँगा। भीतर जा और अपने स्वामी की प्रसन्नता में
शामिल हो।'
24"फिर वह जिसे चाँदी ीकी एक थैली मिली थी,
अपने स्वामी के पास आया और बोला, 'स्वामी, मैं
जानता हूँ तू बहुत कठोर व्यक्ति है। तू वहाँ काटता है
जहाँ तूने बोया नहीं है, और जहाँ तूने कोई बीज नहीं
डाला वहाँ फसल बटोरता है। 25सो मैं डर गया था
इसलिए मैंने जाकर चाँदी के सिक्कों की थैली को
धरती में गाड़ दिया। यह ले जो तेरा है यह रहा, ले ले।'
26"उत्तर में उसके स्वामी ने उससे कहा, 'तू एक बुरा
और आलसी दास है, तू जानता है कि मैं बिन बोये
काटता हूँ और जहाँ मैंने बीज नहीं बोये, वहाँ से फसल
बटोरता हूँ 27तो तुझे मेरा धन साहूकारों के पास जमा
करा देना चाहिये था। फिर जब मैं आता तो जो मेरा था
सूद के साथ ले लेता।'
28"इसलिये इससे चाँदी के सिक्कों की यह थैली ले
लो और जिसके पास चाँदी के सिक्कों की दस थैलियाँ
हैं, इसे उसी को दे दो। 29क्योंकि हर उस व्यक्ति को,
जिसने जो कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग
किया, और अधिक दिया जायेगा। और जितनी उसे
आवश्यकता है, वह उससे अधिक पायेगा। किन्तु उससे,
जिसने जो कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग
नहीं किया, सब कुछ छीन लिया जायेगा। 30सो उस
बेकार के दास को बाहर अन्धेरे में धकेल दो जहाँ लोग
रोयेंगे और अपने दाँत पीसेंगे।"

मनुष्य का पुत्र सबका न्याय करेगा

31"मनुष्य का पुत्र जब अपनी स्वर्गिक महिमा में
अपने सभी दूतों समेत अपने शानदार सिंहासन पर
बैठेगा 32तो सभी जातियाँ उसके सामने इकट्ठी की
जायेंगी और वह एक को दूसरे से वैसे ही अलग करेगा,
जैसे एक गड़रिया अपनी बकरियों से भेड़ों को अलग
करता है। 33वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर रखेगा
और बकरियों को बाँई ओर।
34"फिर वह राजा, जो उसके दाहिनी ओर हैं, उनसे
कहेगा, 'मेरे पिता से आशीष पाये लोगो, आओ और जो
राज्य तुम्हारे लिये जगत की रचना से पहले तैयार किया

गया है उसका अधिकार लो। 35यह राज्य तुम्हारा है
क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे कुछ खाने को
दिया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे कुछ पीने को दिया।
मैं पास से जाता हुआ कोई अनजाना था, और तुम मुझे
भीतर ले गये। 36मैं नंगा था, तुमने मुझे कपड़े पहनाए।
मैं बीमार था, और तुमने मेरी सेवा की। मैं बंदी था,
और तुम मेरे पास आये।'

37"फिर उत्तर में धर्मी लोग उससे पूछेंगे, 'प्रभु, हमने
तुझे कब भूखा–देखा और खिलाया या प्यासा देखा और
पीने को दिया? 38तुझे हमने कब पास से जाता हुआ
कोई अनजाना देखा और भीतर ले गये या बिना कपड़ों
के देखकर तुझे कपड़े पहनाए? 39और हमने कब तुझे
बीमार या बंदी देखा और तेरे पास आये?' 40"फिर राजा
उत्तर में उनसे कहेगा, 'मैं तुमसे सच कह रहा हूँ जब
कभी तुमने मेरे भोले–भाले भाइयों में से किसी एक के
लिये भी कुछ किया तो वह तुमने मेरे ही लिये किया।'

41"फिर वह राजा अपनी बाँई ओर वालों से कहेगा,
'अरे अभागो! मेरे पास से चले जाओ, और जो आग
शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गयी है, उस
अनंत आग में जा गिरो। 42यही तुम्हारा दण्ड है क्योंकि
मैं भूखा था पर तुमने मुझे खाने को कुछ नहीं दिया,
43मैं अजनबी था पर तुम मुझे भीतर नहीं ले गये। मैं
कपड़ों के बिना नंगा था, पर तुमने मुझे कपड़े नहीं
पहनाये। मैं बीमार और बंदी था, पर तुमने मेरा ध्यान
नहीं रखा।'

44"फिर वे भी उत्तर में उससे पूछेंगे, 'प्रभु, हमने तुझे
भूखा या प्यासा या अनजाना या बिना कपड़ों के नंगा या
बीमार या बंदी कब देखा और तेरी सेवा नहीं की।'

45"फिर वह उत्तर में उनसे कहेगा, 'मैं तुमसे सच
कह रहा हूँ जब कभी तुमने मेरे इन भोले भाले अनुयायियों
में से किसी एक के लिए भी कुछ करने में लापरवाही
बरती तो वह तुमने मेरे लिए ही कुछ करने में लापरवाही
बरती।' 46"फिर ये बुरे लोग अनंत दण्ड पाएँगे और धर्मी
लोग अनंत जीवन में चले जायेंगे।"

यहूदी नेताओं द्वारा यीशु की हत्या का षड़यंत्र

(मरकुस 14:1-2; लूका 22:1-2; यूहन्ना 11:45-53)

26 इन सब बातों के कह चुकने के बाद यीशु
अपने शिष्यों से बोला, 2"तुम लोग जानते हो
कि दो दिन बाद फसह पर्व है। और मनुष्य का पुत्र
शत्रुओं के हाथों क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिये पकड़वाया
जाने वाला है। 3तब प्रमुख याजक और बुज़ुर्ग यहूदी नेता
कैफ़ा नाम के प्रमुख याजक के भवन के आँगन में
इकट्ठे हुए। 4और उन्होंने किसी तरकीब से यीशु को
पकड़ने और मार डालने की योजना बनायी। 5फिर भी
वे कह रहे थे "हमें यह पर्व के दिनों नहीं करना चाहिये
नहीं तो हो सकता है लोग कोई दंगा–फ़साद करें।"

यीशु पर इत्र का छिड़काव

(मरकुस 14:3-9; यूहन्ना 12:1-8)

6यीशु जब बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर पर था
7तभी एक स्त्री सफेद चिकने, स्फटिक के पात्र में बहुत
कीमती इत्र भर कर लायी और उसे उसके सिर पर
उँडेल दिया। उस समय वह पटरे पर झुका बैठा था।

8जब उसके शिष्यों ने यह देखा तो वे क्रोध में भर
कर बोले, "इत्र की ऐसी बर्बादी क्यों की गयी? 9यह इत्र
अच्छे दामों में बेचा जा सकता था और फिर उस धन
को दीन दुखियों में बाँटा जा सकता था।"

10यीशु जान गया कि वे क्या कह रहे हैं। सो उनसे
बोला, "तुम इस स्त्री को क्यों तंग कर रहे हो? उसने तो
मेरे लिए एक सुन्दर काम किया है? 11क्योंकि दीन
दुःखी तो सदा तुम्हारे पास रहेंगे पर मैं तुम्हारे साथ सदा
नहीं रहूँगा। 12उसने मेरे शरीर पर यह सुगंधित इत्र
छिड़क कर मेरे गाड़े जाने की तैयारी की है। 13मैं तुमसे
सच कहता हूँ समस्त संसार में जहाँ कहीं भी सुसमाचार
का प्रचार–प्रसार किया जायेगा, वहीं इसकी याद में, जो
कुछ इसने किया है, उसकी चर्चा होगी।"

यहूदा यीशु से शत्रुता ठानता है

(मरकुस 14:10-11; लूका 22:3-6)

14तब यहूदा इस्करियोती जो उसके बारह शिष्यों में से
एक था, प्रधान याजकों के पास गया और उनसे बोला,
15"यदि मैं यीशु को तुम्हें पकड़वा दूँ तो तुम लोग मुझे
क्या दोगे?" तब उन्होंने यहूदा को चाँदी के तीस सिक्के
देने की इच्छा जाहिर की। 16उसी समय से यहूदा यीशु
को धोखे से पकड़वाने की ताक में रहने लगा।

यीशु का अपने शिष्यों के साथ फ़सह भोज

(मरकुस 14:21-22; लूका 22:7-14, 21-23
यूहन्ना 13:21-30)

17बिना ख़मीर की रोटी के पर्व से पहले दिन यीशु के
शिष्यों ने पास आकर पूछा, "तू क्या चाहता है कि हम
तेरे खाने के लिये फ़सह भोज की तैयारी कहाँ जाकर
करें? 18उसने कहा, "गाँव में उस व्यक्ति के पास जाओ
और उससे कहो, कि गुरु ने कहा है, 'मेरी निश्चित
घड़ी निकट है, मैं तेरे घर अपने शिष्यों के साथ फ़सह
पर्व मनाने वाला हूँ।'"

19फिर शिष्यों ने वैसा ही किया जैसा यीशु ने बताया
था और फ़सह पर्व की तैयारी की।

20दिन ढले यीशु अपने बारह शिष्यों के साथ पटरे
पर झुका बैठा था। 21तभी उनके भोजन करते वह
बोला, "मैं सच कहता हूँ, तुममें से एक मुझे धोखे से
पकड़वायेगा।"

22वे बहुत दुखी हुए और उनमें से प्रत्येक उससे पूछने
लगा, "प्रभु, वह मैं तो नहीं हूँ! बता क्या मैं हूँ?"

23तब यीशु ने उत्तर दिया, "वही जो मेरे साथ एक
थाली में खाता है मुझे धोखे से पकड़वायेगा। 24मनुष्य
का पुत्र तो जायेगा ही, जैसा कि उसके बारे में शास्त्र में
लिखा है। पर उस व्यक्ति को धिक्कार है जिस व्यक्ति
के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जा रहा है। उस
व्यक्ति के लिये कितना अच्छा होता कि उसका जन्म ही
न हुआ होता।"
25तब उसे धोखे से पकड़वाने वाला यहूदा बोल उठा,
"हे रब्बी, वह मैं नहीं हूँ। क्या मैं हूँ?"
यीशु ने उससे कहा, "हाँ, ऐसा ही है जैसा तूने कहा
है।"

प्रभु का भोज

(मरकुस 14:22-26; लूका 22:15-20;
1 कुरिन्थियों 11:23-25)

26जब वे खाना खा ही रहे थे, यीशु ने रोटी ली, उसे
आशीष दी और फिर तोड़ा। फिर उसे शिष्यों को देते
हुए वह बोला, "लो, इसे खाओ, यह मेरी देह है।"
27फिर उसने प्याला उठाया और धन्यवाद देने के
बाद उसे उन्हें देते हुए कहा, "तुम सब इसे थोड़ा थोड़ा
पिओ। 28क्योंकि यह मेरा लहू है जो एक नये वाचा की
स्थापना करता है। यह बहुत लोगों के लिए बहाया जा
रहा है। ताकि उनके पापों को क्षमा करना सम्भव हो
सके। 29मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं उस दिन तक दाखरस
को नहीं चखूँगा जब तक अपने परम पिता के राज्य में
तुम्हारे साथ नया दाखरस न पी लूँ।"
30फिर वे फ़सह का भजन गाकर जैतून पर्वत पर
चले गये।

यीशु का कथन : सब शिष्य उसे छोड़ देंगे

(मरकुस 14:27-31; लूका 22:31-34;
यूहन्ना 13:36-38)

31फिर यीशु ने उनसे कहा, "आज रात तुम सब का
मुझमें से विश्वास डिग जायेगा। क्योंकि शास्त्र में लिखा
है: 'मैं गड़ेरिये को मारूँगा और रेवड़ की भेड़ें तितर
बितर हो जायेंगी।' *जकर्याह 13:7*

32पर फिर से जी उठने के बाद मैं तुमसे पहले ही
गलील चला जाऊँगा।"
33पतरस ने उत्तर दिया, "चाहे सब तुझ में से विश्वास
खो दें किन्तु मैं कभी नहीं खोऊँगा।"
34यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य कहता हूँ
आज इसी रात मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार
मुझे नकार चुकेगा।"
35तब पतरस ने उससे कहा, "यदि मुझे तेरे साथ
मरना भी पड़े तो भी तुझे मैं कभी नहीं नकारूँगा।"
बाकी सब शिष्यों ने भी यही कहा।

यीशु की एकान्त प्रार्थना

(मरकुस 14:32-42; लूका 22:39-46)

36फिर यीशु उनके साथ उस स्थान पर आया जो
गतसमने कहलाता था। और उसने अपने शिष्यों से
कहा, "जब तक मैं वहाँ जाऊँ और प्रार्थना करूँ, तुम
यहीं बैठो।" 37फिर यीशु पतरस और जब्दी के दो बेटों
को अपने साथ ले गया। और दुख तथा व्याकुलता
अनुभव करने लगा। 38फिर उसने उनसे कहा, "मेरा
मन बहुत दुःखी है, जैसे मेरे प्राण निकल जायेंगे। तुम
मेरे साथ यहीं ठहरो और सावधान रहो।"
39फिर थोड़ा आगे बढ़ने के बाद वह धरती पर झुक
कर प्रार्थना करने लगा। उसने कहा, "हे मेरे परम
पिता, यदि हो सके तो यातना का यह प्याला मुझसे टल
जाये। फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं बल्कि जैसा
तू चाहता है वैसा ही कर। 40फिर वह अपने शिष्यों के
पास गया और उन्हें सोता पाया। वह पतरस से बोला, 'सो
तुम लोग मेरे साथ एक घड़ी भी नहीं जाग सके। 41जागते
रहो और प्रार्थना करो ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो।
तुम्हारा मन तो वही करना चाहता है जो उचित है
किन्तु, तुम्हारा शरीर दुर्बल है।"
42एक बार फिर उसने जाकर प्रार्थना की और कहा,
"हे मेरे परम पिता, यदि यातना का यह प्याला मेरे पिये
बिना टल नहीं सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।" 43तब वह
आया और उन्हें फिर सोते पाया। वे अपनी आँखें खोले
नहीं रख सके। 44सो वह उन्हें छोड़ कर फिर गया और
तीसरी बार भी पहले की तरह उन ही शब्दों में प्रार्थना
की। 45फिर यीशु अपने शिष्यों के पास गया और
उनसे पूछा, "क्या तुम अब भी आराम से सो रहे हो?
सुनो, समय आ चुका है, जब मनुष्य का पुत्र पापियों के
हाथों सौंपा जाने वाला है। 46उठो, आओ चलें। देखो मुझे
पकड़वाने वाला यह रहा।"

यीशु को बंदी बनाना

(मरकुस 14:43-50; लूका 22:47-53;
यूहन्ना 18:3-12)

47यीशु जब बोल ही रहा था, यहूदा जो बारह शिष्यों
में से एक था, आया। उसके साथ तलवारों और लाठियों
से लैस प्रमुख याजकों और यहूदी नेताओं की भेजी एक
बड़ी भीड़ भी थी। 48यहूदा ने जो उसे पकड़वाने वाला
था, उन्हें एक संकेत देते हुए कहा कि जिस किसी को
मैं चूमूँ, वही यीशु है, उसे पकड़ लो, 49फिर वह यीशु
के पास गया और बोला, "हे नबी।" और बस उसने
यीशु को चूम लिया।
50यीशु ने उससे कहा, "मित्र जिस काम के लिए तू
आया है, उसे कर।" फिर भीड़ के लोगों ने पास जा कर
यीशु को दबोच कर बंदी बना लिया। 51फिर जो लोग
यीशु के साथ थे, उनमें से एक ने तलवार खींच ली

और वार करके महा याजक के दास का कान उड़ा दिया।

52तब यीशु न उससे कहा, "अपनी तलवार को म्यान में रखो। जो तलवार चलाते हैं वे तलवार से ही मारे जायेंगे। 53क्या तुम नहीं सोचते कि मैं अपने परम पिता को बुला सकता हूँ और वह तुरंत स्वर्गदूतों की बारह सेनाओं से भी अधिक मेरे पास भेज देगा? 54किन्तु यदि मैं ऐसा करूँ तो शास्त्रों की लिखी यह कैसे पूरी होगी कि सब कुछ ऐसे ही होना है?"

55उसी समय यीशु ने भीड़ से कहा, "तुम तलवारों, लाठियों समेत मुझे पकड़ने ऐसे क्यों आये हो जैसे किसी चोर को पकड़ने आते हैं? मैं हर दिन मंदिर में बैठा उपदेश दिया करता था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा। 56किन्तु यह सब कुछ घटा ताकि भविष्यवक्ताओं की लिखी पूरी हो।" फिर उसके सभी शिष्य उसे छोड़ कर भाग खड़े हुए।

यहूदी नेताओं के सामने यीशु की पेशी

(मरकुस 14:53-65; लूका 22:54-55, 63-71; यूहन्ना 18:13-14, 19-24)

57जिन्होंने यीशु को पकड़ा था, वे उसे कैफ़ा नामक महा याजक के सामने ले गये। वहाँ यहूदी धर्मशास्त्री और बुज़ुर्ग यहूदी नेता भी इकट्ठे हुए। 58पतरस उससे दूर-दूर रहते उसके पीछे पीछे महायाजक के आँगन के भीतर तक चला गया। और फिर नतीजा देखने वहाँ पहरेदारों के साथ बैठ गया। 59महा याजक समूची यहूदी महासभा समेत यीशु को मृत्यु दण्ड देने के लिए उसके विरोध में कोई अभियोग ढूँढने का यत्न कर रहे थे। 60पर ढूँढ नहीं पाये। यद्यपि बहुत से झूठे गवाहों ने आगे बढ़ कर झूठ बोले। अंत में दो व्यक्ति आगे आये 61और बोले, "इसने कहा था कि मैं परमेश्वर के मंदिर को नष्ट कर सकता हूँ और तीन दिन में उसे फिर बना सकता हूँ।"

62फिर महा याजक ने खड़े हो कर यीशु से पूछा, "क्या उत्तर में तुझे कुछ नहीं कहना कि ये लोग तेरे विरोध में यह क्या गवाही दे रहे हैं?"

63किन्तु यीशु चुप रहा। फिर महायाजक ने उससे पूछा, "मैं तुझे साक्षात् परमेश्वर की शपथ देता हूँ, हमें बता क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है?"

64यीशु ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं हूँ। किन्तु मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम मनुष्य के पुत्र को उस परम शक्तिशाली की

दाहिनी ओर बैठे और स्वर्ग के बादलों पर आते शीघ्र ही देखोगे।"

65महायाजक यह सुनकर इतना क्रोधित हुआ कि वह अपने कपड़े फाड़ते हुए बोला, "इसने जो बातें कही हैं वे परमेश्वर की निन्दा में जाती हैं। अब हमें और गवाह नहीं चाहियें। तुम सब ने परमेश्वर के विरोध में कहते, इसे सुना है। 66तुम लोग क्या सोचते हो?"

उत्तर में वे बोले, "यह अपराधी है। इसे मर जाना चाहिये।"

67फिर उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसे घूँसे मारे। कुछ ने थप्पड़ मारे और कहा, 68"अरे मसीह! भविष्यवाणी कर कि वह कौन है जिसने तुझे मारा?"

पतरस का यीशु को नकारना

(मरकुस 14:66-72; लूका 22:56-62; यूहन्ना 18:15-18, 25-27)

69पतरस अभी नीचे आँगन में ही बाहर बैठा था कि एक दासी उसके पास आयी और बोली, "तू भी तो उसी गलीली यीशु के साथ था।"

70किन्तु सब के सामने पतरस मुकर गया। उसने कहा, "मुझे पता नहीं तू क्या कह रही है।"

71फिर वह ड्योढ़ी तक गया ही था कि एक दूसरी स्त्री ने उसे देखा और जो लोग वहाँ थे, उनसे बोली, "यह व्यक्ति यीशु नासरी के साथ था।"

72एक बार फिर पतरस ने इन्कार किया और कसम खाते हुए कहा, "मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।"

73थोड़ी देर बाद वहाँ खड़े लोग पतरस के पास गये और उससे बोले, "तेरी बोली साफ बता रही है कि तू असल में उन्हीं में से एक है।"

74तब पतरस अपने को धिक्कारने और कसमें खाने लगा, "मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।" तभी मुर्गे ने बाँग दी।

75तभी पतरस को वह याद हो आया जो यीशु ने उससे कहा था, "मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार मुझे नकारेगा।" तब पतरस बाहर चला गया और फूट फूट कर रो पड़ा।

यीशु की पिलातुस के आगे पेशगी

(मरकुस 15:1; लूका 23:1-2; यूहन्ना 18:28-32)

27 अलख सुबह सभी प्रमुख याजकों और यहूदी बुज़ुर्ग नेताओं ने यीशु को मरवा डालने के लिए षड्यन्त्र रचा। 2फिर वे उसे बाँध कर ले गये और राज्यपाल पिलातुस को सौंप दिया।

यहूदा की आत्महत्या

(प्रेरितों के काम 1:18-19)

3यीशु को पकड़वाने वाले यहूदा ने जब देखा कि यीशु को दोषी ठहराया गया है, तो वह बहुत पछताया और उसने प्रमुख याजकों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं को चाँदी के वे तीस सिक्के लौटा दिये। 4उसने कहा, "मैंने एक निरपराध व्यक्ति को मार डालने के लिए पकड़वा कर पाप किया है।"

इस पर उन लोगों ने कहा, "हमें क्या! यह तेरा अपना मामला है।"

5इस पर यहूदा चाँदी के उन सिक्कों को मंदिर के भीतर फेंक कर चला गया और फिर बाहर जाकर अपने को फाँसी लगा ली।

6प्रमुख याजकों ने वे सिक्के उठा लिए और कहा, "हमारे नियम के अनुसार इस धन को मंदिर के कोष में रखना उचित नहीं है क्योंकि इसका इस्तेमाल किसी को मरवाने के लिए किया गया था।" 7इसलिए उन्होंने निर्णय करके उस पैसे से यरुशलेम में बाहर से आने वाले लोगों के मर जाने पर गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल लिया। 8इसीलिये आज तक वह खेत 'लहू का खेत' के नाम से जाना जाता है। 9इस प्रकार परमेश्वर का, भविष्यवक्ता यर्मियाह के द्वारा कहा यह वचन पूरा हुआ:

"उन्होंने चाँदी के तीस सिक्के लिए, वह रकम जिसे इस्राएल के लोगों ने उसके लिये देना तय किया था। 10और प्रभु द्वारा मुझे दिये गये आदेश के अनुसार उससे कुम्हार का खेत खरीदा।"*

पिलातुस का यीशु से प्रश्न

(मरकुस 15:2-5; लूका 23:3-5; यूहन्ना 18:33-38)

11इसी बीच यीशु राज्यपाल के सामने पेश हुआ। राज्यपाल ने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

यीशु ने कहा, "हाँ, मैं हूँ।"

12दूसरी तरफ जब प्रमुख याजक और बुज़ुर्ग यहूदी नेता उस पर दोष लगा रहे थे तो उसने कोई उत्तर नहींदिया।

13तब पिलातुस ने उससे पूछा, "क्या तू नहीं सुन रहा है कि वे तुझ पर कितने आरोप लगा रहे हैं?"

14किन्तु यीशु ने पिलातुस को किसी भी आरोप का कोई उत्तर नहीं दिया। पिलातुस को इस पर बहुत अचरज हुआ।

यीशु को छोड़ने में पिलातुस असफल

(मरकुस 15:6-15; लूका 23:13-25; यूहन्ना 18:39-19:16)

15फसह पर्व के अवसर पर राज्यपाल का रिवाज़ था कि वह किसी भी एक क़ैदी को, जिसे भीड़ चाहती थी, उनके लिए छोड़ दिया करता था। 16उसी समय बरअब्बा नाम का एक बदनाम कैदी वहाँ था।

17सो जब भीड़ आ जुटी तो पिलातुस ने उनसे पूछा, "तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे लिये किसे छोड़ूँ, बरअब्बा को या उस यीशु को, जो मसीह कहलाता है?"

18पिलातुस जानता था कि उन्होंने उसे डाह के कारण पकड़वाया है।

19पिलातुस जब न्याय के आसन पर बैठा था तो उसकी पत्नी ने उसके पास एक संदेश भेजा: "उस सीधे सच्चे मनुष्य के साथ कुछ मत कर बैठना। मैंने उसके बारे में एक सपना देखा है जिससे आज सारे दिन मैं बेचैन रही।"

20किन्तु प्रमुख याजकों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं ने भीड़ को बहकाया, फुसलाया कि वह पिलातुस से बरअब्बा को छोड़ने की और यीशु को मरवा डालने की माँग करें।

21उत्तर में राज्यपाल ने उनसे पूछा, "मुझ से दोनों कैदियों में से तुम अपने लिये किसे छुड़वाना चाहते हो?"

उन्होनें उत्तर दिया, "बरअब्बा को!"

22तब पितालुस ने उनसे पूछा, "तो मैं, जो मसीह कहलाता है उस यीशु का क्या करूँ?"

वे सब बोले, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो!"

23पिलातुस ने पूछा, "क्यों, उसने क्या अपराध किया है?"

किन्तु वे तो और अधिक चिल्लाये, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो।"

24पिलातुस ने देखा कि अब कोई लाभ नहीं। बल्कि दंगा भड़कने को है। सो उसने थोड़ा पानी लिया और भीड़ के सामने अपने हाथ धोये, वह बोला, "इस व्यक्ति के खून से मेरा कोई सरोकार नहीं है। यह तुम्हारा मामला है।"

25उत्तर में सब लोगों ने कहा, "इसकी मौत की जवाबदेही हम और हमारे बच्चे स्वीकार करते हैं।"

26तब पिलातुस ने उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवा कर क्रूस पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।

यीशु का उपहास

(मरकुस 15:16-20; यूहन्ना 19:2-3)

27फिर राज्यपाल के सिपाही यीशु को राज्यपाल निवास के भीतर ले गये। वहाँ उसके चारों तरफ सिपाहियों की पूरी पलटन इकट्ठी हो गयी। 28उन्होंने उसके कपड़े उतार दिये और चमकीले लाल रंग के वस्त्र पहना कर 29काँटों से बना एक ताज उसके सिर पर रख दिया। उसके दाहिने हाथ में एक सरकंडा थमा दिया और उसके सामने अपने घुटनों पर झुक कर उसकी हँसी उड़ाते हुए बोले, "यहूदियों का राजा अमर रहे।"

30फिर उन्होंने उसके मुँह पर थूका, छड़ी छीन ली और उसके सिर पर मारने लगे। 31जब वे उसकी हँसी उड़ा चुके तो उसकी पोशाक उतार ली और उसे उसके अपने कपड़े पहना कर क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले।

"उन्होंने ... खरीदा" जकर्य 11:12-13; यिर्म. 32:6-9

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

(मरकुस 15:21-32; लूका 23:26-43; यूहन्ना 19:17-27)

32जब वे बाहर जा ही रहे थे तो उन्हें कुरैन का रहने
वाला शिमौन नाम का एक व्यक्ति मिला। उन्होंने उस
पर दबाव डाला कि वह यीशु का क्रूस उठा कर चले।
33फिर जब वे गुलगुता "जिसका अर्थ है खोपड़ी का
स्थान।" नामक स्थान पर पहुँचे तो 34उन्होंने यीशु को
पित्त मिली दाखरस पीने को दी। किन्तु जब यीशु ने उसे
चखा तो पीने से मना कर दिया। 35सो उन्होंने उसे क्रूस
पर चढ़ा दिया और उसके वस्त्र पासा फेंक कर आपस
में बाँट लिये। 36इसके बाद वे वहाँ बैठ कर उस पर
पहरा देने लगे। 37उन्होंने उसका अभियोग पत्र लिखकर
उसके सिर पर टाँग दिया, "यह यहूदियों का राजा यीशु
है।" 38इसी समय उसके साथ दो डाकू भी क्रूस पर
चढ़ाये जा रहे थे एक उसके दाहिने ओर और दूसरा
बायीं ओर। 39पास से जाते हुए लोग अपना सिर मटकाते
हुए उसका अपमान कर रहे थे। 40वे कह रहे थे, "अरे
मंदिर को गिरा कर तीन दिन में उसे फिर से बनाने
वाले, अपने को तो बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है
तो क्रूस से नीचे उतर आ।"
41ऐसे ही महायाजक धर्मशास्त्रियों और बुजुर्ग यहूदी
नेताओं के साथ उसकी यह कहकर हँसी उड़ा रहे थे:
42"दूसरों का उद्धार करने वाला यह अपना उद्धार नहीं
कर सकता! यह इस्राएल का राजा है। यह क्रूस से अभी
नीचे उतरे तो हम इसे मान लें। 43यह परमेश्वर में
विश्वास करता है। सो यदि परमेश्वर चाहे तो अब इसे
बचा ले। आखिर यह तो कहता भी था 'मैं परमेश्वर का
पुत्र हूँ।'"
44उन लुटेरों ने भी जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाये
गये थे, उसकी ऐसे ही हँसी उड़ाई।

यीशु की मृत्यु

(मरकुस 15:33-41; लूका 23:44-49; यूहन्ना 19:28-30)

45फिर समूची धरती पर दोपहर से तीन बजे तक
अन्धेरा छाया रहा। 46कोई तीन बजे के आस-पास यीशु
ने ऊँचे स्वर में पुकारा "एली, एली, लमा शबकतनी।"
अर्थात्, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों
बिसरा दिया?"
47वहाँ खड़े लोगों में से कुछ यह सुनकर कहने लगे
यह एलिय्याह को पुकार रहा है।
48फिर तुरंत उनमें से एक व्यक्ति दौड़ कर सिरके में
डुबोया हुआ स्पंज एक छड़ी पर टाँग कर लाया और
उसे यीशु को चूसने के लिए दिया। 49किन्तु दूसरे लोग
कहते रहे कि छोड़ो देखते हैं कि एलिय्याह इसे बचाने
आता है या नहीं?
50यीशु ने फिर एक बार ऊँचे स्वर में पुकार कर
प्राण त्याग दिये। 51उसी समय मंदिर का परदा ऊपर से
नीचे तक फट कर दो टूकड़े हो गया। धरती काँप उठी।
चट्टानें फट पड़ीं।
52यहाँ तक कि कब्रें खुल गयीं और परमेश्वर के
मरे हुए बंदों के बहुत से शरीर जी उठे। 53वे कब्रों से
निकल आये और यीशु के जी उठने के बाद पवित्र
नगर में जाकर बहुतों को दिखाई दिये।
54रोमी सेना नायक और यीशु पर पहरा दे रहे लोग
भूचाल और वैसी ही दूसरी घटनाओं को देख कर डर
गये थे। वे बोले, "यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र
था।"
55वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ खड़ी थीं। जो दूर से देख रही
थीं। वे यीशु की देखभाल के लिए गलील से उसके पीछे
आ रही थीं। 56उनमें मरियम मगदलीनी, याकूब और
योसेस की माता मरियम तथा जब्दी के बेटों की माँ थी।

यीशु का दफ़न

(मरकुस 15:42-47; लूका 23:50-56; यूहन्ना 19:38-42)

57साँझ के समय अरिमतियाह नगर से यूसुफ़ नाम
का एक धनवान आया। वह खुद भी यीशु का अनुयायी
हो गया था। यूसुफ पिलातुस के पास गया और उससे
यीशु का शव माँगा। 58तब पिलातुस ने आज्ञा दी कि
शव उसे दे दिया जाये। 59यूसुफ ने शव ले लिया और
उसे एक नयी चादर में लपेट कर 60अपनी निजी नयी
कब्र में रख दिया जिसे उसने चट्टान में काट कर
बनवाया था। फिर उसने चट्टान के दरवाजे पर एक
बड़ा सा पत्थर लुढ़काया और चला गया। 61मरियम
मगदलीनी और दूसरी स्त्री मरियम वहाँ कब्र के सामने
बैठी थीं।

यीशु की कब्र पर पहरा

62अगले दिन जब शुक्रवार बीत गया तो प्रमुख याजक
और फ़रीसी पिलातुस से मिले। 63उन्होंने कहा, "महोदय
हमें याद है कि उस छली ने, जब वह जीवित था, कहा
था कि तीसरे दिन मैं फिर जी उठूँगा। 64तो आज्ञा
दीजिये कि तीसरे दिन तक कब्र पर चौकसी रखी
जाये। जिससे ऐसा न हो कि उसके शिष्य आकर उसका
शव चुरा ले जायें और लोगों से कहें वह मरे हुओं में से
जी उठा। यह दूसरा छलावा पहले छलावे से भी बुरा
होगा।"
65पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम पहरे के लिये सिपाही
ले सकते हो। जाओ जैसी चौकसी कर सकते हो, करो।"
66तब वे चले गये और उस पत्थर पर मुहर लगा कर
और पहरेदारों को वहाँ बैठा कर कब्र को सुरक्षित कर
दिया।

यीशु का फिर से जी उठना
(मरकुस 16:1-8; लूका 24:1-12; यूहन्ना 20:1-10)

28 सब्त के बाद जब रविवार की सुबह पौ फट रही थी, मरियम मगदलीनी और दूसरी स्त्री मरियम कब्र की जाँच करने आई।

2क्योंकि स्वर्ग से प्रभु का एक स्वर्गदूत वहाँ उतरा था, इसलिए उस समय एक बहुत बड़ा भूचाल आया। स्वर्गदूत ने वहाँ आकर पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया। 3उसका रूप आकाश की बिजली की तरह चमचमा रहा था और उसके वस्त्र बर्फ़ के जैसे उजले थे। 4वे सिपाही जो कब्र का पहरा दे रहे थे, डर के मारे काँपने लगे और ऐसे हो गये जैसे मर गये हों।

5तब स्वर्गदूत बोला और उसने उन स्त्रियों से कहा, "डरो मत, मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को खोज रही हो जिसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया था। 6वह यहाँ नहीं है। जैसा कि उसने कहा था, वह मौत के बाद फिर जिला दिया गया है। आओ, उस स्थान को देखो, जहाँ वह लेटा था। 7और फिर तुरंत जाओ और उसके शिष्यों से कहो, 'वह मरे हुओं में से जिला दिया गया है और अब वह तुमसे पहले गलील को जा रहा है तुम उसे वहीं देखोगे' जो मैंने तुमसे कहा है, उसे याद रखो।"

8उन स्त्रियों ने तुरंत ही क़ब्र को छोड़ दिया। वे भय और आनन्द से भर उठी थीं। फिर यीशु के शिष्यों को यह बताने के लिये वे दौड़ पड़ीं। 9अचानक यीशु उनसे मिला और बोला, "अरे तुम!" वे उसके पास आयीं, उन्होंने उसके चरण पकड़ लिये और उसकी उपासना की। 10तब यीशु ने उनसे कहा, "डरो मत, मेरे बंधुओं के पास जाओ, और उनसे कहो कि वे गलील के लिए रवाना हो जायें, वहीं वे मुझे देखेंगे"

पहरेदारों द्वारा यहूदी नेताओं को घटना की सूचना

11अभी वे स्त्रियाँ अपने रास्ते में ही थीं कि कुछ सिपाही जो पहरेदारों में थे, नगर में गए और जो कुछ घटा था, उस सब की सूचना प्रमुख याजकों को जा सुनाई। 12सो उन्होंने बुजुर्ग यहूदी नेताओं से मिल कर एक योजना बनायी। उन्होंने सिपाहियों को बहुत सा धन देकर 13कहा कि वे लोगों से कहें कि यीशु के शिष्य रात को आये और जब हम सो रहे थे उसकी लाश को चुरा ले गये। 14यदि तुम्हारी यह बात राज्यपाल तक पहुँचती है तो हम उसे समझा लेंगे और तुम पर कोई आँच नहीं आने देंगे।

15पहरेदारों ने धन लेकर वैसा ही किया, जैसा उन्हें बताया गया था। और यह बात यहूदियों में आज तक इसी रूप में फैली हुई है।

यीशु की अपने शिष्यों से बातचीत
(मरकुस 16:14-18; लूका 24:36-49; यूहन्ना 20:19-23; प्रेरितों के काम 1:6-8)

16फिर ग्यारहों शिष्य गलील में उस पहाड़ी पर पहुँचे जहाँ जाने को उनसे यीशु ने कहा था। 17जब उन्होंने यीशु को देखा तो उसकी उपासना की। यद्यपि कुछ के मन में संदेह था। 18फिर यीशु ने उनके पास जाकर कहा, "स्वर्ग में और पृथ्वी पर सभी अधिकार मुझे सौंपे गये हैं। 19सो, जाओ और सभी देशों के लोगों को मेरा अनुयायी बनाओ। तुम्हें यह काम परम पिता के नाम में, पुत्र के नाम में और पवित्र आत्मा के नाम में उन्हें बपतिस्मा दे कर पूरा करना है। 20वे सभी आदेश जो मैंने तुम्हें दिये हैं, उन्हें उन पर चलना सिखाओ। और याद रखो इस सृष्टि के अंत तक मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा।"

Bible League International and its Global Partners provide Scriptures for millions of people who still do not have the life-giving hope found in God's Word. Every purchase of an Easy-to-Read Translation™ enables the printing of a Bible for a person who needs God's Word somewhere in the world. To provide even more Scriptures for more people, please make a donation at www.bibleleague.org/donate or contact us at Bible League International, 1 Bible League Plaza, Crete, IL 60417, USA. Bible League International exists to develop and provide Easy-to-Read Bible translations and Scripture resources for churches and partners as they help people meet Jesus.

Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™)
© 1995 Bible League International

Maps, Illustrations © Bible League International

Additional materials © Bible League International

All rights reserved.

This copyrighted material may be quoted up to 1000 verses without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. This copyright notice must appear on the title or copyright page:

> Taken from the Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™) © 1995 Bible League International and used by permission.

When quotations from the ERV are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials (ERV) must appear at the end of each quotation. Requests for permission to use quotations or reprints in excess of 1000 verses or more than 50% of the work in which they are quoted, or other permission requests, must be directed to and approved in writing by Bible League International.

God's Word. Local Church. Global Strategy.™

Bible League International
1 Bible League Plaza
Crete, IL 60417, USA
Phone: 866–825–4636
Email: permissions@bibleleague.org
Web: www.bibleleague.org

B-HIN-89800: ISBN: 978-1-935189-80-0 **B-HIN-89992: ISBN: 978-1-935189-99-2**
B-HIN-07536: ISBN: 978-1-61870-753-6 **B-HIN-61738-POD: ISBN: 978-1-62826-173-8**

Free downloads: www.bibleleague.org/downloads